अप्रैल - जून 2015 भाग XXVI संख्या : 1 ISSN 0971 - 1856

Coconut for Healthy Living

भारतीय नारियल पत्रिका

भारतीय नारियल पत्रिका

भाग XXVI संख्या : 1

अप्रैल - जून 2015 कोची-11

परामर्श मंडल :

अध्यक्ष

टी. के. जोस भाप्रसे

सदस्य

डॉ.एस.के.मल्होत्रा

ओम प्रकाश

संपादक मंडल

सदस्य

सुगत घोष

डॉ.ए.के.नंदी

डॉ.जी.आर.सिंह

डॉ.अल्का गुप्ता

मुख्य संपादक

सुगत घोष

संपादक

एस. बीना

उप संपादक

संगीता टी.एस.

संपादन सहयोगी

विन्दु रानी एन.

डॉ.सूर्या प्रत्यूष

प्रकाशक :

नारियल विकास बोर्ड

(कृषि मंत्रालय, कृषि एवं सहकारिता विभाग, भारत सरकार)

केरा भवन, कोची - 682 011, भारत

दू. भा. : 0484-2376265, 2377266, 2377267, 2376553.

फैक्स : 91-484-2377902 ग्राम्स : KERABOARD

ई-मेइल : kochi.cdb@gov.in

वेबसाइट : www.coconutboard.gov.in

नारियल कृषि एवं उद्योग के विभिन्न पहलुओं पर आधारित लेख, शोध निबन्ध और पत्र इस पत्रिका में प्रकाशन हेतु आमंत्रित किये जाते हैं। सभी स्वीकृत सामग्रियों को मानदेय दिया जाएगा। इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में प्रकट किए गए विचार लेखकों के अपने हैं और बोर्ड उनके लिए उत्तरदायी नहीं है। शुल्क और पत्र - व्यवहार अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड, केरा भवन, कोची - 682 011 के नाम पर हों।

नारियल विकास बोर्ड

भारत सरकार ने देश में नारियल खेती एवं उद्योग के समन्वित विकास के लिए स्वायत्त निकाय के रूप में नारियल विकास बोर्ड की स्थापना की। बोर्ड, जो 1981 जनवरी 12 को अस्तित्व में आया, भारत सरकार के कृषि मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्यरत है। इसका मुख्यालय केरल के कोची में है और क्षेत्रीय कार्यालय कर्नाटक के बैंगलूर, तमिलनाडु के चेन्नई एवं असम के गुवाहटी में हैं। बोर्ड के छः राज्य केन्द्र भी हैं और ये ओड़िशा के भुबनेश्वर, पश्चिम बंगाल के कोलकात्ता, बिहार के पटना, आंध्र प्रदेश के हैदराबाद, महाराष्ट्र के ठाणे एवं संघशासित क्षेत्र अंडमान व निकोबार द्वीप समूह के पोर्ट ब्लेयर में स्थित हैं। बोर्ड के प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म नेर्यमंगलम (केरल), वेगिवाड़ा (आँध्र प्रदेश), कोंडागाँव (छत्तीसगढ़), मधेपुरा (बिहार), अभयपुरी (असम), पित्तापल्ली (ओड़िशा), मांड्या (कर्नाटक), पालघर (महाराष्ट्र) तथा धली (तमिलनाडु) में हैं। केरल के आलुवा के पास वाष़क्कुलम में बोर्ड ने प्रौद्योगिकी विकास केन्द्र की स्थापना की है।

बोर्ड के मुख्य प्रकार्य

❑ नारियल उद्योग के विकास हेतु उपाय अपनाना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों का विपणन सुधारने हेतु उपायों की सिफारिश करना। ❑ नारियल खेती एवं उद्योग में लगे लोगों को तकनीकी सलाह देना। ❑ नारियल खेती के अधीन क्षेत्र विस्तार के लिए वित्तीय एवं अन्य सहायता देना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों के संसाधन के लिए आधुनिक प्रौद्योगिकियाँ अपनाने को प्रोत्साहित करना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों को प्रोत्साहन मूलक भाव मिलने हेतु उपाय अपनाना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों के आयात और निर्यात नियंत्रित करने हेतु उपायों की सिफारिश करना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों के लिए श्रेणी, विनिर्देश एवं मानक निर्धारित करना। ❑ नारियल का उत्पादन बढ़ाने के लिए उपयुक्त योजनाओं को आर्थिक सहायता देना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों के कृषि, प्रौद्योगिकीय, औद्योगिक या आर्थिक अनुसंधानों को सहायता देना, प्रोत्साहन देना, बढ़ावा देना एवं आर्थिक सहायता देना। ❑ केन्द्रीय सरकार तथा बड़े पैमाने में नारियल की खेती वाले राज्यों की सरकारों से विचार विमर्श करके नारियल का उत्पादन बढ़ाने, प्रजातीय गुणवत्ता और उपज सुधारने के लिए उपयुक्त योजनाओं को वित्तीय सहायता देना तथा इसी उद्देश्य के लिए नारियल कृषकों और नारियल उत्पादों के विनिर्माताओं को पुरस्कार और प्रोत्साहन राशि प्रदान करने के लिए योजनाएं बनाना और नारियल एवं नारियल उत्पादों के विपणन के लिए सुविधाएं उपलब्ध कराना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों के उत्पादन, प्रसंस्करण और विपणन संबंधी आँकड़े एकत्रित करना एवं उन्हें प्रकाशित करना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों से संबंधित प्रचार कार्य करना एवं पुस्तकें व पत्रिकाएं प्रकाशित करना।

बोर्ड द्वारा 'भारत में नारियल उद्योग के एकीकृत विकास' परियोजना के अधीन कार्यान्वित विकास कार्यक्रम हैं: रोपण सामग्रियों का उत्पादन व विपणन, नारियल के अधीन क्षेत्र विस्तार, उत्पादकता सुधारने के लिए एकीकृत खेती, प्रौद्योगिकी निदर्शन, बाज़ार संवर्धन और सूचना व सूचना प्रौद्योगिकी।

नारियल प्रौद्योगिकी मिशन के अधीन बोर्ड द्वारा कार्यान्वित कार्यक्रम हैं प्राणी कीटों व रोगों से ग्रस्त नारियल बागानों के प्रबंधन के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास, निदर्शन तथा अंगीकरण, प्रसंस्करण, उत्पाद विविधीकरण, बाज़ार अनुसंधान व संवर्धन के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास और अंगीकरण।

शुल्क

वार्षिक	40 रु.
एक प्रति	10 रु.
आजीवन (30 वर्ष)	1000 रु.

नारियल विकास बोर्ड द्वारा प्रकाशित तथा सर्वश्री के.बी.पी.एस, काक्कनाड, कोची-30 में मुद्रित

इस अंक में

अध्यक्ष की कलम से 2

नारियल क्षेत्र के सुस्थिर विकास के लिए बढ़िया रोपण सामग्रियों का उत्पादन-रणनीतियाँ और इसकी कड़ियाँ 4
सी.तंपान और के.शंसुद्दीन

नारियल उत्पादन में गुणवत्तायुक्त रोपण सामग्रियों की भूमिका 9
आर. ज्ञानदेवन

नारियल विकास बोर्ड के प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म : भारत में नारियल विकास के मुख्य केंद्र 15
प्रमोद पी.कुरियन

प्रबीउ फार्म, अभयपुरी 18
जी. रघोत्तमन

प्रबीउ फार्म, कोंडागाँव 19
आर.एस. सेंगर और समीक्षा अवस्थी

प्रबीउ फार्म, मंड्या 21
एम.के.सिंह

प्रबीउ फार्म, वेगिवाड़ा 23
बिलीच दान बाड़ा

प्रबीउ फार्म, ओड़िशा 24
ई. अरावष़ी

प्रबीउ फार्म, नेर्यमंगलम 27
जयश्री ए.

राष्ट्रीय पुरस्कार 2014 के लिए आवेदन आमंत्रित 31

आसमान छूती महिलाओं ने रचा इतिहास 32
एस. बीना

नारियल कृषकों को क्या करना चाहिए? 35

समाचार 42

बाज़ार समीक्षा 59

बाज़ार भाव 64

बेहतर पैदावार और आय के लिए नारियल बीजपौधों की गुणवत्ता पर ज़ोर देना ज़रूरी है

प्रिय नारियल किसानों,

विश्वभर के किसान, बारानी फसलों की खेती में बीजों और बीजफलों का चयन काफी ध्यानपूर्वक करते हैं। बारानी फसलों की खेती में बढ़िया रोपण सामग्रियों का उपयोग करने पर बेहतर उत्पादन और उत्पादकता सुनिश्चित होती है। किसानों की पूर्व पीढ़ी नारियल खेती के लिए बढ़िया रोपण सामग्रियों के उत्पादन हेतु बीजफलों को एकत्रित करने के लिए अपने आसपास के उत्कृष्ट मातृवृक्षों की पहचान में कोई समझौता नहीं करते थे। बाद में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के संस्थानों और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों के अनुसंधान केन्द्रों ने अपने केन्द्रीकृत नर्सरी तंत्र के ज़रिए बढ़िया बीजपौधों का उत्पादन शुरू किया। इस प्रकार के संस्थानों से जबसे बीजपौध उपलब्ध होने लगे, किसान धीरे धीरे अपने स्थानीय मातृवृक्षों के प्रति उपेक्षा दिखाने लगे। बीजपौधों की मांग बढ़ती गई और उपलब्धता मंद पड़ने लगी तो रोपण सामग्रियों की अपर्याप्तता होने लगी। सरकार द्वारा प्रायोजित कई योजनाओं के अंतर्गत जब मुफ्त में या सहायिकी दर पर रोपण सामग्रियाँ मिलने लगीं तो कई किसान इसकी गुणवत्ता और नस्ल की ओर ध्यान दिए बगैर बीजपौधे लाकर रोपण करने लगे। रोपण सामग्रियों की गुणवत्ता की जाँच में, खासतौर पर इसकी किस्म और रोगप्रतिरोधिता की ओर सुस्ती दिखाने की वजह से ही शायद कुछ राज्यों में गत दो दशकों से नारियल की उत्पादकता में घटाव का रुख दर्शित हो रहा है। तमिलनाडु, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश के प्रगतिशील किसान रोपण सामग्रियों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के बाद ही नारियल की खेती शुरू करते हैं। यह एक मूलभूत तथ्य है कि बीजपौध की गुणवत्ता बेहतर आय सुनिश्चित करती है। नारियल के मामले में यह एकदम सही है। बढ़िया किस्म के उत्कृष्ट गुणों वाले बीजपौध लगाने से आय में कई गुनी वृद्धि हो सकती है। इस फसल से 50 साल तक उपज प्राप्त होती है, इसलिए रोपण सामग्रियों की गुणवत्ता सुनिश्चित करके नारियल की पैदावार में और अधिक वृद्धि लाना संभव है। यदि हम सबसे बढ़िया किस्म के पौधों का रोपण करें तो ताड़ के जीवन काल के दौरान इससे प्राप्त आय में 500 गुनी वृद्धि सुनिश्चित कर सकेंगे।

मानसून शुरू होने पर किसान नारियल बीजपौधों के लिए भाग-दौड़ शुरू करते हैं। बीजपौध का प्रापण और रोपण करने से पहले ऊपर बताए गए तथ्यों पर ध्यान देना ज़रूरी है। अन्य फसलों की तुलना में नारियल के बीजपौध उत्पादन में शीघ्र प्रवर्धन तकनीक उतनी सफल नहीं रही है। परंपरागत क्षेत्रों में नारियल की खेती कम होने के कारणों का विश्लेषण करने पर किसानों ने इसके कारण बताए हैं कि सूखा, बाज़ार में माल की भरमार, नारियल के भाव में घटबढ़, कीट-रोगों का प्रकोप आदि। किंतु रोपित रोपण सामग्रियों की गुणवत्ता के बारे में किसी ने भी आशंका प्रकट नहीं की। यह अनुमानित है कि सिर्फ 5 प्रतिशत से कम किसान ही बढ़िया रोपण सामग्रियों के प्रयोग पर ज़ोर देते हैं। इसका मतलब है 95 प्रतिशत से भी अधिक किसान रोपण सामग्रियों की गुणवत्ता और आनुवंशिक विशेषताएं जाने बगैर यूँही बीजपौध खरीदकर रोपण करते हैं। जैसा कि किसी कृषि विशेषज्ञ ने बताया है नारियल क्षेत्र को ग्रसित सबसे बड़ी बीमारी फसल के प्रति घोर उपेक्षा होती है। रोपण के लिए बढ़िया किस्म के बीजपौधों का उपयोग करने के कारण ही आम, अंगूर, संतरा, सेब, रबड़, जायफल, इलायची आदि जैसे रोपण फसलों का उत्पादन और उत्पादकता बढ़ गया है। कृषि जलवायु और मृदा परिस्थितियों के लिए अनुकूल रोपण सामग्रियाँ फसल का उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

हमारे देश के परंपरागत और गैर परंपरागत क्षेत्रों में नारियल की खेती के लिए उपयुक्त ज़मीन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं। गैर परंपरागत क्षेत्रों में नारियल की खेती बढ़ाने में गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियों की कमी अड़चनें डाल रही हैं। गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियों के साथ साथ तकनीकी और वित्तीय समर्थन प्राप्त हो तो देश के मध्य और उत्तर पूर्वी राज्यों के गैर परंपरागत क्षेत्रों में भी नारियल की खेती करना आसान हो जाएगा। अरुणाचल प्रदेश के नामसाई जिले के किसानों को गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियों की तलाश में 1000 किलोमीटर दूर असम की अभयपुरी तक जाना पड़ता है। यदि इन राज्यों में स्थानीय उत्पादन से बीजपौधों की उपलब्धता सुनिश्चित करें तो नारियल की खेती जल्दी ही सब जगह फैल जाएगी।

बोर्ड अपने प्रारंभ से लेकर रोपण सामग्रियों के उत्पादन पर ज़ोर दे रहा है। बोर्ड ने प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्मों की स्थापना मुख्यतः इस उद्देश्य से की है। फिलहाल पूरे देश के विभिन्न कृषि जलवायु परिस्थितियों में बोर्ड के 9 प्रबीउ फार्म हैं। संबंधित क्षेत्रों के लिए आवश्यक बीजपौधों की आपूर्ति इन्हीं फार्मों से होती है। इन फार्मों से प्रति वर्ष औसतन एक लाख बीजपौध उत्पादित और वितरित किए जाते हैं। किंतु कई राज्यों में नारियल किसानों की अपेक्षाएं पूरी करने के लिए यह पर्याप्त नहीं होता है। पश्चिम बंगाल और त्रिपुरा में प्रबीउ फार्म स्थापित करने के प्रस्ताव पर विचार किया जा रहा है। अरुणाचल प्रदेश सरकार अपने राज्य में नया प्रबीउ फार्म स्थापित करने हेतु मुफ्त में ज़मीन देने के लिए आगे आयी है। बढ़िया बीजपौधों की मांग और आपूर्ति के बीच का फासला मिटाने के लिए रोपण सामग्रियाँ उपलब्ध कराने के दीर्घकालीन लक्ष्य से न्यूक्लियस बीज बागान स्थापित करने के लिए बोर्ड वित्तीय सहायता दे रहा है। क्षेत्रीय नारियल नर्सरियाँ स्थापित करने

के लिए राज्य सरकारों को भी सहायता दे रहा है। इस मौके का फायदा उठाने के लिए नारियल क्षेत्र के कृषक उत्पादक संगठनों को पूरे जोश के साथ आगे बढ़कर अधिकतम बीज बाग स्थापित करना चाहिए। हमें यह उम्मीद है कि कृषक उत्पादक संगठन अपने प्रचालन क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियों के उत्पादन में अधिक सक्रिय भूमिका निभाएंगे।

हमें नारियल के शीघ्र फलदायी, उच्च पैदावार देने योग्य और रोगरोधी रोपण सामग्रियों के उत्पादन हेतु आधुनिक वैज्ञानिक और प्रौद्योगिक क्षेत्र की नई खोजों का लाभ उठाना चाहिए। ऊतक संवर्धन तकनीक और जैव प्रौद्योगिकी माध्यमों से मातृताड़ों की असली नकल विकसित करने में हम बहुत पीछे रह गए हैं। वर्ष 2013 से बोर्ड आईसीएआर संस्थानों, प्रमुख नारियल उत्पादक देशों के कृषि विश्वविद्यालयों और केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थानों के ज़रिए नारियल रोपण सामग्रियों के उत्पादन में शीघ्र प्रवर्धन तकनीक विकसित करने हेतु नेटवर्क अनुसंधान चला रहे हैं। यह जल्द से जल्द साकार करने के लिए प्रमुख नारियल उत्पादक देशों के विश्वविद्यालयों, निजी और सरकारी क्षेत्र के अन्य अनुसंधान संस्थानों और बीज उत्पादन कंपनियों के संयुक्त प्रयास की भी ज़रूरत है। जायफल, इलायची और कालीमिर्च जैसी फसलों पर लगातार किए गए परीक्षणों और मूल्यांकनों के ज़रिए किसानों द्वारा चलाए गए अनुसंधान और विकास से उच्च पैदावार वाली, रोगरोधी किस्में विकसित हुई हैं। मातृवृक्षों के उत्कृष्ट गुण अगली पीढ़ी के बीजपौधों तक सफलतापूर्वक अंतरित करने के कई मामले भी रिपोर्ट किए गए हैं। इसप्रकार इन फसलों में कई नई किस्में विकसित हुई हैं।

हमारे कृषक समूहों को अपने आसपास के उच्च पैदावार देने योग्य, रोगरोधी और अपने क्षेत्र के अन्य ताड़ों की औसतन उत्पादकता की तुलना में तीन गुना अधिक उपज देने में सक्षम सूपर ताड़ों को पहचानना चाहिए। जहाँ सामान्य ताड़ 60-80 फल देने वाले होते हैं, हमें ऐसे ताड़ों को पहचानना चाहिए जो प्रति वर्ष 300 से भी अधिक फल देता हो और आम बीमारियों के प्रति रोगरोधिता दर्शाता हो। इन गुणों वाले मातृवृक्षों की सूची और विवरणिका बनानी चाहिए ताकि आगे बीजफलों के उत्पादन में इसका उपयोग किया जा सके। किसानों के खेतों में इसप्रकार के अनुसंधानों के लिए प्रोत्साहन और समर्थन देना चाहिए। कृषक समूहों को ऐसे सूपर ताड़ों की पहचान करनी चाहिए जिनकी औसत उत्पादकता अन्य ताड़ों की अपेक्षा तीन गुना ज्यादा हो और उनपर लगातार निरीक्षण करते रहना चाहिए। आगे और अनुसंधान चलाने के लिए निरीक्षण से प्राप्त नतीजों का भी अनुवीक्षण करते रहना चाहिए। स्वपरागण से आनुवंशिक परिशुद्धता सुनिश्चित होती है और आगे अनुसंधान हेतु इनके फलों से उत्पादित बीजपौधों का परिरक्षण किया जाना चाहिए। प्रत्येक नारियल उत्पादक कंपनी को इस प्रकार के मातृवृक्षों की सूची बनानी चाहिए और उनसे स्थानीय मांगों के अनुरूप बीजपौधों का उत्पादन करना चाहिए।

भविष्य में नारियल क्षेत्र में किफायतमंद और स्थायी आय सुनिश्चित करने के लिए खेती में संरचनात्मक परिवर्तन लाना ज़रूरी है। कृषि विभाग और कृषि विश्वविद्यालय के कृषि विशेषज्ञ आपको नारियल बीजपौधों का रोपण, इसकी बढ़वार और पौधा संरक्षण उपाय आदि की जानकारी देंगे। किंतु ये आपसे यह सवाल नहीं करते हैं कि किस प्रयोजन के लिए आप नारियल की खेती कर रहे हैं। क्या हम नारियल की खेती सिर्फ नारियल तेल और खोपड़े के उत्पादन के लिए करते हैं या इससे मूल्यवर्धित उत्पाद बनाकर अधिक आय कमाने के लिए करते हैं? खोपड़ा और नारियल तेल बनाने के अतिरिक्त नारियल का बहुविध उपयोग किया जा सकता है। हमें पहले की तरह पूरा का पूरा पौद लंबी किस्म की नहीं लगानी चाहिए, जिसमें फल लगने में काफी लंबा समय लगता है। नारियल क्षेत्र के भविष्य के लिए प्रत्येक क्षेत्र के लिए उपयुक्त, डाब के रूप में उपयोगी, नीरा उत्पादन के लिए उपयुक्त, वर्जिन नारियल तेल, नारियल दूध, नारियल दूध पाउडर, नारियल दूध क्रीम, शोषित नारियल, कयर रेशा, सक्रियित कार्बन आदि जैसे मूल्यवर्धित उत्पाद बनाने के लिए उत्तम किस्म के पौधे लगाना अनिवार्य हो गया है। संकर किस्में, खासतौर पर बौनी X लंबी किस्म के पौधे इन प्रयोजनों के लिए उत्तम हैं। हमें भविष्य में 25 प्रतिशत संकर और 25 प्रतिशत बौने बीजपौधों का रोपण करना चाहिए। कृषक समूहों को अपने सदस्यों के उपयोग हेतु इसप्रकार की रोपण सामग्रियों के उत्पादन पर ध्यान देना चाहिए। हमारी उम्मीद है कि नारियल क्षेत्र की कृषक उत्पादक कंपनियाँ भविष्य में बढ़िया किस्म की रोपण सामग्रियों के उत्पादन के मामले में बहुत बड़ा परिवर्तन लाएंगी।

नारियल क्षेत्र में अब तक 8048 नारियल उत्पादक समितियाँ, 586 नारियल उत्पादक फेडरेशन और 36 नारियल उत्पादक कंपनियाँ गठित हुई हैं। तकरीबन 9.3 लाख नारियल किसान इस त्रिस्तरीय तंत्र का हिस्सा बन चुके हैं। हमें आशा है कि ये कृषक उत्पादक संगठन काफी संजीदगी से नारियल खेती में जुड़े रहेंगे और परियोजनाएं बनाएंगे और भारत में नारियल क्षेत्र के उज्ज्वल भविष्य के लिए सकारात्मक और प्रगतिशील रणनीतियाँ अपनाएंगे। कृषक उत्पादक संगठनों के नेताओं और सदस्य किसानों से मेरी अपेक्षा है कि आप सब नारियल क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन करने, देश के नारियल किसानों के जीवन में खुशहाली लाने और उत्पादन एवं उत्पादकता में ही नहीं बल्कि मूल्यवर्धन हेतु प्रसंस्करण और निर्यात में भी भारत को विश्व का अगुआ देश बनाने के लिए प्रभावी टीम के रूप में कार्य करेंगे।

शुभकामनाओं सहित,

टी के जोस

टी.के.जोस
अध्यक्ष

नारियल क्षेत्र के सुस्थिर विकास के लिए बढ़िया रोपण सामग्रियों का उत्पादन-रणनीतियाँ और इसकी कड़ियाँ

सी.तंपान और के.शंसुद्दीन
केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड़

नारियल की खेती अधिक किफायती बनाने के लिए कई रणनीतियाँ अनुशंसित हैं। इनमें से एक है संकर सहित बेहतरीन किस्म के नारियल पौधों की खेती से उत्पादकता बढ़ाना। भारत में, मुख्यतः केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान और राज्य कृषि/बागवानी विश्वविद्यालय आनुवंशिक स्रोतों का बेहतर उपयोग करके नारियल के फसल सुधार पर अनुसंधान कार्य चला रहे हैं। इसके फलस्वरूप जीव एवं अजीव के प्रकोप के प्रति रोधिता जैसे वांछित गुणों से युक्त उच्च पैदावार देने वाली और डाब के रूप में उपयोगी उत्तम किस्मों का विकास पर्याप्त मात्रा में करने में सफल हुए। इन अनुसंधान संस्थानों ने सामूहिक चयन का तरीका अपनाकर भारत में अब तक विभिन्न कृषि-जलवायु परिस्थितियों के लिए उपयुक्त 27 नारियल किस्में विमोचित की हैं, जिनमें 17 लंबी और 10 बौनी किस्में शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, विभिन्न क्षेत्रों में खेती के लिए 8 बौनी x लंबी और 11 लंबी x बौनी संकर सहित 19 संकर किस्में भी विकसित की हैं। ये संकर नारियल किस्म प्रति वर्ष प्रति हेक्टर से 2.79 से 6.28 टन खोपरे की पैदावार क्षमता रखती हैं जबकि नारियल किसानों द्वारा सबसे ज्यादा खेती की जाने वाली लंबी किस्मों से 2 टन खोपरा ही प्राप्त होता है।

नारियल को किफायती फसल बनाने के लिए नारियल की उत्पादकता बढ़ाना अपेक्षित है। उच्च पैदावार वाली बेहतरीन किस्म के नारियल पौधों की खेती अनिवार्य है। विविध अनुसंधान संस्थानों द्वारा बड़ी संख्या में बेहतर किस्म के संकर बीजपौधों को विकसित करने के बावजूद भी नारियल किसानों ने अभी तक इन किस्मों को दिल खोलकर स्वीकारा नहीं है। बढ़िया रोपण सामग्रियों की अनुपलब्धता के कारण किसान बेहतर किस्मों को नहीं अपना

सारणी-1 भारत में विकसित संकर किस्में

संकर किस्म	प्रजनकों का स्रोत	प्रति हेक्टर प्रति वर्ष उपज	प्रति हेक्टर प्रति वर्ष प्राप्त खोपरा (टन में)	राज्य जहाँ के लिए विमोचित है
चंद्र शंकरा	चा.ना.बौ. x प.त.लं	20532	4.27	केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु
केरा शंकरा	प.त.लं. x चा.ना.बौ.	19116	3.78	केरल, कर्नाटक, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश
चंद्र लक्षा	ल.लं. x चा.ना.बौ.	19293	3.76	केरल, कर्नाटक
कल्पसमृद्धि	म.पी.बौ. x प.त.लं.	20744	4.35	केरल, असम
कल्प शंकरा	चा.ह.बौ. x प.त.लं.	14868	3.20	जड़मुर्झा रोगप्रकोप वाले क्षेत्रों में
कल्प श्रेष्ठा	म.पी.बौ. x ति.लं.			केरल, कर्नाटक
लक्षा गंगा	ल.लं. x गं.बों.ह.बौ.	19116	3.73	केरल
अनंत गंगा	अं.ओ. x गं.बों.ह.बौ.	16815	3.63	केरल
केरा गंगा	प.त.लं. x गं.बों.ह.बौ.	17700	3.56	केरल
केरा श्री	प.त.लं. x म.पी.बौ.	23364	5.05	केरल

सकते हैं। नारियल एक दीर्घकालीन फसल है जिसकी तरुणावस्था 7 से 10 साल तक और उत्पादनक्षमता 50 साल से भी अधिक होती है। अत: उच्च उत्पादकता हासिल करने के लिए बढ़िया रोपण सामग्रियों का उपयोग बहुत ज़रूरी है। किसानों के बीच विकसित बेहतर किस्म और संकर किस्म के बीजपौधों की काफी उच्च माँग है। आजकल नारियल किसान कुशल नारियल ताड़ारोहकों की कमी और इनकी उच्च मज़दूरी की वजह से बौनी किस्मों की खेती में ज्यादा दिलचस्पी दिखा रहे हैं।

नारियल क्षेत्र के सुस्थिर विकास के लिए 60:20:20 अनुपात में लंबी, बौनी और संकर किस्मों की खेती की अनुशंसा की जाती है। किंतु खेतों का किस्सा अलग है, यहाँ नारियल पेड़ों की कुल आबादी का 90 प्रतिशत से भी अधिक पेड़ लंबी किस्म के नज़र आते हैं। नारियल की औसतन राष्ट्रीय उत्पादकता प्रति हेक्टर 7215 किलोग्राम खोपरा है, जबकि केरल में(देश में नारियल उत्पादन का 36 प्रतिशत केरल से है) उत्पादकता बहुत कम है, याने कि प्रति हेक्टर 5188 किलोग्राम खोपरा। केरल जैसे प्रमुख नारियल उत्पादक राज्य में नारियल की उत्पादकता सुधारने की मुख्य अड़चन है आनुवंशिक रूप से निम्न कोटि के पुराने और अनुत्पादक स्थानीय लंबे ताड़ों की बड़ी संख्या में मौजूदगी। नारियल की उत्पादकता बढ़ाकर खेती को लाभदायक बनाने के लिए पुराने और दुर्बल ताड़ों को हटाकर उनकी जगह तंदुरुस्त और उच्च पैदावार देने वाली बढ़िया किस्म के पौधों को लगाने हेतु बृहत कार्यक्रम चलाना अनिवार्य है। पुराने ताड़ों की जगह नए पौध लगाने के लिए बड़ी मात्रा में बीजपौधों की ज़रूरत पड़ेगी।

नारियल बीजपौधों की मांग और आपूर्ति की मौजूदा स्थिति

2011-12 के आंकड़ों के अनुसार, भारत में नारियल की खेती 2.07 करोड़ हेक्टर में हो रही है। अनुमानित है कि नारियल के बीजपौधों की औसत वार्षिक अपेक्षा 1.5 करोड़ है। किंतु, केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, नारियल विकास बोर्ड सहित सार्वजनिक क्षेत्र की अनुसंधान और विकास संस्थाओं और राज्य कृषि/बागवानी विभाग द्वारा प्रति वर्ष मात्र 55 लाख बीजपौधों का ही उत्पादन और वितरण हो रहा है। केरल में प्रतिवर्ष औसतन 28-30 लाख नारियल पौधों की ज़रूरत पड़ती है। किंतु नारियल बीजपौधों की आपूर्ति संबंधी आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2014 के लिए राज्य कृषि विभाग जो राज्य में नारियल बीजपौध उत्पादन से संबद्ध प्रमुख एजेंसी है, द्वारा मात्र 6.5 लाख बीजपौधों की ही आपूर्ति की जा सकी है जिनमें से 6 लाख पश्चिम तटीय

लंबी, 9000 बौनी और 40000 संकर किस्म के बीजपौध हैं। इससे मांग और आपूर्ति के बीच के लंबे फासले का पता चलता है। बेईमान लोग इस हालात का फायदा उठाकर घटिया किस्म की नकली रोपण सामग्रियाँ किसानों को वितरित करते हैं जिससे नारियल क्षेत्र के सुस्थिर विकास पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

रोपण सामग्रियों के उत्पादन में वृद्धि लाने के लिए रणनीतियाँ

नारियल किसानों की मांग की आपूर्ति हेतु बढ़िया नारियल बीजपौधों के उत्पादन और वितरण में आ रही चुनौतियों का सामना करने के लिए दीर्घकालिक और अल्पकालिक रणनीतियाँ अपनाने की ज़रूरत है।

दीर्घकालिक रणनीतियाँ

नारियल बीजपौधों की बढ़ती मांग की आपूर्ति करने के लिए नारियल की खेती किए जाने वाले क्षेत्रों में उचित स्थानों पर नए बीज बाग स्थापित करने की दीर्घकालिक रणनीति अपनाई जा सकती है। इसके अतिरिक्त, मौजूदा बीज बागानों का पुनरुज्जीवन और विभिन्न कृषि पारिस्थितिक क्षेत्रों के लिए विकसित नई किस्म की रोपण सामग्रियों से पुनर्रोपण पर भी ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। राज्य कृषि/बागवानी विभाग के अधीन कार्यरत कई नारियल नर्सरियों में संबंधित क्षेत्रों के लिए अनुशंसित नारियल किस्म के बीजपौधों के उत्पादन हेतु पर्याप्त संख्या में मातृवृक्ष भी उपलब्ध नहीं है। उदाहरण के लिए, देश के प्रमुख नारियल उत्पादक राज्य केरल में नारियल बीजपौधों के उत्पादन और वितरण हेतु नौ नारियल नर्सरियाँ और एक नारियल बीजबाग हैं। इन नर्सरियों में कुल 3430 मातृवृक्ष ही उपलब्ध हैं जिनमें से 2905 मातृवृक्ष पश्चिम तटीय लंबी किस्म के हैं। मौजूदा हालात में दीर्घकालिक रणनीति स्वरूप प्रजनक बीज या मूल बीज का प्रयोग करके विकसित किस्मों के मातृवृक्षों से मौजूदा नारियल नर्सरियों के पुनर्निर्माण के लिए शीघ्र कदम उठाना चाहिए। बेहतरीन किस्मों के बढ़िया बीजपौधों की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए ऊतक संवर्धन तकनीक से नारियल के बीजपौधों का शीघ्र प्रवर्धन सबसे व्यवहार्यपूर्ण तरीका है। अतः नारियल के शीघ्र प्रवर्धन हेतु ऊतक संवर्धन प्रविधि विकसित करने के औचित्य और अहमियत के बारे में खास उल्लेख करने की ज़रूरत नहीं है। इसके लिए इस क्षेत्र में अनुसंधान को और मज़बूत करने की आवश्यकता है।

अल्पकालिक रणनीतियाँ

नारियल बीजपौधों की मांग की आपूर्ति के लिए सबसे महत्वपूर्ण अल्पकालिक रणनीति किसानों के बागानों में उपलब्ध आनुवंशिक रूप से उत्कृष्ट नारियल पेड़ों का उपयोग करना है। किंतु यह सुनिश्चित करना चाहिए कि किसानों के बागानों में स्थानीय रूप से अपनाई गई नारियल किस्मों के उत्कृष्ट गुणों वाले मातृवृक्षों को पहचानने और चुनने में अत्यधिक सावधानी बरती जा रही है। मातृताड़ों को पहचानने के लिए जो कसौटी तय की गई है इसका अनुपालन पूरी सावधानी के साथ करना चाहिए। लक्ष्य हासिल करने के दबाव की वजह से मातृवृक्षों के चयन में अपनाई जाने वाली वैज्ञानिक प्रक्रियाओं में कोई हेराफेरी नहीं करनी चाहिए। किसानों के खेतों से बीजफलों के प्रापण के लिए नारियल विकास बोर्ड सहित सार्वजनिक क्षेत्र की एजेंसियों और राज्य कृषि/बागवानी विभाग के अपने कार्यक्रम होते हैं। हाल में केरल में, राज्य कृषि बागवानी विभाग ने केरासमृद्धि नाम से एक योजना कार्यान्वित की है जिसमें किसानों के बागों की बौनी किस्म के मातृवृक्षों की पहचान करके बीजफलों को एकत्रित किया जाता है। इस मौसम के दौरान योजना के अंतर्गत तकरीबन 2.8 लाख बीजफलों का प्रापण किया गया है।

नारियल रोपण सामग्रियों के उत्पादन से संबद्ध सभी एजेंसियाँ किसानों के बागानों में उपलब्ध मातृवृक्षों की जीपीएस आधारित फोटो टैग वाली विवरण सूची तैयार कर सकती हैं। इसके सफल कार्यान्वयन हेतु देश के नारियल अनुसंधान और विकास एजेंसियों को शामिल करके एक नेटवर्क परियोजना तैयार करने की ज़रूरत है। इन नर्सरियों में बढ़िया बीजपौधों का उत्पादन बढ़ाने लिए उत्कृष्ट मातृवृक्षों को चिह्नित करने हेतु मौजूदा बीज बागानों में नारियल के मातृवृक्षों के स्रोतों के मूल्यांकन पर भी ध्यान देना ज़रूरी है।

नारियल रोपण सामग्रियों के उत्पादन में गुणवत्ता नियंत्रण

नारियल क्षेत्र के सुस्थिर विकास के लिए नारियल रोपण सामग्रियों के उत्पादन में व्यवहार्यपूर्ण गुणवत्ता नियंत्रण विधि सुनिश्चित करना अनिवार्य है। दौर्भाग्यवश

हमारे देश में ऐसी विधि अभी तक शुरू नहीं की गई है। नारियल के बढ़िया बीजपौधों की मांग और आपूर्ति के बीच इतना बड़ा फासला होने के कारण नारियल किसान अक्सर उन एजेंसियों के शिकार हो जाते हैं जो घटिया किस्म के बीजपौध बेचते हैं। नारियल रोपण सामग्रियों के उत्पादन और वितरण में गुणवत्ता नियंत्रण सुनिश्चित करने के लिए नर्सरी को अक्रेडिटेशन प्राप्त होना अनिवार्य बनाना चाहिए। अक्रेडिटेशन के लिए मानदंड तैयार करने हेतु केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, राज्य कृषि विश्वविद्यालय, नाविबो और राज्य कृषि विभाग के प्रतिनिधियों को शामिल करके प्रत्येक राज्य में एक समिति गठित करनी चाहिए। रोग प्रचलित क्षेत्रों के लिए एक अलग समिति गठित करनी चाहिए।

नारियल किस्म विकसित करने के कार्य से जुड़ी एजेंसियों द्वारा बीजबागों के मातृवृक्षों को प्रमाणित कराना चाहिए। इसप्रकार प्रमाणित मातृवृक्षों से ही बीजफलों को एकत्रित करना चाहिए। सभी प्रमाणित मातृताड़ों को नारियल विकास बोर्ड के साथ पंजीकृत कराना चाहिए। नर्सरी के अक्रेडिटेशन के लिए मातृवृक्षों का प्रमाणीकरण और पंजीकरण अनिवार्य बनाना चाहिए। नारियल किस्मों को विकसित करने वाली अनुसंधान एजेंसियों द्वारा बीजपौधों के लिए मानदंड निर्धारित करना चाहिए ताकि किसानों को वितरित करने के लिए 6,9,12 माह आयु के बीजपौधों का चयन किया जा सके। बीजपौधों के प्रमाणन का दायित्व नर्सरी अक्रेडिटेशन के लिए नियत समिति को होगा और उन्हें यह भी सुनिश्चित करना होगा कि अक्रेडिटेशन प्राप्त नर्सरियों से लेबल लगे बीजपौधे ही वितरित किए जाते हैं। अनुसंधान संस्थाओं/कृषि विज्ञान केन्द्रों को विभागीय कार्मिकों/कृषक संगठनों/निजी नर्सरियों/गैर सरकारी संगठनों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना चाहिए और नर्सरी अक्रेडिटेशन के लिए आवेदन देने हेतु इसप्रकार के प्रशिक्षण में भाग लेने का प्रमाणपत्र अनिवार्य बनाना चाहिए।

वनस्पति संरक्षण, संगरोध और संग्रह निदेशालय से अनुरोध करना होगा कि मार्गनिर्देश तैयार करें और नारियल बीजपौधों के वितरण का अनुवीक्षण करें और संगरोध संबंधी नियम लागू करें। 12 महीने आयु के बीजपौधे ही किसानों को रोपण हेतु वितरित करना चाहिए। 6,9 माह आयु के बीजपौधों को वितरित करने वाली एजेंसियाँ इसप्रकार के बीजपौधों के लिए मानदंड विकसित करने के बाद तदनुसार यह कार्य कर सकती हैं।

जड़मुर्झा रोग प्रकोपित क्षेत्रों के लिए रोपण सामग्रियों का उत्पादन

जड़मुर्झा रोगप्रकोपित क्षेत्रों में बीजपौध उत्पादन बढ़ाने के लिए अन्य क्षेत्रों से बड़े पैमाने पर बीजफलों का प्रापण करने के बजाय ज्यादा अहमियत रोगप्रकोपित क्षेत्रों के रोगमुक्त मातृवृक्षों के चयन और पहचान को देनी चाहिए। यह हासिल करने के लिए केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान जैसे अनुसंधान संस्थानों के तकनीकी समर्थन के साथ कृषक सहभागिता से विकेन्द्रित प्रणाली अपनाने की ज़रूरत है।

स्थान विशेष और विशेष प्रयोजनों के लिए उपयुक्त किस्मों का विकास

नारियल फसल सुधार पर चल रहे अनुसंधान कार्यों में स्थान विशेष और विशेष प्रयोजनों के लिए उपयुक्त किस्मों के विकास पर ध्यान देना चाहिए। अनुसंधान संस्थाओं द्वारा स्थान विशिष्ट किस्मों को विकसित करने के लिए कृषक सहभागिता से प्रबंधन के विविध स्तरों पर किस्मों का समकालिक मूल्यांकन करते रहना चाहिए। बारानी क्षेत्रों के लिए उचित किस्मों का विकास करने, बाहरी कृषि आदान सामग्रियों का उपयोग कम करने, डाब के रूप में उपयोगी और नीरा उत्पादन के लिए उपयुक्त किस्मों को विकसित करने पर बल देना चाहिए। नारियल किस्मों को विकसित और विमोचित करने के लिए मार्गनिर्देश तैयार करना भी अनिवार्य है।

प्रजनक स्टॉक/मूल स्टॉक

केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान और राज्य कृषि/बागवानी विभाग(ताड़ों पर अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान केन्द्रों के ज़रिए) को विकसित किस्मों के प्रजनक स्टॉक के संवर्धन पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। बढ़िया बीजपौधों के उत्पादन और वितरण के लिए कार्यक्रमों को मज़बूत बनाने हेतु सार्वजनिक/निजी क्षेत्र के बीज बागानों/नर्सरियों को मूल बीज सामग्रियाँ वितरित की जानी चाहिए।

कृषक सहभागिता से विकेन्द्रित बीजपौध उत्पादन

स्थानीय रूप से उपलब्ध स्रोतों/मातृवृक्षों का उपयोग करके रोपण सामग्रियों की आवश्यकताएं पूरा करने के लिए कृषक सहभागिता से बीजपौधों के उत्पादन को बढ़ावा देना चाहिए। अधिकाधिक न्यूक्लियस बीज बाग स्थापित करके बेहतरीन किस्म के बीजपौधों का उत्पादन बढ़ाने की विकेन्द्रित प्रणाली को बढ़ावा देना चाहिए। सीमांत और छोटे किसानों के बागानों में इसप्रकार के बीज बाग के लिए प्रोत्साहन देना चाहिए। कृषक सहभागिता से उत्कृष्ट मातृवृक्षों की पहचान और बीजपौधों की नस्ल की जांच के साथ-साथ मोलिक्युलर मार्कर के द्वारा इसके वैधीकरण की काफी अहमियत है। ऐसी पहल स्थानीय कृषक समुदाय को मातृवृक्षों का चयन, बीजफल उत्पादन के लिए नियंत्रित परागण, नर्सरी का सामुदायिक प्रबंधन और बीजपौध चयन के लिए सशक्त बनाएगी। यह एक आंदोलन की शुरुआत हो सकती है जिसके परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में उच्च उत्पादकता वाले ताड़ उपलब्ध होंगे जो नारियल की उत्पादकता और बेहतर बनाएगा। नारियल विकास बोर्ड की पहल से नारियल उत्पादकों के बीच सबसे निम्न स्तर पर बनी नारियल उत्पादक समितियाँ और फ्रेंड्स ऑफ कोकोनट ट्री कार्यक्रम के अधीन प्रशिक्षित युवक विकेन्द्रित उत्पादन और संकर किस्म के बढ़िया नारियल बीजपौधों के वितरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इस प्रक्रिया के लिए केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान जैसे अनुसंधान संगठन तकनीकी समर्थन दे सकते हैं।

बीजपौधों की मूल्य निर्धारण समिति

लंबी, बौनी, बौनी x लंबी, लंबी x बौनी नारियल पौधों और पोली बैग बीजपौधों के एकसमान मूल्य निर्धारण के लिए केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, विश्वविद्यालयों, नाविबो और कृषि/बागवानी विभाग के पदधारियों को शामिल करके राज्य स्तरीय मूल्य निर्धारण समिति गठित की जा सकती है।

नारियल की रोपण सामग्रियों के उत्पादन पर राष्ट्रीय कार्यशाला

केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड़ में 10 फरवरी 2015 को नारियल की रोपण सामग्रियों का उत्पादन - समस्याएं और रणनीतियाँ विषयक एक राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की गई थी। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य था नारियल रोपण सामग्रियों के उत्पादन और वितरण से जुड़ी अनुसंधान संस्थानों, विकास एजेंसियों, गैर सरकारी संगठनों, कृषक संगठनों और निजी उद्यमियों सहित सभी लाभभोगियों को एक छत के नीचे लाना ताकि बढ़ती मांग को पूरा करने लिए बढ़िया बीजपौधों की उपलब्धता बढ़ाने के लिए रणनीतियाँ बनायी जा सके। कार्यशाला का मूल्यांकन था कि देश में नारियल बीजपौधों की माँग और उपलब्धता के बीच बहुत बड़ी खाई बनी हुई है। कार्यशाला में केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान की अनुसंधान सलाहकार समितियों के सदस्यों और वैज्ञानिकों के अतिरिक्त विभिन्न राज्यों के कृषि विश्वविद्यालयों के प्रतिनिधियों, कृषि/बागवानी विभाग के प्रतिनिधियों, नाविबो के प्रतिनिधियों, निजी उद्यमी, कृषक और गैर सरकारी संगठनों के प्रतिनिधियों को मिलाकर लगभग 80 लोगों ने भाग लिया। कार्यशाला में बढ़िया नारियल बीजपौधों की मांग पूरी करने के लिए ऊपर बताए गए विषयों सहित महत्वपूर्ण रणनीतियों पर चर्चा हुई। कार्यशाला में नारियल रोपण सामग्रियों के उत्पादन और वितरण को नियमित करने के लिए विविध लाभभोगियों के बीच कार्यात्मक कड़ियाँ मज़बूत करने की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला गया।

प्रकार्यात्मक कड़ियाँ मज़बूत बनाना

देश में नारियल रोपण सामग्रियों का उत्पादन नियमित करने और प्रभावी तरीके से चलाने के लिए केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, विश्वविद्यालय, नाविबो, राज्य कृषि/बागवानी विभाग, कृषक संगठन, गैर सरकारी संगठन और निजी क्षेत्र की एजेंसियों के बीच की प्रकार्यात्मक कड़ियाँ मज़बूत करना अनिवार्य है।

नारियल उत्पादन में गुणवत्तायुक्त रोपण सामग्रियों की भूमिका

ज्ञानदेवन आर.
उप निदेशक, नाविबो, कोची-11

किसी भी फसल से टिकाऊ और लाभदायक उपज प्राप्त करने के लिए रोपण सामग्रियों की गुणवत्ता अति महत्वपूर्ण है। बाग में नारियल पेड़ का बढ़वार एवं पैदावार और अंततः उपज की गुणवत्ता, नर्सरी में रोपण सामग्रियों के उत्पादन और प्रबंधन पर निर्भर करते हैं। नर्सरी से नारियल बीजपौधा खरीदते वक्त हर किसान की यही उम्मीद होती है कि पौधा शीघ्र फलनेवाला, अधिक पैदावार देनेवाला, अधिक खोपरा व तेल प्रदान करनेवाला और अधिक ऊँचा न बढ़ने वाला हो । परंतु रोपण के लिए उच्च गुणवत्तायुक्त नारियल पौधों का उपयोग नहीं किया जाता है तो किसानों की उम्मीदों के साथ साथ काफी समय और पैसे भी बरबाद हो जाते हैं। वाणिज्यिक रूप से व्यवहार्य पौधा संवर्धन तकनीकों के अभाव में नारियल में बीजफलों द्वारा ही संवर्धन किया जा सकता है। नारियल पेड़ की हर कोशिकाओं में मौजूद 32 क्रोमोसोम वाँछित गुणों का नियंत्रण करते हैं । नारियल बीजफलों के इन क्रोमोसोमों में मौजूद जीनों के ज़रिए पेड़ों की एक पीढ़ी की पीढ़ी दर पीढ़ी तक वाँछित गुण अंतरित होते हैं। वयस्क पेड़ों के विशेष गुणों का सीधा संबंध नारियल बीजपौधों की गुणवत्ता (बाग में बीजपौधों का बढ़वार तथा किसानों की उम्मीदों का अनुपात) से हैं। नारियल का पर परागण होने के कारण उस पर ठीक वैसे ही प्रजनन नहीं होता है और इसलिए बीजपौधों एवं बीजफलों का चयन और मुश्किल और महत्वपूर्ण हो जाता है। गुणवत्तायुक्त बीजपौधों के उत्पादन के लिए बीजबाग, मातृवृक्ष, बीजफल तथा बीजपौधों का चयन अतिमहत्वपूर्ण हो जाता है।

देश में नए रोपण और पुनर्रोपण के लिए नारियल बीजपौधों की वार्षिक माँग 100 लाख बीजपौध प्राक्कलित की गई है। वर्तमान उत्पादन मात्र 35 लाख बीजपौधे हैं। 65 लाख बीजपौधों की सख्त कमी का फायदा निजी नर्सरियाँ उठाती हैं और नारियल बीजफलों के उत्पादन व वितरण में मुख्य भूमिका निभाती हैं। नारियल एवं नारियल उत्पादों की घरेलू माँग भी बढ़ने लगी है। इसके अलावा, नारियल और नारियल उत्पादों के निर्यात में भी अत्यधिक बढ़ोत्तरी हुई है। बढ़ती माँग की पूर्ति के लिए उत्पादन और उत्पादकता

बढ़ाना चाहिए। पारंपरिक एवं गैर पारंपरिक राज्यों में मौजूदा बागों में नियमित पुनर्रोपण तथा बेहतर प्रबंधन रीतियाँ अपनाने से और नारियल खेती के लिए उपयुक्त जगहों में नया रोपण करने से यह संभव हो सकता है। नारियल की बढ़ती माँग की पूर्ति केलिए उत्पादकता बढ़ाने हेतु गुणवत्तायुक्त रोपण सामग्रियों के उत्पादन एवं वितरण इस दिशा में पहला कदम है।

सामान्य तौर पर नारियल किसान अपने बागों में पुनर्रोपण एवं नए रोपण के लिए रोपण सामग्रियों के चयन के मानदंडों के बारे में अवगत नहीं है। वे अनुपयुक्त मातृवृक्ष बाग, मातृवृक्ष आदि चुनते हैं , गलत तरीके से बीजफलों की बुआई करते हैं तथा फलों की पक्वता का सही निर्णय नहीं कर पाते हैं। इसका परिणाम बढ़वार और उपज में कमी है। इस लेख में नारियल की गुणवत्तायुक्त रोपण सामग्रियों के उत्पादन संबंधी कुछ विशेष पहलुओं पर प्रकाश डाल रहा हूँ।

बीजपौधों के उत्पादन के चरण

1. बीज बागों का सही चयन

गुणवत्तापूर्ण नारियल बीजपौधों के उत्पादन में पहला और सबसे महत्वपूर्ण कदम मातृवृक्षों का चयन है। प्रजनक बागों के चयन के लिए मानदंड निम्न प्रकार हैं:

क) बाग में लगातार उच्च पैदावार देनेवाले नारियल पेड़ होने चाहिए।

ख) बाग में उच्च पैदावार देने वाले पेड़ों (प्रतिवर्ष प्रति पेड़ 100 से अधिक नारियल) की संख्या अधिक होनी चाहिए।

ग) बाग के नारियल पेड़ कीट और रोगों से मुक्त होने चाहिए।

ङ) बाग भारी खाद प्रयोग या सिंचाई के बिना सामान्य स्थितियों में परिरक्षित होना चाहिए।

नारियल विकास बोर्ड किसानों को गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियों का उत्पादन और वितरण करने के लिए बीज बागों की स्थापना पर अधिक ध्यान दे रहा है। नाविबो निजी क्षेत्र में बीज बागों की स्थापना के लिए भी सहायता देता है। बोर्ड गुणवत्तायुक्त रोपण सामग्रियाँ विशेष रूप से डी X टी संकर तथा बौनी प्रजातियों के उत्पादन और वितरण के लिए निजी क्षेत्र में चार हेक्टर ज़मीन पर तीन साल में बीजबाग की स्थापना हेतु स्थापना लागत का 25 प्रतिशत (6 लाख रुपए तक सीमित) वित्तीय सहायता प्रदान करता है। भविष्य में नारियल की संकर और बौनी प्रजातियों का उत्पादन बढ़ाने केलिए बोर्ड की योजना के अधीन वित्तीय सहायता का उपयोग करके निजी क्षेत्र में अधिक से अधिक नारियल बीज बागों की स्थापना की ज़रूरत है।

2. मातृवृक्षों का सही चयन

बारानी स्थितियों में नियमित रूप से पेड़ों की वार्षिक उपज 80 फलों से अधिक और एक नारियल से कम से कम 150 ग्राम खोपरा प्राप्त होना चाहिए (सिंचित स्थिति में 120 फल/प्रति वर्ष)। पूर्ण फलन क्षमता प्राप्त नारियल पेड़ होना चाहिए जो पिछले चार वर्षों में निरंतर उच्च उपज प्रदान करता हो, उपयुक्त है । उन पेड़ों को मत चुनें जो 60 साल से अधिक उम्र के हैं या जिसपर बंध्या फल फलते हैं या जिससे अपक्व फल अधिक गिरते हैं। पश्चिम तटीय क्षेत्र में जनवरी और अप्रैल के दौरान बीजफलों को एकत्रित करें। पूर्ण रूप से पक्व यानी 12 महीने की आयु के फलों की ही तुड़ाई करें। तुड़ाई के दौरान फलों पर ठेस न पहुँचे। अनियमित आकार या आकृति के फलों को निकालें।

क) लंबी मातृवृक्षों के गुणवत्ता मानक

नियमित रूप से प्रति वर्ष 100 फल तक देने वाले 15 से 50 वर्ष की आयु के नारियल पेड़ उपयुक्त है। नियमित रूप से उच्च उपज प्रदान करने वाले पेड़ों को भी आयु की परवाह किए बिना चुना जा सकता है। पेड़ पर छोटे, मज़बूत पर्णवृंत के साथ चौड़े पर्णाधार द्वारा तने से मज़बूती से जुड़े 30 से अधिक पूर्ण रूप से खुले पत्ते होने चाहिए । मज़बूत गुच्छा डंठल वाले कम से कम 12 फलगुच्छे भी होने चाहिए।

ख) बौनी मातृवृक्ष के गुणवत्ता मानक

प्रति वर्ष 100 फल तक देने वाले 8 से 30 वर्ष तक की आयु के पेड़ उत्तम हैं। आयु की परवाह किए बिना नियमित रूप से उच्च उपज देने वाले पेड़ों को भी चुना जा सकता है।

पेड़ पर 30 से अधिक पूर्ण रूप से खुले पत्ते भी होने चाहिए। नाटे मज़बूत पर्णवृंतों के साथ चौड़े पर्णाधार वाले ये

पत्ते पेड़ के तने पर मज़बूती से जुड़े रहना चाहिए। मज़बूत गुच्छा डंठल वाले कम से कम 12 फलगुच्छे भी होने चाहिए। तना, शिखर, फल और पुष्पक्रम के विषय में बौनी किस्म के लिए विनिर्दिष्ट सभी विशिष्टि गुण पेड़ में दिखाई देने चाहिए।

3. बीजफलों की तुड़ाई और चयन के लिए उचित समय

सबसे वयस्क गुच्छे में कम से कम एक फल सूखने लगने पर उसकी तुड़ाई की जा सकती है। लंबी प्रजातियों में 11 से 12 महीनों में फल पकता है जबकि बौनी प्रजातियों में परागण के 10 से 11 महीनों के बाद फल पकते हैं। गुच्छे के मध्य भाग से आमतौर पर बीजफल चुने जाते हैं क्योंकि अग्र भाग और निचले भाग के फलों का एकसमान विकास नहीं होता है। इससे बीजपौधों के अंकुरण और गुणवत्ता में कमी होती है। तुड़ाई के बाद बीजफलों का भंडारण छाया में किया जाता है ताकि छिलका पूरी तरह सूखने के पहले अंदर का पानी सूख न जाए। लंबी किस्मों के बीजफल तुड़ाई के बाद दो महीने तक सुरक्षित रखे जा सकते हैं जबकि बौनी प्रजातियों के बीजपौधों की बुआई तुड़ाई के पंद्रह दिनों के अंदर करना ज़रूरी है।

4. नर्सरी की स्थापना

नर्सरी के लिए पानी के भरोसेमंद स्रोत के पास जल जमाव रहित दानेदार मिट्टी का चयन करें। बरसात के मौसम में जल जमाव की स्थिति में क्यारियाँ तैयार करें। जहाँ पहली बार नर्सरी स्थापित की जा रही है वहाँ सफेद सूँडी और दीमक से बचने केलिए प्रति हेक्टर 120 किलोग्राम के हिसाब से क्लोरडेन 5 प्रतिशत चूर्ण से मिट्टी का उपचार करें या क्लोरपाइरिफोस से मिट्टी शराबोर करें। नर्सरी की स्थापना कृत्रिम छाया के तले खुली जगह में या मौजूदा नारियल बागों में भी की जा सकती है जहाँ के नारियल पेड़ ऊँचे हैं और ज़मीन पूरी तरह से छाया तले नहीं हैं। मई-जून के दौरान 40 x 30 सेंटी मीटर दूरी पर लंबी और संकरी क्यारियों पर बनाए गए 20-25 सेंटीमीटर गहरे गड्ढ़ों में बीजफलों की बुआई खड़ी हुई या पड़ी हुई स्थिति में की जा सकती है। खड़ी स्थिति के रोपण में परिवहन के समय सबसे कम क्षति का फाइदा है। तथापि, लंबित रोपण में फल में पानी की मात्रा अगर अत्यधिक कम हो जाती है तो बेहतर अंकुरण के लिए फलों का रोपण पड़ी स्थिति में करें।

i) प्रतिरोपण आघात और समय से पहले फलन रोकने के लिए पॉली बैग बीजपौधों का उपयोग करें

इस तरीके से तंदुरुस्त बीजपौधों का उत्पादन किया जा सकता है । इसके लिए अंकुरित बीजफलों का रोपण 8-10 छेदयुक्त 60 x 40 सेंटीमीटर के पॉली बैगों में किया जाता है। रोपण मिश्रण में 2:1:1 अनुपात में ऊपरी मृदा, रेत तथा कंपोस्ट मिश्रण होना ज़रूरी है। पॉली बैग रोपण की खूबी यह है कि प्रतिरोपण आघात नहीं होता है तथा बीजपौधा तंदुरुस्त रहता है, परंतु परिवहन प्रभार और बीजफलों की लागत अधिक है। अगर नर्सरी खुली जगह पर स्थापित की गई है तो मानसून खतम होते ही ज़मीन का पलेवा करें और बीजपौधों को छाया प्रदान करें। नर्सरी को खरपतवारों से मुक्त रखें। नियमित रूप से बाग का अनुवीक्षण करें ताकि रोग कीटों का प्रकोप पहचाना जा सके और पौधा संरक्षण उपाय अपनाया जा सके। उन फलों को निकालें जो बोने से पाँच महीने तकअंकुरित नहीं होते हैं। इस तरीके से अपने बाग के अच्छे मातृवृक्षों से या अन्य विश्वसनीय स्रोतों से प्राप्त किए गए बीजफलों से किसान अच्छी गुणवत्तायुक्त बीजपौधों का उत्पादन खुद कर सकते हैं।

ii) नारियल बीजफल तथा बीजपौधों के लिए गुणवत्ता मानदंड

उच्च उपज सुनिश्चित करने केलिए चुने गए बीजफलों का रोपण तथा बीजपौधों का चयन महत्वपूर्ण कदम हैं। अच्छी गुणवत्ता के बीजपौधों का चयन शीघ्र अंकुरण, त्वरित वृद्धि, बीजफलों का बल, छह से आठ पत्ते, 8-10 सेंटीमीटर गर्दन का घेरा, पत्तों का शीघ्र फटना आदि विशेष गुणों पर आधारित कड़ी चयन प्रणाली द्वारा किया जा सकता है। बौनी किस्म के बीजपौधों के पर्णवृंत का रंग मातृवृक्ष के समान होना चाहिए जबकि संकर किस्मों के पर्णवृंत का रंग हरा / भूरा या जनक पेड़ों के पर्णवृंतों के रंगों का संकलन हो सकता है। पॉली बैग नर्सरी से अधिक तंदुरुस्त पौधे मिलने की गुँजाइश हैं। उपरोक्त गुणों के आधार पर बीजपौधों का चयन करें। कुल बोए गए बीजफलों से 60-65 प्रतिशत अच्छे बीजपौधे

प्राप्त किए जा सकते हैं। नारियल नर्सरियों में रोग - कीटों का गंभीर प्रकोप नहीं पाया जाता है। फिर भी, कलिका विगलन रोग से ग्रस्त पौधों को रोपण के लिए नहीं लेना चाहिए। इस रोग के लक्षण हैं कोंपल का पीला पड़ना और सड़ना और अंत में पौधा मर जाता है। प्रकोपित बीजपौधों के कोंपल हल्के से खींचने से आसानी से बाहर आ जाते हैं और उसका निचला भाग सड़ा हुआ दिखाई पड़ता है। अच्छे बीजफलों और बीजपौधों के लिए गुणवत्ता मानक सारणी 1 और 2 में दिए गए हैं।

iii)संस्तुत किस्में

भारत भर नारियल में लंबी किस्मों की खेती की जाती है तथा बौनी किस्मों की खेती संकर बीजफलों तथा डाब के उत्पादन के लिए की जाती है।

सारणी 1

नारियल बीजफलों के चयन के लिए गुणवत्ता मानदंड

मानदंड	*मानक*
अंकुरण	>80%
शुद्धता	>98%
फलों का वज़न (ग्राम)	>400 ग्राम बौना >600 ग्राम लंबा
नारियल पानी	मौजूद
रोग कीटों का प्रकोप	शून्य
पक्वता	11-12 महीने - लंबा 10-11 महीने-बौना

पश्चिम तटीय इलाकों में समान्य रूप से पश्चिम तटीय लंबी प्रजाति तथा पूर्व तटीय इलाकों में पूर्व तटीय लंबी प्रजाति के नारियल पेड़ों की खेती की जाती है। गोवा तथा महाराष्ट्र के तटीय इलाकों में बेनॉलियम लंबी प्रजाति की खेती की जाती है। अन्य लंबी प्रजातियाँ हैं- लक्षद्वीप साधारण, लक्षद्वीप माइक्रो, तिप्तूर लंबी, काप्पाडम, कोमाडन तथा अंडमान साधारण। भारत में चावक्काट बौनी नारंगी, चावक्काट बौनी पीली, चावक्काट बौनी हरी, मलयन पीली बौनी तथा मलयन नारंगी बौनी किस्मों की खेती भी की जाती है। अर्ध लंबी प्रजाति गंगाबोंदम की खेती आँध्र प्रदेश के कुछ इलाकों में की जाती है।

भारत में खेती के लिए उत्पादित कुछ लंबी और संकर प्रजातियों के ब्यौरे सारणी 3 में दिए गए हैं।

सारणी 2

नारियल बीजपौधों के चयन केलिए मानदंड

गुण	*मानक*
बीजपौधे की आयु	5-9 महीने
पत्तों की संख्या	6 से अधिक
गर्दन का घेरा	बौना-8 से.मी, संकर/लंबा -10 से.मी
ऊँचाई	बौना-80 से.मी, संकर/लंबा -100 से.मी
पर्णवृंत का रंग	बौना-प्रजनक पेड़ों का पर्णवृंत रंग; संकर-हरा/ भूरा मातृवृक्षों के पर्णवृंत रंगों का मिश्रण
रोग/कीट प्रकोप	नहीं

गुणवत्ता प्रमाणीकरण तथा अक्रेडिटेशन

एमआईडीएच के अधीन नारियल विकास बोर्ड द्वारा पहचाने गए ध्यान देने योग्य महत्वपूर्ण क्षेत्र है अच्छी गुणवत्ता के नारियल बीजपौधों का उत्पादन और वितरण। यह प्रमाणित रोपण सामग्रियों के उत्पादन के लिए नर्सरियों की विनियमित शृंखला स्थापित करने पर ही प्राप्त किया जा सकता है। नारियल विकास बोर्ड प्रत्यायन अपेक्षाएँ पूरा करने और वर्तमान उत्पादन बढ़ाने केलिए मौजूदा नर्सरियों का उन्नयन भी कर रहा है। ऐसी नर्सरियाँ अक्रेडिटेशन/ प्रमाणन के लिए नारियल विकास बोर्ड के अनुवीक्षण के अधीन होंगे। प्रत्यायन की प्रक्रिया के अधीन नर्सरियों को कुछ अनिवार्य एवं वांछित मानदंडों के आधार पर अनुमोदन और अक्रेडिटेशन प्रदान करने हेतु बोर्ड को आवेदन देना होगा। इस उद्देश्य केलिए गठित विशेषज्ञों की एक समिति के निरीक्षण के आधार पर विनिर्दिष्ट अवधि के लिए प्रत्यायन प्रदान किया जाएगा। नारियल नर्सरियों के अक्रेडिटेशन राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड द्वारा बागवानी नर्सरी प्रमाणन कार्यक्रम के भाग स्वरूप किया जाता है। किसान समूह को गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियों की पूर्ति के महत्व को ध्यान में रखते हुए, वर्ष 2015-16 से नाविबो को भी इस कार्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए विनिर्दिष्ट किया गया है।

सारणी 3

क्र सं	नाम	क्षेत्र जिसके लिए संस्तुत
1.	चंद्रकल्पा	केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु
2.	केराचंद्रा	आँध्र प्रदेश,महाराष्ट्र
3.	चावक्काट नारंगी बौनी	सभी नारियल उत्पादक क्षेत्र
4.	कल्पप्रतिभा	पश्चिम तटीय क्षेत्र और भारतीय प्रायद्वीप
5.	कल्पधेनु	पश्चिम तटीय क्षेत्र और अंडमान निकोबार द्वीपसमूह
6.	कल्पमित्रा	पश्चिम तटीय क्षेत्र और पश्चिम बंगाल
7.	कल्पतरु	केरल,कर्नाटक, तमिलनाडु
8.	कल्परक्षा	पश्चिम तटीय क्षेत्र तथा केरल के जड़ मुर्झा रोग ग्रस्त इलाके
9.	कल्पश्री	पश्चिम तटीय क्षेत्र तथा केरल के जड़ मुर्झा रोग ग्रस्त इलाके
10.	प्रताप	कोंकण क्षेत्र
11.	वीपीएम-3	तमिलनाडु
12.	एएलआर-1	तमिलनाडु
13.	कामरूपा	असम
14.	केरासागरा	केरल
15.	केरा केरलम	केरल, तमिलनाडु तथा पश्चिम बंगाल
16.	केरा बस्तर	आँध्र प्रदेश, महाराष्ट्र के कोंकण क्षेत्र तथा तमिलनाडु
17.	कल्याणी कोकोनट-1	पश्चिम बंगाल
18.	गौतमी गंगा	आँध्र प्रदेश
	संकर	
1.	चंद्र शंकरा	केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु
2.	केरा शंकरा	केरल, कर्नाटक,महाराष्ट्र, आँध्र प्रदेश
3.	चंद्र लक्षा	केरल, कर्नाटक
4.	कल्प शंकरा	पश्चिम तटीय क्षेत्र तथा केरल के जड़ मुर्झा रोग ग्रस्त इलाके
5.	कल्पसमृद्धि	केरल और असम
6	लक्ष गंगा	केरल, तमिलनाडु
7.	केरा गंगा	केरल
8.	केरा श्री	केरल
9.	केरासौभाग्या	केरल
10	आनंद गंगा	केरल

उपरोक्त विश्लेषण से साबित होता है कि बीजफल तथा बीजपौधे विभिन्न चरणों पर सावधानी से विभिन्न चयन प्रक्रियाओं के द्वारा प्राप्त किए जाते हैं। हमारे देश में प्रत्येक इलाके के लिए उपयुक्त उच्च उपज वाली नारियल प्रजातियाँ उपलब्ध हैं। प्रत्येक इलाके /प्रजाति के लिए खास उत्पादन प्रौद्योगिकियाँ भी हैं। गुणवत्तायुक्त रोपण सामग्रियों की माँग की पूर्ति करने केलिए बीजबागों और रोपण सामग्रियों के स्रोतों की स्थापना में अनुसंधान एवं विकास विभागों द्वारा काफी प्रयास किए गए हैं। तथापि बीज फलों से बीजपौधे उगाने की पारंपरिक रीति की सीमाएँ हैं। 20-24 महीने की अवधि में एक फल से एक ही पौधा उगाया जा सकता है । संकरण बीजपौधों के उत्पादन की भी सीमाएँ हैं। भारत में मौजूद नारियल पेड़ों में से 98 प्रतिशत लंबी प्रजाति की है और बौनी प्रजाति के पेड़ सीमित संख्या में ही पाए जाते हैं।

तथापि रोपण सामग्रियों के कुल उत्पादन में संकर बीजपौधों का उत्पादन 3.5 प्रतिशत से कम है। संकर किस्मों के लिए बढ़ती माँग के फलस्वरूप निजी नर्सरियाँ अप्रमाणित बीजपौधों की बिक्री करती हैं। प्रमुख नर्सरियाँ भी 250-500 रुपए प्रति पौधे की ऊँची दर पर बिक्री करती हैं वह भी लंबी अवधि की प्रतीक्षा के बाद मिल जाता है। अगर गुणवत्ता सुनिश्चित है तो किसान उच्च दाम देने के लिए तैयार हो जाते हैं। एक ही मातृवृक्ष से संकर पौधों का उत्पादन करने में सीमा होती है। वर्तमान में सात नाविबो प्रबीउ फार्म, सीपीसीआरआई तथा किसान बागों में संकरण प्रकार्य किया जाता है। संकर किस्मों के उत्पादन के लिए समय लगता है। गुणवत्तायुक्त रोपण सामग्रियों की बढ़ती माँग को ध्यान में रखते हुए, बड़े पैमाने पर उत्पादन के लिए ऊतक संवर्धन जैसे त्वरित प्रजनन तकनीक अपनाना ज़रूरी है। यह नारियल बीजफल उत्पादन प्रकार्य में लगे अनुसंधान संगठनों के दीर्घकालीन रणनीति होनी चाहिए। बढ़ती माँग की पूर्ति हेतु गुणवत्तायुक्त रोपण सामग्रियों का उत्पादन बढ़ाने के लिए बोर्ड द्वारा शुरू किए गए किसान उत्पादक संगठनों के द्वारा किसानों की सक्रिय सहभागिता के साथ वर्तमान बीज बागों में उत्पादन में वृद्धि और अधिक बौने मातृवृक्ष बागों की स्थापना आदि समय की माँग है। इसके अलावा, गुणवत्तायुक्त रोपण सामग्रियों का उपयोग, मातृवृक्षों, बीजफल एवं बीजपौधों के चयन के गुणवत्ता मानदंड आदि के संबंध में किसान समूह को जागरूक बनाना चाहिए।

नारियल के नुस्खे

इन्दु नारायणन

1. चने दाल की चटनी

सामग्रियाँ:

चने की दाल-50 ग्राम
इमली का रस-2 छोटा चम्मच
राई-1 छोटा चम्मच
कड़ी पत्ता-1 बड़ा चम्मच
सरसों का तेल-एक बड़ा चम्मच
हींग-चुटकी भर
नारियल-4 बड़ा चम्मच
लाल मिर्च पाउडर-1/2 छोटा चम्मच
नमक-स्वादानुसार

बनाने की विधि: सबसे पहले चना दाल को कुछ घंटों तक पानी में डाल कर रखें। इसके बाद दाल का पानी निकालकर दाल में थोड़ा घी डालकर भून लें। इमली को पानी में उबालें और ठंडा करके संभालकर छान लें। गूदा फेंक दें। पानी एक बर्तन में रखें। अब चना दाल को मिक्सी में डालकर पीसें। पानी डालकर घोल जैसा बना लें। अब एक पैन में तेल गरम करें। इसमें हींग, राई, कड़ी पत्ता और लाल मिर्च तोड़कर डालें। जब राई फड़क जाए तब इसमें दाल के घोल का तड़का लगाएं। कद्दूकस किया नारियल मिलाएं और स्वादानुसार नमक डालकर डोसे और इडली के साथ स्वादिष्ट चटनी सर्व करें।

2. बहुमेल चटनी

सामग्रियाँ:

हरी धनियाँ-1 गड्डी
मूली के पत्ते-6-7
प्याज़ के पत्ते-5-6
हरी मिर्च-5-6
गाजर के पत्ते-6-7
नारियल-50 ग्राम
भूने चने का पाउडर-2 बड़ा चम्मच
टमाटर-2
नीम्बू का रस-छोटा चम्मच
दही-4 छोटा चम्मच
जीरा-1 छोटा चम्मच
नमक-स्वादानुसार
अदरक-1 टुकड़ा

बनाने की विधि: सभी पत्तियों को अच्छी तरह से धोकर काट लें। इन सभी सामग्रियों को मिक्सी में डालकर गाढ़ा पेस्ट बना लें। सर्व करते समय नमक व दही मिलाएं।

नारियल विकास बोर्ड के प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म : भारत में नारियल विकास के मुख्य केंद्र

प्रमोद पी.कुरियन

सहायक निदेशक, नारियल विकास बोर्ड, कोची-11

नारियल विकास बोर्ड भारत में नारियल उद्योग के समग्र विकास के लिए विभिन्न योजनाओं का कार्यान्वयन कर रहा है। गुणवत्तायुक्त रोपण सामग्रियों का उत्पादन एवं वितरण बोर्ड की मुख्य गतिविधि है। देश में उत्पादन एवं उत्पादकता बढ़ाने में मुख्य अड़चन उपयुक्त रोपण सामग्रियों की कमी है। नारियल जैसी बहुवर्षी फसल के विषय में गुणवत्तायुक्त रोपण सामग्रियों के बिना प्रत्याशित उपज प्राप्त नहीं की जा सकती है। कम पैदावारवाले नारियल पेड़ किसान केलिए मात्र घाटा साबित होंगे। अतः गुणवत्तायुक्त रोपण सामग्रियों के उत्पादन एवं पूर्ति के लिए पर्याप्त सुविधाओं की ज़रूरत है। इस लक्ष्य के मद्देनज़र, बोर्ड ने विभिन्न राज्यों में जैसेकि केरल, कर्नाटक, आँध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, बिहार, असम, ओड़िशा तथा तमिलनाडु में प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म स्थापित किए हैं। महाराष्ट्र तथा तमिलनाडु में प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म हाल ही में शुरू हुए हैं। प्रबीउ फार्मों के ब्योरे सारणी 1 में दिए गए हैं।

सारणी 1 नाविबो के प्रबीउ फार्म

स्थान/राज्य	क्षेत्र(हेक्टर)	स्थापना का वर्ष	फलदायी पेड़ों की संख्या
मंड्या (कर्नाटक)	20	1982	3200
अभयपुरी (असम)	40	1987	3028
मधेपुरा (बिहार)	40	1987	3006
कोंडागाँव (छत्तीसगढ़)	40	1988	3427
नेर्यमंगलम(केरल)	20	1991	1385
वेगिवाड़ा (आँध्रप्रदेश)	72	1994	3285
पित्तापल्ली(ओड़िशा)	40	1999	2914
पालघर (महाराष्ट्र)	40	2013	0
धली (तमिलनाडु)	40	2014	0
कुल	352		20245

प्रबीउ फार्म की स्थापना के मुख्य लक्ष्य गुणवत्तायुक्त रोपण सामग्रियों का उत्पादन एवं वितरण तथा किसानों को नाममात्र दर पर उसकी पूर्ति है। फार्म में वैज्ञानिक तरीके से अनुरक्षित नारियल नर्सरियों की स्थापना की जाती है। सभी फार्मों में मातृवृक्ष कृत्रिम परागण के लिए उपयुक्त आयु के हो जाते ही संकरण कार्य शुरू किया जाता है। प्रबीउ फार्मों में वर्ष 2012-13 से लेकर 2014-15 तक बोए गए बीजफलों और वर्ष 2015-16 केलिए निर्धारित लक्ष्य के ब्यौरे सारणी 2 में दिए गए हैं।

सारणी 2 बोए गए बीजफल तथा 2015-16 के लिए लक्ष्य

प्रबीउ फार्म	2012-13	2013-14	2014-15	लक्ष्य 2015-16
मंड्या	3,41,383	2,25,227	1,72,657	3,00,000
कोंडागाँव	2,04,875	170,200	67,550	2,00,000
अभयपुरी	1,50,396	4,70,987	35,450	1,00,000
मधेपुरा	90,922	2,31,310	1,250	55,000
वेगिवाड़ा	2,57,620	28,370	98,521	3,00,000
पित्तापल्ली	4,05,707	1,04,040	2,00,268	2,00,000
पालघर	0	36,070	78,050	2,00,000
नेर्यमंगलम	2,79,195	1,45,806	2,28,656	3,25,000
धली	0	0	25,105	2,50,000
कुल योग	**17,30,098**	**14,12,019**	**9,07,507**	**19,30,000**

देश के सरकारी क्षेत्र में गुणवत्तायुक्त रोपण सामग्रियों के उत्पादन के 50 प्रतिशत से अधिक बोर्ड के प्रबीउ फार्मों का योगदान है। सरकारी और निजी क्षेत्रों में हर वर्ष उत्पादित और वितरित 35 लाख बीजपौधों में से 13 लाख बीजपौधे बोर्ड के इन नर्सरियों में उत्पादित किए जाते हैं। बोर्ड के सर्वप्रथम प्रबीउ फार्म की स्थापना 1982 में कर्नाटक के मंड्या जिले में की गई । किसानों का बयान है कि इस फार्म में उत्पादित नारियल बीजपौधों की गुणवत्ता सर्वोत्तम है। इस फार्म में उत्पादित नारियल पौधों की माँग बढ़ती जा रही है। प्रबीउ फार्म, मंड्या में अपनाई गई संकरण तकनीक, संकरण के लिए सर्वोत्तम मानक प्रोटॉकॉल है जिससे अधिकतम गुणवत्तायुक्त संकर बीजपौधे प्राप्त होते हैं। वर्ष 2012-13 से 2014-15 तक फार्मों में उत्पादित बीजपौधों के ब्यौरे और चालू 2015-16 वर्ष के लिए निर्धारित लक्ष्य सारणी 3 में दर्शाए गए हैं।

प्रबीउ फार्म बोर्ड के लिए आय के मुख्य स्रोत हैं । फार्मों में बीजपौधे, परिपक्व नारियल, मछली, कोको, काजू, अमरूद, सपोटा आदि की बिक्री से आय प्राप्त होती है। फार्मों में बीजपौधों की उत्पादन लागत, वहाँ से प्राप्त आय से उठाई जाती है। पिछले तीन वर्षों में फार्मों से प्राप्त आय तथा वर्ष 2015-16 के लिए निर्धारित लक्ष्य सारणी 4 में दिए गए हैं।

बोर्ड के फार्म देश में नारियल की वैज्ञानिक खेती के लिए निदर्शन केंद्रों का कार्य भी करते हैं। रोपण की विभिन्न प्रणालियाँ, किस्मवार रोपण , विभिन्न प्रजातियों का बढ़वार और पैदावार तथा स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल हो जाने की इन प्रजातियों की क्षमता, प्रति इकाई क्षेत्र से प्राप्त आय बढ़ाने केलिए वार्षिक एवं बहुवर्षी फसलों की अंतराखेती आदि कार्य निदर्शन फार्मों में किए जाते हैं। यह मात्र सच्चाई है कि नारियल खेती के सभी पहलुओं के संबंध में सूचना प्रदान करते हुए बोर्ड के फार्म नारियल किसानों केलिए अध्ययन केंद्र साबित हुए हैं । चालू वित्तीय वर्ष में बोर्ड का लक्ष्य 19.30 लाख बीजफलों की बुआई है तथा पहले ही बोए गए फलों से 12.90 बीजपौधे उगाना भी लक्षित है। वर्ष 2015-16 के दौरान बोर्ड प्रबीउ फार्मों से 6.8 करोड़ रुपए की आय सृजित करने का भी लक्ष्य बनाया है।

सारणी 3 बीजपौधों का उत्पादन तथा वर्ष 2015-16 के लिए लक्ष्य

प्रबीउ फार्म	2012-13	2013-14	2014-15	लक्ष्य 2015-16
मंड्या	2,58,092	2,28,199	1,28,747	1,30,000
कोंडागाँव	92,446	120,818	1,00,278	1,00,000
अभयपुरी	1,22,979	63,519	2,90,316	2,25,000
मधेपुरा	1,03,580	1,62,204	0	35,000
वेगिवाड़ा	81,607	3,16,360	14,714	1,00,000
पित्तापल्ली	93,028	2,99,566	65,025	1,50,000
पालघर	0	5,256	21,214	1,00,000
नेर्यमंगलम	98,597	1,30,928	2,39,294	2,50,000
धली	0	0	0	2,00,000
कुल योग	**8,50,329**	**13,26,850**	**8,59,588**	**12,90,000**

सारणी 4 प्राप्त आय तथा वर्ष 2015-16 के लिए लक्ष्य (रुपए में)

प्रबीउ फार्म	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16
मंड्या	1,44,05,800	98,62,000	1,13,62,000	1,25,00,000
कोंडागाँव	40,49,000	23,81,000	43,11,000	50,00,000
अभयपुरी	15,20,700	32,49,000	61,33,000	70,00,000
मधेपुरा	5,73,400	22,97,000	49,27,000	60,00,000
वेगिवाड़ा	18,61,700	47,80,000	91,22,000	1,05,00,000
पित्तापल्ली	15,35,300	10,15,77,000	40,98,000	50,00,000
नेर्यमंगलम	34,54,000	67,40,000	1,07,80,000	1,15,00,000
पालघर	0	0	4,70,000	25,00,000
धली	0	0	0	80,00,000
कुल योग	**2,73,99,900**	**3,98,86,000**	**5,12,03,000**	**6,80,00,000**

यद्यपि प्रबीउ फार्म देश के नारियल किसानों की अपेक्षाओं की पूर्ति कुछ हद तक करते हैं फिर भी उन्हें देश के नारियल उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने में भी अहम भूमिका निभानी हैं। प्रबीउ फार्मों को संकरण प्रकार्य पर ज़ोर देकर संकर बीजपौधों के वर्धित उत्पादन, फार्म स्तर पर उत्पादकता सुधार मिशन का कार्यान्वयन, किसानों की खेती संबंधी समस्याओं का हल करने हेतु बाग में अनुसंधान कार्यक्रम चलाना, संकर बीजपौधों का उत्पादन बढ़ाने हेतु अधिक बौने मातृवृक्षों को उगाने के लिए बौने बीजपौधों के उत्पादन में वृद्धि लाना आदि नारियल खेती से जुड़े बहुविध कार्य प्रबीउ फार्म कर सकते हैं। हमारे देश के किसानों के लिए प्रबीउ फार्म गुणवत्तायुक्त बीजपौधों के उत्पादन तथा वैज्ञानिक नारियल खेती के निदर्शन केलिए मुख्य भूमिका निभा सकते हैं। प्रबीउ फार्मों की तरफ से एक ठोस कदम समय की माँग है।

भारत सरकार 2014-15 के दौरान बाग में ही नारियल संबंधी अनुसंधान केंद्र शुरू करने के लिए नई योजना लागू की है। बिक्री के लिए रोपण सामग्रियों की आयु का मानकीकरण, नर्सरियों में बीजफल बोने का तरीका, प्लास्टिक शीट द्वारा पलेवा करके खरपतवार का नियंत्रण, विभिन्न कृषि जलवायु परिस्थितियों के लिए उपयुक्त अंतराफसलों को पहचानना आदि संबंधी बाग में अनुसंधान आयोजित करने केलिए बोर्ड ने पहल की है। उम्मीद है कि भविष्य में बोर्ड के प्रबीउ फार्म बाग में ही नारियल संबंधी अनुप्रयुक्त अनुसंधान चलाकर नारियल किसानों के लाभ के लिए नई प्रौद्योगिकियाँ विकसित करेंगे।

प्रबीउ फार्म, अभयपुरी

जी. रघोत्तमन
तकनीकी अधिकारी, प्रबीउ फार्म, अभयपुरी

उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में नारियल खेती और उद्योग के समग्र विकास हेतु तथा नारियल किसानों की रोपण सामग्रियों की अपेक्षाओं को पूरा करने लिए वित्तीय वर्ष 1986-87 में नाविबो, प्रबीउ फार्म, अभयपुरी की स्थापना असम के बोंगईगाँव जिले के अभयपुरी शहर से 3.5 किलोमीटर दूरी पर बाताबारी गाँव में की गई। फार्म गुवाहटी से 200 किलोमीटर और बोंगईगाँव से 27 कि.मी दूर स्थित है। फार्म में विभिन्न प्रजातियों के 4268 नारियल पेड़ हैं तथा इसमें से 2581 पेड़ों का फलन शुरू हुआ है।

गुणवत्तापूर्ण नारियल बीजपौधे उत्पादित किए गए जो नया रिकार्ड है।

वाणिज्यिक नर्सरी कार्यक्रम के अधीन, फार्म में 1,68,668 नारियल बीजपौधों की बिक्री की गई जिनमें 1,63,887 लंबा, 4706 बौना तथा 75 डी x टी बीजपौधे थे। वर्ष

मलयन पीला बौना x तिप्तूर लंबा, चावक्काट नारंगी बौना x तिप्तूर लंबा तथा चावक्काट हरा बौना x तिप्तूर लंबा) तथा टी x डी (कामरूप x मलयन नारंगी बौना) फार्म में ही संकरण कार्यक्रम के अधीन उत्पादित किए जाते हैं। वर्ष 2014-15 में फार्म से

मातृवृक्ष

संकरण किया गया मातृवृक्ष

फार्म से जुड़ी वाणिज्यिक नर्सरी में विभिन्न नारियल प्रजातियों के बीजपौधों का उत्पादन किया जाता है। वित्तीय वर्ष 2014-15 में बोर्ड ने इस फार्म को तीन लाख नारियल बीजपौधे उत्पादित करने का लक्ष्य दिया था। 2,88,900 लंबा, 1382 बौना तथा 34 टी x डी सहित कुल 2,90,316

2014-15 में इन पौधों की बिक्री उत्तर पूर्व की सात बहनें कहलाने वाले असम, त्रिपुरा, मणिपुर, मेघालय, मिज़ोरम,अरुणाचल प्रदेश तथा पश्चिम बंगाल राज्यों में की गई और यह भी एक रिकार्ड है।

डी xटी (गंगाबोंदम x पश्चिम तटीय लंबा, मलयन नारंगी बौना x तिप्तूर लंबा,

कुल 6.61 लाख रुपए की आय प्राप्त हुई जिसमें से 6.50 लाख रुपए बीजपौधों की बिक्री से प्राप्त हुई। वर्तमान में फार्म में 1.60 लाख नारियल बीजपौधों की स्टॉक है जो वित्तीय वर्ष 2015-16 की मांग की पूर्ति के लिए तैयार है।

प्रबीउ फार्म, कोंडागाँव

आर.एस सेंगर* और समीक्षा अवस्थी**

*सहायक निदेशक और **बागवानी सहायक, प्रबीउ फार्म, कोंडागाँव

नारियल विकास बोर्ड ने छत्तीसगढ़ के किसानों के लिए नारियल की गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियाँ उत्पादित करने हेतु 100 एकड़ में प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म स्थापित किया है। नारियल जैसी रोपण फसलों से जो आय प्राप्त होती है वह पूरी तरह रोपण सामग्री की गुणवत्ता पर निर्भर होती है। बीजपौधे के ओज से वयस्क पेड़ के शीघ्र फलन, अधिक पैदावार तथा अधिक खोपड़ा उत्पादन आदि विशेष गुणों का गहरा संबंध है। प्रजनन की वानस्पतिक रीतियों के लिए व्यवहार्य प्रौद्योगिकियों के अभाव में , नारियल का प्रजनन बीज द्वारा होता है। अगर बीजफल गुणवत्तापूर्ण नहीं है तो किसान केलिए रोपण महंगा पड़ेगा तथा समय और पैसे का काफी नुकसान भी हो जाएगा।

बस्तर क्षेत्र में बागों में या यहाँ तक कि घर आँगन में नारियल की रोपाई करते समय, गुणवत्तायुक्त रोपण सामग्रियाँ चुनने में अधिक ध्यान देने और पौधों के प्रबंधन में अधिक सावधानी बरतने की आवश्यकता है। सामान्य तौर पर सही जानकारी के अभाव में अपने बागों के लिए किसान अनुपयुक्त बीजफल और पौधे चुनकर गलत तरीके से बोते हैं।

प्रबीउ फार्म कोंडागाँव से संलग्न नर्सरी

गुणवत्तापूर्ण नारियल बीजपौधों की स्थानीय माँग को ध्यान में रखते हुए, प्रबीउ फार्म, कोंडागाँव में छत्तीसगढ़ के किसानों की सुविधा के लिए बड़े पैमाने पर गुणवत्तायुक्त रोपण सामग्रियों का उत्पादन शुरू किया गया है। प्रबीउ फार्म, कोंडागाँव में उपलब्ध मातृवृक्ष से तोड़े गए बीजफलों से स्थानीय माँग पूरी नहीं की जा सकी इसलिए बाह्य स्रोतों से (आँध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, ओड़िशा) चुने गए मातृवृक्षों से प्राप्त किए बीजफल, फार्म में उगाए गए।

गैर पारंपरिक इलाकों में गुणवत्तायुक्त रोपण सामग्रियों का उत्पादन बीजफलों का चयन, भंडारण अवधि, बुआई का समय, बुआई की रीति, सिंचाई प्रणाली, जगह का चयन, खरपतवार प्रबंधन आदि पर निर्भर है। छत्तीसगढ़ में पारंपरिक रूप से नारियल की खेती नहीं की जाती है क्योंकि वहाँ गर्मियों और जाड़े में तापमान में गंभीर घट-बढ़ आती है और इसी वजह से नारियल खेती के लिए गुणवत्तायुक्त रोपण सामग्रियों का उत्पादन करना भी कठिन है । प्रबीउ फार्म, कोंडागाँव में बाह्य स्रोतों से प्राप्त नारियल बीजफलों की बुआई

प्रबीउ फार्म कोंडागाँव की स्थापना से लेकर उत्पादित नारियल बीजपौधे

वर्ष	*उत्पादित बीजपौधों की संख्या*
2000-07	40,925
2007-08	9,465
2008-09	15,023
2009-10	14,268
2010-11	13,988
2011-12	92,446
2012-13	1,20,818
2013-14	1,00,278
कुल	**4,07,211**

की जाती है। विभिन्न अध्ययनों से साबित हुआ है कि जून से सितंबर महीनों में बोए गए बीजफलों से अधिक बीजपौधे प्राप्त होते हैं।

प्रबीउ फार्म, कोंडागाँव में उपलब्ध आँकड़े तथा अनुभव से यह स्पष्ट है कि तमिलनाडु और कर्नाटक से प्राप्त और फार्म से ही प्राप्त किए गए बीजफलों की बुआई नर्सरी में सितंबर से नवंबर के बीच करने से अन्य महीनों की तुलना में अधिक फल अंकुरित होते हैं।

जगह का चयन, क्यारियों की तैयारी तथा बीजफलों की बुआई

नर्सरी की स्थापना ऐसी जगह पर करनी चाहिए जहाँ सालभर में नियमित रूप से पानी उपलब्ध है। मिट्‌टी की स्थिति, पानी की उपलब्धता, तापमान में उतार चढ़ाव आदि पर ध्यान रखकर नारियल पौधों की बुआई क्यारियाँ बनाए बिना सीधे ज़मीन पर भी की जा सकती है। ज़मीन रोग कीटों के प्रकोप से मुक्त होनी चाहिए।

क्यारियाँ तैयार करने में उचित ध्यान देना ज़रूरी है। पानी के स्रोत के पास, जल-जमाव रहित दानेदार मिट्टी क्यारियाँ तैयार करने के लिए उत्तम है। जल जमाव रोकने के लिए ज़मीन से 10-15 सेंटीमीटर ऊँचाई में तैयार की गई क्यारियों में बीजफलों की बुआई की जा सकती है।

सामान्य तौर पर दो मीटर लंबाई तथा एक मीटर चौड़ाई में क्यारियाँ बनाई जाती है । पौधों का अनुवीक्षण, सिंचाई, अंतराखेती तथा जल निकासी सुविधाओं के लिए दो क्यारियों के बीच 60-75 सेंटीमीटर जगह छोड़ी जाती है। सफेद सूँडी और दीमक के खिलाफ प्रतिरोधात्मक उपाय स्वरूप प्रति हेक्टर के लिए 120 किलोग्राम की दर पर 5 प्रतिशत धूल के साथ क्लोरपैरिफोस से मिट्टी का उपचार करें। मई-जून के दौरान 20-25 सें.मी गहरे गड्ढ़ों में 40 x30 सेंटीमीटर दूरी पर बीजपौधों की बुआई की जाती है।

यह महत्वपूर्ण है कि बीजफल क्यारियों में बीजफलों की बुआई पड़ी हुई स्थिति में करें या खड़ी हुई स्थिति में डंठल का भाग ऊपर की ओर करके जैसा कि छिलका मिट्टी की परत से ठीक ऊपर दिखाई पड़े। खड़ी हुई स्थिति में बुआई करना परिवहन के लिए सुविधाजनक होता है। दूसरी तरफ, पड़ी हुई स्थिति में बीजफलों की बुआई से नारियल के भीतर के पानी से बढ़ते बीजपौधों का पोषण सुनिश्चित किया जा सकता है साथ में नारियल पानी भ्रूण के निकट होने के कारण अंकुरण के लिए ज्यादा अनुकूल परिस्थिति बन जाती है।

पड़ी हुई स्थिति में बुआई के समय बीजफल के तीन भागों में सबसे चौड़ा भाग ऊपर आना चाहिए इससे बड़ी संख्या में बीजफल अंकुरित हो जाते हैं और अंकुरित बीजपौधों के गर्दन के घेरे बड़े और मोटे हो

जाते हैं। बीजफलों को मिट्टी में गाड़ दें और दीमक के प्रकोप से बचने केलिए रेत की मोटी परत से ढक दें।

पलेवा से मिट्टी का नमी संरक्षण

अधिक संख्या में बीजफल अंकुरित हो जाने और गुणवत्तायुक्त बीजपौधे उपलब्ध होने के लिए स्प्रिंक्लर जैसी उचित सिंचाई प्रणाली का प्रयोग करें। तेज़ गर्मियों में नमी संरक्षण के लिए क्यारियों में विशेषकर खुली जगह पर रेतीली मिट्टी में बनाई गई नर्सरी क्यारियों में पलेवा करना और छाया देना चाहिए । पलेवा करने केलिए नारियल पत्तों का भी उपयोग कर सकते हैं।

बीजफलों का चयन और प्रमाणन

छत्तीसगढ़ जैसे गैर पारंपरिक राज्य में सामान्य तौर पर बुआई के तीन महीने के बाद बीजफल अंकुरित होने लगते हैं। छह महीने के बाद अंकुरित बीजपौधों को निकालकर छोड़ दें। रोपाई के लिए बीजपौधों को हल्के से खींचकर मिट्टी से बाहर निकालें ताकि फल को ठेस न पहुँचे। बीजपौधों को निकालने से पहले क्यारियों की सिंचाई करें। बीजफलों को निकालने के बाद, तुरंत इसकी रोपाई बाग में करें।

अगला मुख्य कदम नर्सरी की देखभाल और प्रबंधन है। इसमें नर्सरी की सिंचाई, खाद का प्रयोग, खरपतवार प्रबंधन तथा पौधा संरक्षण प्रमुख कार्य हैं। सूखे के मौसम में मिट्टी में बीजपौधे के लिए आवश्यक नमी सुनिश्चित करने के लिए नियमित रूप से सिंचाई करें। क्यारियों से खरपतवार तुंरत निकालें क्योंकि ये पोषकतत्व, पानी, जगह और धूप के लिए बीजपौधों के साथ प्रतिस्पर्धा करते हैं ।

रोग कीट प्रबंधन

पत्तों में काली चित्तियाँ पड़ना तथा कलिका विगलन जैसे फफूँदी रोगों का खतरा हैं तो महीने में दो बार प्रतिरोधात्मक उपाय करें। बोर्डो मिश्रण या 0.3 प्रतिशत इंडोफिल एम-45 पत्तों के ऊपर और नीचे छिड़कना फायदेमंद उपाय है। गंभीर रूप से रोगग्रस्त पत्तों को काट निकालें तथा जला दें ताकि अन्य पत्तों में रोग न फैलें।

बीजपौधों का चयन

बीजपौधों का चयन करते समय शीघ्र अंकुरण, पत्ते तेज़ी से पत्तियों में फूटना, स्वस्थ और मज़बूत दिखना, एक साल के उम्र में छह पत्ते और 10 सेंटीमीटर गर्दन का घेरा होना आदि गुणों पर ध्यान दें। नर्सरी में बीजपौधों के सही चयन से उपज में 10 प्रतिशत सुधार होता है। हमेशा पाया जाता है कि घर आँगन की खेती में अच्छी तरह सिंचाई नहीं की जाती है और खाद भी समय पर नहीं देता है। रोग कीटों का प्रकोप विशेषकर चूहों की समस्या की उपेक्षा की जाती है और रोकथाम के उपाय नहीं अपनाए जाते हैं। विज्ञापनों से आकर्षित होकर किसान कृषि जलवायु परिस्थितियों के लिए उपयुक्त स्थानीय प्रजातियों को छोड़कर यह देखे बिना उच्च उपज देनेवाली प्रजातियों को चुनते हैं कि वे स्थानीय परिस्थितियों में बचेंगे कि नहीं। आगे की जानकारी के लिए सहायक निदेशक, नारियल विकास बोर्ड, प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म, जिला-कोंडागाँव से संपर्क करें।

प्रबीउ फार्म, मंड्या

एम.के.सिंह
फार्म प्रबंधक, प्रबीउ फार्म, मंड्या

नारियल से अधिक उत्पादन और उत्पादकता प्राप्त करने के लिए गुणवत्तायुक्त रोपण सामग्री सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि नारियल पेड़ पूरी तरह फलदायी होने के लिए अधिक समय लेने के कारण नए पौधों की बढ़वार और पैदावार का मूल्यांकन कई सालों के बाद ही किया जा सकता है। नारियल पेड़ को फलने के लिए 6-7 साल लगते हैं ; सदियों पुराना इस विश्वास को गलत साबित किया गया है । उक्त अवधि से बहुत पहले नारियल पेड़ फलना शुरू करता है। अच्छी प्रबंधन स्थितियों में नारियल की लंबी, संकर तथा बौनी किस्मों को फलने के लिए क्रमशः 4 वर्ष, 3-5 वर्ष तथा 3 वर्ष ही लगते हैं। फिरभी लंबी फलन पूर्व अवधि के कारण बीजफलों का सही चयन अति महत्वपूर्ण है। अगर बीजफल की गुणवत्ता गौण हुई तो नए बागान में पेड़ अनियमित रूप से फलने लगेंगे और किसान का काफी समय और पैसा बर्बाद होते हैं। नारियल का अधिकतर पर परागण होता है तथा उत्पन्न पौधों में ठीक वैसे ही गुण नहीं पाए जाते हैं। इससे बीजफल एवं बीजपौधों का चयन अत्यंत मुश्किल होता है। परंतु बाग स्तर पर कई चयन प्रक्रियाओं से गौण गुणवत्ता के बीजफलों एवं बीजपौधों को हटाया जा सकता है।

पिछले कुछ वर्षों में प्रबीउ फार्म, मंड्या मात्र कर्नाटक के लिए ही नहीं बल्कि तमिलनाडु, गोवा, महाराष्ट्र, आँध्र प्रदेश तथा गुजरात के लिए गुणवत्तायुक्त नारियल

बोए गए बीजफल (2007-08 से 2014-15)

किस्म	2007-08	2008-09	2009-10	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14	2014-15
लंबी	30330	42070	49090	75718	195630	194317	114306	146583
बौनी	46166	64697	90864	42970	85579	92606	74876	40090
संकर	38676	40318	82964	50400	79871	54460	36015	31609
कुल	115172	147085	222918	169088	361080	341383	225227	218282

बीजपौध उत्पादन (2007-08 से 2014-15)

किस्म	2007-08	2008-09	2009-10	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14	2014-15
लंबी	33123	24862	29775	40138	60708	154171	150390	84882
बौनी	45484	45864	53135	76925	64613	92706	68508	51952
संकर	8973	7443	8147	14938	10172	11215	9301	8755
कुल	**87580**	**80059**	**91057**	**132001**	**135493**	**258092**	**228199**	**145589**

रोपण सामग्रियों का मुख्य विश्वसनीय केंद्र के रूप में उभर आया है।

यहाँ से उत्तर और उत्तर पूर्वी राज्यों के लिए विभिन्न नारियल प्रजातियों की पूर्ति की जाती है।

प्रबीउ फार्म, मंड्या बैंगलूर से 110 किलोमीटर, मैसूर से 55 किलोमीटर और मंड्या शहर से 10 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस फार्म में बड़ी संख्या में लंबे और बौने मातृवृक्ष हैं और डी x टी बीजफल/बीजपौधों के उत्पादन हेतु सुस्थापित संकरण इकाई है। लंबी प्रजातियों में पश्चिम तटीय लंबा, तिप्तूर लंबा, तमिलनाडु लंबा, बेनोलिम लंबा, लक्षद्वीप साधारण, लक्षद्वीप माइक्रो, अंडमान जयंट, के साथ साथ एफएमएस, न्यूगिनिया, सहामन, कालेंगुटे, फिलिप्पींस, सीषेल्स, एसएसजी, फिजी तथा सियाम जैसी विदेशी प्रजातियाँ भी हैं। इस फार्म में चावक्काट नारंगी बौनी, मलयन नारंगी बौनी, चावक्काट हरी बौनी प्रजातियाँ भी हैं। बौनी x लंबी प्रजातियों में चावक्काट नारंगी बौनी x तिप्तूर लंबी, चावक्काट हरी बौनी x तिप्तूर लंबी संकर किस्मों का उत्पादन भी इस फार्म में किया जाता है।

भारतीय नारियल पत्रिका की एजेंसी संबंधी शर्तें

1. भारतीय नारियल पत्रिका का वार्षिक शुल्क 40 रु. और आजीवन शुल्क 1000 रु. है।
2. एजेंसी के लिए ऐसे व्यक्ति हकदार होंगे जो कम से कम 10 ग्राहकों को दर्ज करते हों।
3. एजेंटों को 25 प्रतिशत कमीशन दिया जाएगा।
4. ग्राहकों को दर्ज करने के बाद कमीशन काटकर बाकी रकम अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड, केराभवन, कोची - 682 011 के पते पर मनी आर्डर द्वारा भेजें। मनी आर्डर का कमीशन एजेंट को चुकाना चाहिए।
5. रकम के साथ साथ ग्राहकों के नाम व पता भी स्पष्ट रूप से लिखकर भेजें। रकम प्राप्त होते ही पत्रिका प्रत्येक ग्राहक को डाक द्वारा भेजी जाएगी।
6. हमारे रजिस्टर में दर्ज ग्राहकों के नाम व पता एवं पत्रिका भेजने की तारीख से एजेंट को अवगत कराया जाएगा।
7. अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड, केरा भवन, कोची - 11 के पते पर संपर्क करें तो एजेंसी का आवेदन पत्र मिल जाएगा।

प्रबीउ फार्म, वेगिवाड़ा

बिलीच दान बाड़ा
प्रभारी सहायक निदेशक, प्रबीउ फार्म, वेगिवाड़ा

आँध्र प्रदेश के पश्चिम गोदावरी जिले के पेदावेगि मंडल में वेगिवाड़ा गाँव में 71.80 हेक्टर में नारियल विकास बोर्ड का एक प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म स्थापित किया गया है। इस फार्म का मुख्य लक्ष्य गुणवत्तायुक्त रोपण सामग्रियों का उत्पादन है। फार्म में नारियल किसानों को नारियल खेती और प्रक्रमण की अद्यतन प्रौद्योगिकी की सूचना निदर्शन द्वारा प्रदान किया जाता है।

प्रबीउ फार्म, वेगिवाड़ा में लगभग 25 हेक्टर क्षेत्र में नारियल और अन्य अंतरा फसलों की खेती की गई है। बाग की सिंचाई के लिए 7 बोर वेल हैं। फार्म में 2359 लंबी प्रजाति के पेड़ हैं जिनमें से 2048 फलदार हैं। 1632 बौने पेड़ हैं जिसमें से 1237 पेड़ फलदार हैं। आँवला, काली मिर्च, कोको, सहजन, सीताफल,काजू तथा अमरूद की अंतरा खेती फार्म में की जाती है।

नारियल बीजपौधों की बिक्री आँध्र प्रदेश में ही नहीं बल्कि ओड़िशा, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, महाराष्ट्र और अन्य राज्यों को सीधे या राज्य सरकारों के ज़रिए की जाती हैं। वर्ष 2014-15 के दौरान 3285 पेड़ों से कुल 3,16,974 नारियल तोड़े गए। अपेक्षित बीजफलों को फार्म में रखकर बाकी की बिक्री निविदा-सह निलामी द्वारा की गई।

आँध्र प्रदेश के पूर्व गोदावरी के अंबाजीपेटा और तेलंगाना के खम्मम जिले के अश्वरावपेटे में बागवानी अनुसंधान केंद्र होने के बावजूद इस क्षेत्र में नारियल रोपण सामग्रियों का मुख्य स्रोत प्रबीउ फार्म वेगिवाड़ा है। यहाँ मातृवृक्षों, बीजफलों तथा

बीजपौधों का चयन ही सावधानी से किया जाता है। अधिक संख्या में बीजफल अंकुरित हो जाना सुनिश्चित करने के लिए पूर्ण रूप से पके, मध्यम आकार के पानी भरा नारियल को बीजफल के रूप में चुना जाता है। फार्म में नारियल पेड़ों के बीच में नारियल नर्सरी भी स्थापित की गई है। यह फार्म के लिए आय का अन्य स्रोत है।

वर्ष 2014-15 में कुल 3,16,974 नारियल की तुड़ाई की गई। लंबी किस्म

किस्म	वर्तमान सं	फलदार पेड़	2014-15 में तोड़े गए फल
पू.त.लं	614	559	60293
गंगाबोडम	554	402	31290
चा ना बौ	290	240	30652
चा ह बौ	258	177	19001
म.पी.बौ	374	316	20360
प.त.लं	858	828	93986
ति. लं	379	368	34657
बेनोलिम लं	233	181	17869
अंडमान साधारण/ विदेशी	263	214	6945
संकरित फल			1921

से 2,13,750 फल, बौनी किस्म से 1,01,303 फल तथा डी X टी किस्म से 1,921 फल प्राप्त हुए। किसानों को क्षेत्र विस्तार योजना के अधीन 1,75,406 नारियल बीजपौधों का वितरण किया गया तथा पूर्व एवं पश्चिम गोदावरी जिलों के 517.57 हेक्टर क्षेत्र में लगाया गया। पाँच जैव खाद इकाइयों से 35.50 टन जैव खाद भी उत्पादित की गई।

फार्म में बौनी किस्म के नारियल पौधों के उत्पादन और वितरण दोनों पर ज़ोर देने की योजना बनाई गई है। वर्ष 2015-16 में विपुंसीकरण, परागण, बैगिंग आदि संकरण कार्यों पर ज़ोर दिया जाएगा। इस वित्तीय वर्ष में 2.5 लाख बौने बीजपौधों के उत्पादन का लक्ष्य बनाया है। तमिलनाडु और कर्नाटक राज्यों के अनुमोदित बीजबागों से बौने बीजपौधों का प्रापण किया जाएगा। गुणवत्तायुक्त बीजपौधों के उत्पादन के अलावा फार्म के उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने पर भी ज़ोर दिया जाएगा।

प्रबीउ फार्म, ओड़िशा

ई. अरावष़ी
उप निदेशक, नाविबो, राज्य केंद्र, पित्तापल्ली, ओड़िशा

"जो नारियल पेड़ लगाता है वह अपने लिए खान-पान, बर्तन, परिधान और मकान का बंदोबस्त करता है और अपने बच्चों के लिए विरासत छोड़ता है"

-दक्षिण समुंदरी कहावत

बीजपौधों की गुणवत्ता की परिभाषा "रोपने के लिए सर्वोत्तम" है। बहुवर्षी फसल होने की वजह से नारियल के बढ़वार एवं पैदावार का मूल्यांकन कई साल बाद ही किया जा सकता है। नारियल का अच्छा बढ़वार और पैदावार के लिए गुणवत्तायुक्त नारियल पौधे अनिवार्य है।

देश में नारियल बीजपौधों की कुल आवश्यकता वर्ष में 100 लाख पौधे हैं। फिरभी देश में मात्र 35 लाख नारियल बीजपौध ही उत्पादित किए जाते हैं। हर वर्ष लगभग 65 लाख बीजपौधों की कमी होती है।

नारियल विकास बोर्ड गुणवत्तायुक्त बीजपौधों की पूर्ति के लिए नौ प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्मों में गुणवत्तायुक्त बीजपौधों का उत्पादन करता है। नौ प्रबीउ फार्मों में एक फार्म ओड़िशा के खुर्दा जिले में स्थित है। 100 एकड़ के फार्म में सात लंबी, छह बौनी, बौनी X लंबी संकर और लंबी X बौनी संकर किस्मों के 3898 नारियल पेड़ हैं। नारियल की वैज्ञानिक खेती प्रौद्योगिकी के निदर्शन के अलावा प्रबीउ फार्म में वैज्ञानिक तरीके से अच्छी गुणवत्तायुक्त नारियल बीजपौधों का उत्पादन किया जाता है।

प्रबीउ फार्म में बीजफल तथा बीजपौध उत्पादित करने के तरीके

1. अच्छे मातृवृक्षों का चयन

प्रबीउ फार्म, ओड़िशा के लिए मातृवृक्षों का चयन ओड़िशा के मुख्य नारियल उत्पादन इलाका पुरी या बोर्ड के फार्मों से किया जाता है। चयन के मानदंड निम्नलिखित हैं:

1. नियमित रूप से वर्ष में कम से कम 80 फल देने वाले पेड़
2. 20 वर्ष या उससे ऊपर की आयु (पूर्ण फलनक्षम होने के 5 साल बाद)
3. पेड़ पर छोटे, मज़बूत पर्णवृंत के साथ और चौड़े पर्णाधार द्वारा तने से मज़बूती से जुड़े 30 से अधिक पूर्ण रूप से खुले पत्ते होने चाहिए ।
4. मज़बूत गुच्छा डंठल वाले कम से कम 12 फलगुच्छे भी होने चाहिए।
5. मध्यम आकार तथा अंडाकार के फल
6. छिलका निकालने के बाद फल का कम से कम 600 ग्राम वज़न
7. प्रति नारियल से औसतन 150 ग्राम खोपड़े की प्राप्ति

क) लंबे, दुर्बल और लटकते पुष्पक्रम वाले ख) बड़ी संख्या में लंबे, सिकुड़े,

छोटे आकार के या बंध्याफल उगनेवाले, अपक्व फल अधिक झड़नेवाले और प्रतिकूल परिस्थितियों में पलने वाले पेड़ों को चुना नहीं जाता है।

2. बीजफलों का संग्रहण और भंडारण

चुने गए मातृवृक्षों से 11 महीने के ऊपर की आयु के परिपक्व फल दिसंबर से मई की अवधि के दौरान एकत्रित किए जाते हैं। अगर पेड़ ऊँचे हैं या ज़मीन कठोर है तो रस्सी बाँधकर नारियल गुच्छे नीचे उतारे जाते हैं परिपक्व फलों को एकत्रित करने के बाद, अविकसित या अन्य अवाँछित गुणों वाले फलों को निकाले जाते हैं। तोड़े गए बीजफलों को एक शेड की छाए में रेत की आठ सेंटीमीटर मोटी परत लगाकर 60 दिनों तक सीधी स्थिति में अंदर का पानी बरकरार रहने के लिए मिट्टी से ढककर रखा जाता है। ऐसे एक के ऊपर एक करके बीजफलों को पाँच परतों में रखा जाता है। रेतीली मिट्टी और अपेक्षित छाया हैं तो बाग में भी फलों का भंडारण किया जा सकता है। छिलका पूरी तरह सूखने के बाद फलों की बुआई नर्सरी में की जाती है।

3.नारियल नर्सरी की तैयारी और बीजफलों की बुआई

फार्म में नारियल बाग के अंतराजगहों में नर्सरी बनाई जाती है। 1.25 मीटर ऊँची और 4 मीटर लंबी क्यारियों में नर्सरी तैयार की जाती है। नर्सरी में बीजफलों की बुआई दक्षिण पश्चिम मानसून के बाद मई-जून के दौरान किया जाता है। क्यारियों को तैयार करके 25-30 सेंटीमीटर गहराई के गड्ढ़ों में बीजफलों को रोपकर मिट्टी से ढक दिया जाता है जैसा कि छिलका मिट्टी की परत से ठीक ऊपर दिखाई पड़े। प्रत्येक क्यारी के चार पाँच कतारों में 30 सेंटीमीटर (कतारों के बीच) x 30 सेंटीमीटर (बीजफलों के बीच) दूरी पर बीजफल बोए जाते हैं। बीजफलों को पड़ी हुई स्थिति में बोए जाते हैं क्योंकि खड़ी हुई स्थिति में बुआई की तुलना में इसमें अंकुरण की दर अधिक और उसके बाद बढ़वार तेज़ होता है। बुआई के पहले क्यारियों को 0.05 % क्लोरपैरिफोस से शराबोर किया जाता है। कलिका विगलन रोग प्रकोप पाया जाता है तो 1% बोर्डो मिश्रण से क्यारियों को शराबोर किया जाता है। बीजफलों को बोने के बाद पलेवा करके दो दिनों के अंतराल पर सिंचाई की जाती है।

4. बीजपौधों का चयन

नर्सरी में बीजपौधों का चयन मातृवृक्ष तथा बीजफलों के चयन सा ही महत्वपूर्ण है। बहुवर्षी फसल होने की वजह से उच्च उपज प्राप्त करने के लिए अच्छे बीजपौधों का चयन महत्वपूर्ण मानदंड है। मात्र नर्सरी में बीजपौधों का सही चयन उपज में 10 प्रतिशत सुधार सुनिश्चित करता है। बोए गए बीजफल छः से आठ हफ्तों में अंकुरित होते हैं और यह छः महीने तक चलता है। बीजफल जो बुआई के छः महीने के बाद भी अंकुरित नहीं होते हैं और जिनके अंकुर मृत होते हैं को निकाले जाते हैं तथा मात्र गुणवत्तायुक्त बीजपौधे (9-12 महीने की आयु) जिनमें निम्न गुण हैं को चयन समिति द्वारा चुना जाता है।

1. शीघ्र अंकुरण, तेज़ बढ़ाव तथा बीजपौधे की ओज
2. 10-12 महीने के बीजपौधों को छः से आठ पत्ते होना चाहिए।
3. गर्दन का घेरा 10-12 सेंटीमीटर है।
4. पत्तों का शीघ्र फूटना

फार्म में बोए गए बीजफलों में से 50-65 प्रतिशत अंकुरित होते हैं। एक महीने के बाद फावड़े से बीजपौधों को उठाकर जड़ों को मिट्टी से अलग करके निकाला जाता है। निकाले गए बीजपौधों को धूप से बचाकर छाँव तले रखा जाता है। नर्सरी से निकालने के बाद बीजफलों को तुरंत बोया जाता है।

चयन समिति उत्पादित बीजपौधे का प्रमाणन करती है और किसानों को सरकार द्वारा अनुमोदित दर पर बिक्री की जाती है।

प्रबीउ फार्म, ओड़िशा में उत्पादित प्रमाणित बीजपौधे

वर्ष 2008-2009 से 2013-14 तक ओड़िशा के किसानों को पाँच लाख गुणवत्तायुक्त बीजपौधों का वितरण किया गया।

वर्ष	बोए गए फलों की संख्या	प्रमाणित बीजपौधों की संख्या	अंकुरण प्रतिशत	किसानों को बेचे गए गुणवत्तायुक्त बीजपौधे	किस्में	बीजफलों को कहाँ से प्राप्त किया गया
2008-09	22190	8894	49.72	लंबा -797 बौना-4807 संकर-3290 कुल-8894	सीओडी, एमवाईडी एमओडी,एमजीडी सीजीडी,जीबी डब्ल्यूसीटी, विदेशी व संकर	सीपीसीआरआई, किटु, प्रबीउ फार्म, मंड्या, प्रबीउ फार्म,असम
2009-10	35580	14235	45.54	लंबा-282 बौना-13953 कुल-14235	सीओडी, जीबी. सीजीडी, एमवाईडी एमओडी,एमजीडी व टीटी	प्रबीउ फार्म,मंड्या, सीपीसीआरआई, किटु, मुंडेरी सरकारी फार्म, केरल
2010-11	32448	17083	61.63	लंबा-4346 बौना-11885 संकर - 852 कुल-17083	सीओडी, एमवाईडी एमओडी, सीजीडी जीबी,एजी,डब्ल्यूसीटी, टीटी, विदेशी व संकर	प्रबीउ फार्म,मंड्या
2011-12	370235	209174	56.49	लंबा-188067 कुल-188067	एसकेएल लंबा,टीटी	पुरी जिला, ओड़िशा तथा कर्नाटक के किसानों के बाग
2012-13	405707	237681	58.58	लंबा -234172 बौना-3509 कुल- 237681	ईसीटी, डब्ल्यूसीटी टीटी,एसकेएल लंबा,एमवाईडी,सीओडी, सीजीडी,जीबी	प्रबीउ फार्म वेगिवाड़ा, ओड़िशा और आँध्रप्रदेश के किसानों के बाग
2013-14	104040	68765	66.09	लंबा-65025 कुल- 65025	एसकेएल लंबा	पुरी जिला, ओड़िशा के किसानों के बाग
कुल	**970200**	**555832**		**530985**		

अधिक संख्या में गौण बीजपौधे उत्पादित करने के बजाय कम संख्या में गुणवत्तायुक्त नारियल बीजपौधे उत्पादित करना बेहत्तर है। पौधे अगर गुणवत्तायुक्त नहीं हैं तो नर्सरी से बाग तक पौधों का परिवहन, रोपाई के लिए ज़मीन की तैयारी, रोपाई और अनुरक्षण आदि किसानों के सभी प्रयास विफल हो जाते हैं। गौण गुणवत्ता के बीजपौध अच्छी जगह पर रोपने पर भी गौण पेड़ ही बनाते हैं। बाग में गौण गुणवत्ता के पेड़ जगह और संसाधनों को बेकार कर देते हैं और बाग से प्राप्त उपज में कमी हो जाती है। इसलिए उच्च उत्पादन एवं उत्पादकता के लिए गुणवत्तायुक्त रोपण सामग्रियों का उपयोग अनिवार्य है।

प्रबीउ फार्म, नेर्यमंगलम

जयश्री ए.
फार्म प्रबंधक, प्रबीउ फार्म, नेर्यमंगलम

बढ़िया रोपण सामग्रियों के प्रयोग से अत्यंत परिवर्तनीय परिस्थितियों में भी नारियल ताड़ को 60 या उससे अधिक सालों तक उत्पादनक्षम और किफायतमंद बनाए रखने का शुभारंभ किया जा सकता है। खेतों में रोपण करने से पहले बढ़िया किस्म की रोपण सामग्रियों का चयन करने से प्रति इकाई समय में प्रति इकाई क्षेत्र से उच्च उत्पादकता सुनिश्चित होती है। नारियल की खेती में रोपण सामग्रियों का चयन सबसे महत्वपूर्ण होने के कारण नारियल विकास बोर्ड ने सभी कृषिजोपजातियों के बढ़िया नारियल पौधों और विभिन्न कृषि जलवायु परिस्थितियों के लिए उचित विभिन्न किस्मों से संकर किस्मों के उत्पादन के लिए देश के प्रमुख नारियल उत्पादक क्षेत्रों में नौ फार्म स्थापित किए हैं। किसी भी नारियल बागान की सफलता गुणवत्तापूर्ण बढ़िया किस्म की रोपण सामग्रियों के उत्पादन से शुरू होती है।

केरल में बोर्ड का एकमात्र प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म नेर्यमंगलम में स्थित है जो वर्ष 1991 के दौरान स्थापित हुआ था। प्रारंभिक वर्षों में फार्म के विकास और प्रौद्योगिकियों के निदर्शन पर ज़ोर दिया गया था जो बाद में केरल में बढ़िया नारियल पौदों के उत्पादन और आपूर्ति का प्रमुख स्रोत बन गया। फार्म में विभिन्न कृषिजोपजातियों के 2017 ताड़ हैं जिनमें से 1385 पेड़ फलन स्थिति में है। नारियल पेड़ों के साथ अंतराफसलों के रूप में कोको, काली मिर्च, जायफल, काजू, सुपारी, हल्दी, केला, रंबूटान और मैंगोस्टीन भी लगाए गए हैं। फार्म के अवशिष्टों से 40 मेट्रिक टन जैव खाद के नियमित उत्पादन के लिए तीन वर्मी कम्पोस्ट इकाइयाँ भी हैं।

गत कुछ सालों से जलवायु परिवर्तन और पेड़ को कमज़ोर बनाने वाले रोगों के कारण पैदावार में बड़ी कमी आई। उत्पाद के भाव की तुलना में नारियल की उत्पादन लागत बढ़ जाने की वजह से बीजपौधों की मांग में कमी आई और बीजपौधों का ढेर लग गया। किसान अन्य फसलों की खेती में दिलचस्पी दिखाने लगे। बीजपौधों का ढेर लगने के कारण भूमि की कमी अन्य समस्या थी। इसप्रकार की कई संकटों को पार करके फार्म अब गुणवत्तापूर्ण नारियल कृषिजोपजातियों और संकर किस्मों का भरोसेमंद स्रोत बन गया है। आजकल नारियल के लिए अच्छा दाम मिल रहा है जो किसानों को पुनर्विचार करने पर मजबूर किया है और वे नारियल खेती की ओर वापस आ रहे हैं। इस वजह से नारियल पौधों की मांग काफी बढ़ गई है। हाल के वर्षों में किसान बौनी और डी X टी किस्मों को चुनने में ज्यादा दिलचस्पी दिखा रहे हैं। डाब और नीरा टैप्पिंग की बढ़ती मांग के मद्देनज़र फार्म में बौनी किस्मों के पौधों के उत्पादन के लिए ज़ोर दिया जा रहा है। मांग की आपूर्ति के लिए फार्म के ही नहीं, किसानों

फार्म में उपलब्ध नारियल किस्में

लम्बी	पश्चिम तटीय लम्बी, पूर्व तटीय लम्बी, तिप्तूर लम्बी, अरसिकेरे लम्बी, लक्षद्वीप ऑर्डिनरी, लक्षद्वीप मैक्रो
विदेशी	फिलिपीन्स ऑर्डिनरी, जावा, फिजी, जमैका, बनावली ऑर्डिनरी, गुवाम, बीएसआई, केनिया, स्पाइकलेट, कोचिन चैना, न्यू गिनिया
बौनी	मलयन हरी, मलयन पीली, मलयन नारंगी, चावक्काट हरी, चावक्काट नारंगी
संकर	चन्द्र संकरा, कल्पसंकरा, कल्पसमृद्धि, म.ना.बौ. X प.त.लं., म.ह.बौ. X प.त.लं.

के खेतों के पहचाने गए तथा चिह्नित ताड़ों से भी बौनी किस्म के बीजफलों को एकत्रित किया जाता है।

फार्म में संकरण के लिए लगातार फल देनेवाले अच्छी बढ़वार के रोग सहनशील किस्मों के 350 मातृवृक्षों को चुना गया है। फार्म की संकरण इकाई के प्रशिक्षित कर्मचारियों के द्वारा अनुशंसित प्रक्रियाओं और नर्सरी तकनीक के कड़े मानदंड़ों का अनुपालन करने के फलस्वरूप उच्च पैदावार देने योग्य डी X टी पौधों का उत्पादन संभव हुआ, जिसके लिए केरल और तमिलनाडु में बड़ी मांग है। वर्ष 2014-15 के दौरान विभिन्न किस्मों के लगभग बीस हज़ार संकर किस्मों को उत्पादित करके बिक्री की गई।

इस वर्ष के दौरान नेर्यमंगलम फार्म में उत्पादित 1.918 लाख पौदों में से 1.43 लाख पौदों को केरल के नौ जिलों के नारियल उत्पादक समितियों और फेडरेशनों के सदस्यों को वितरित किया गया। पुनरुज्जीवन और पुनर्रोपण योजना के तहत पुनर्रोपण के लिए केवल बौनी किस्मों को ही बढ़ावा दिया गया। वर्ष 2015-16 के दौरान इस फार्म से तीन लाख बौने पौदों को उत्पादित और वितरित करने का प्रस्ताव है। डी X टी संकर किस्मों की मांग की आपूर्ति के लिए संकरण हेतु बौने ताड़ों की उपलब्धता बढ़ानी चाहिए और इसके लिए निजी क्षेत्र में व्यापक रूप से बौने ताड़ों का उत्पादन करना होगा क्योंकि सरकारी क्षेत्र में सीमित मात्रा में ही बौने पेड़ उपलब्ध है। आवश्यकता को पूरा करने के लिए किसान समूहों को सिफारिश की गई गुणवत्ता मानदंड़ों का पालन करते हुए विकेन्द्रीकृत नर्सरियों की स्थापना करनी चाहिए। बोर्ड की वित्तीय सहायता से अपनी नर्सरियाँ शुरू करने हेतु किसानों और किसान समूहों को सुसज्जित करने के लिए फार्म में संकरण और नर्सरी प्रबंधन के लिए प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

पौद उत्पादन के लिए अपनाई गई खेती पद्धतियाँ

नर्सरी प्रबंधन की खेती पद्धतियों के प्रमुख चरण हैं बीज बाग का चयन, मातृ ताड़ों का चयन, बीजफलों का चयन, बीजफलों का भंडारण तथा नर्सरी प्रबंधन। अच्छी तरह रखरखाव की जा रही नर्सरियों में पलने वाले नारियल पौधों से एकसमान पौदों का सफल चयन संभव है। नारियल जैसी दीर्घकालीन फसल के मामले में उच्च पैदावार देने वाले नारियल पेड़ से बीज सामग्रियों का चयन अत्यंत अनिवार्य है।

नारियल की रोपण सामग्रियों के उत्पादन में मातृ वृक्ष का चयन एक प्रमुख घटक है। चयनित बागों में उच्च अनुपात में अधिक पैदावार देने वाले ताड़ मौजूद होने चाहिए। लेकिन ध्यान रहें कि ये पेड़ घर आंगण, गोशाला, खाद गड्ढ़े के निकट तथा बढ़वार के लिए अनुकूल अन्य परिस्थितियों में पलने वाले नहीं होने चाहिए। बागान कीट प्रकोप से और कीटों के गंभीर आक्रमण के खतरे से मुक्त होना चाहिए। केरल में कोष़िक्कोट का कुट्याटि और तृश्शूर का चावक्काट अच्छी गुणवत्ता की स्थानीय किस्मों के लिए प्रसिद्ध है।

गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियों के उत्पादन के लिए वांछित किस्म की अच्छी गुणवत्ता के मातृ वृक्ष अत्यंत अनिवार्य हैं। नारियल के लिए वाणिज्यिक रूप से व्यवहार्य पौध प्रवर्धन तकनीक उपलब्ध नहीं है इसलिए केवल बीज प्रवर्धन ही संभव है। नियमित रूप से फल देनेवाले पेड़ जिसके पर्णकक्ष से प्रति महीने औसतन एक पत्ता और पुष्पगुच्छ निकलता हो मातृ वृक्ष के रूप में चुन सकते हैं। सामान्य तौर पर बंध्या फल लगने वाले ताड़ों को छोड़ देना चाहिए। मातृ वृक्षों का चयन करते समय समान वृद्धि वाले सीधा एवं मोटा तना

विगत पाँच वर्षों के दौरान उपलब्धियाँ

ब्यौरा	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14	2014-15
पौधों का उत्पादन (संख्या)	16,202	16,088	98,597	1,30,926	1,47,825
पौधों की बिक्री (संख्या)	8,254	24,630	50,755	99,953	1,91,863
पौधों की बिक्री से उत्पन्न राजस्व (रुपए)	4,63,030	11,61,155	23,57,840	56,58,465	94,85,625

और अत्यंत निकट विन्यसित पत्तों के साथ गोलाकार या अर्ध गोलाकार शिखर और 30 से अधिक पूर्ण खुले पत्ते और शूकीछद का निकलना जैसी विशेषताएं ध्यान में लिया जाता है। ज्यादात्तर 25 से 40 वर्ष के मध्यम आयु के पेड़ों को चुना जाता है तथापि 15 वर्ष आयु के पेड़, जो उच्च एवं स्थायी पैदावार देने वाले हों और कीट एवं रोगों से मुक्त हों तो उनका भी चयन किया जाता है। सिंचित परिस्थितियों में प्रति वर्ष प्रति पेड़ 100 से अधिक फल देनेवाले और बारानी परिस्थितियों में प्रति वर्ष प्रति पेड़ 70-80 फल देने वाले मातृ वृक्ष को बीजफल एकत्रित करने के लिए चुना जाता है।

अनुकूल पर्यावरणीय परिस्थितियों में भी लंबे, पतले और झूलते हुए पुष्पगुच्छ डंठलों वाले पेड़ जिन पर लंबे, सिकुड़े, छोटे आकार के या बंध्या फल लगते हैं, नियमित रूप से पैदावार नहीं देते हैं और जिससे बड़ी संख्या में अपक्व फल झड़ते हैं, उनको नहीं चुनना चाहिए। केरल के जड़ मुर्झा रोग प्रकोप वाले इलाकों में, गंभीर रूप से रोगग्रस्त ताड़ों के बीच रोग मुक्त उच्च पैदावार देने वाले पश्चिम तटीय लंबा (डब्ल्यूसीटी), चावक्काट हरा बौना (सीजीडी) और चावक्काट नारंगी बौना (सीओड़ी) वृक्ष पाए जाते हैं। ऐसे वृक्षों को मातृ वृक्ष के रूप में चुना जा सकता है और बड़े पैमाने पर रोपण सामग्री के उत्पादन के लिए इन वृक्षों के कुदरती तौर पर परागित फलों का उपयोग किया जाता है। इन वृक्षों से उत्पादित पौद अधिक पैदावार देने वाले तथा रोग मुक्त होने की उम्मीद है।

अधिकतम अंकुरण और अच्छी गुणवत्ता की पौद मिलने के लिए केरल में बीजफलों की तुड़ाई दिसंबर से मई तक के महीनों के दौरान की जाती है। ठेस पहुँचे फलों और अनियमित आकारवाले फलों को हटाया जाता है। जब सबसे पुराने गुच्छे का कोई एक फल सूखने लगता है तब परिपक्व फलों की तुड़ाई की जाती है। लंबी किस्मों के फल परिपक्व होने में 11-12 महीने लगते हैं जबकि बौनी किस्मों के फल पुष्पक्रम निकलने के बाद 10-11 महीनों में परिपक्व हो जाते हैं। तुड़ाई के चाकू से हल्के से मारने पर या ऊंगली से थपथपाने पर परिपक्व फल से यदि अनुनादी और गूँजित आवाज़ निकलती है तो छिलका सूखा माना जाता है। बीजफल मध्यम आकारवाले, गोल या दीर्घाकार वाले होने चाहिए। बीजफलों को टूटने से बचाने के लिए गुच्छों को एक रस्सी से बाँधकर नीचे ज़मीन पर लाया जाता है।

बढ़िया बीजपौध प्राप्त करने के लिए बीजफलों को एक महीने खुली हवा में रखे जाते हैं और फिर रेत से ढक दिए जाते हैं। लंबी किस्म के बीजफल सामान्यतः तुड़ाई के बाद दो महीने तक भंडारित किया जाता है और बौनी किस्म के बीजफलों को 15 दिनों के भीतर बोया जाता है। भंडारण के लिए बीजफलों को आठ सेंटीमीटर मोटाई की रेतीय परत पर डंठल वाला भाग ऊपर की ओर करके रेत से ढका जाता है ताकि फल के अंदर का पानी सूख न जाए। एक के ऊपर एक करके फलों की पाँच परत तक तैयार की जा सकती है। फलों को छायेदार जगह पर ढेर बनाकर नारियल पत्तों से ढककर भी भंडारित किया जाता है। नारियल नर्सरी के लिए अच्छी जलनिकास वाली भुरभुरी रेतीली दुमट/दुमट मिट्टी वाले क्षेत्र चुनना चाहिए ताकि नर्सरी से पौद आसानी से निकाला जा सके।

फार्म में जगह की कमी की वजह से नारियल बागान के बीच की जगहों पर नर्सरी तैयार की गई है। सपाट जगह पर या नर्सरी के लिए उठाई गई क्यारियों पर 1000 फल बोने के लिए 120 वर्ग मीटर क्षेत्र की आवश्यकता होती है जहाँ 1000 पॉली बैग नारियल पौधों के अनुरक्षण के लिए 200 वर्ग मीटर क्षेत्र की आवश्यकता होती है। बारिश के मौसम की शुरुआत

में बीजफल बोने से सिंचाई की आवृत्ति कम की जा सकती है जो अच्छे अंकुरण के लिए ज़रूरी है। साधारणतया बीजफलों की तुड़ाई पश्चिम तटीय क्षेत्रों में फरवरी-मई महीने के दौरान करके जून में रोपण किया जाता है जबकि पूर्व तटीय क्षेत्रों में अक्तूबर-नवंबर महीने में बीजफल बोया जाता है। फार्म में अनुकूल जलवायु परिस्थितियों में अच्छी सिंचाई सुविधा उपलब्ध होने पर वर्षभर बीजफल बोया जाता है। नर्सरी क्यारियाँ 1-1.5 मी. चौड़ाई और सुविधाजनक लंबाई में क्यारियों के बीच 75 सें.मी. का अंतराल छोड़कर तैयार की जाती हैं। जहाँ जल निकासी की अच्छी व्यवस्था नहीं हैं वहाँ नर्सरी क्यारियाँ 10-12 सें.मी. ऊँचाई पर तैयार की जाती हैं। दीमक के प्रकोप वाले क्षेत्रों में बीजफल बोने के पहले क्यारियों को 0.05% क्लोरपैरिफोस से शराबोर किया जाता है। पौदों में कलिका विगलन रोकने के लिए कलिका विगलन प्रभावित क्षेत्रों में 1% बोर्डो मिश्रण से शराबोर किया जाता है।

रोपण से पहले बीजफलों की जाँच की जाती है और पानी रहित फलों एवं सड़ी गरीवाले फलों को हटा दिया जाता है। क्यारियों में 30x30 सें.मी की दूरी पर खड़ी या पड़ी स्थिति में 20-25 सें.मी. गहराई वाली खाई में बीजफलों को बोया जाता है। फलों का रोपण या तो पड़ी स्थिति में चौड़ा भाग ऊपर की ओर करके या खड़ी स्थिति में डंठल का अग्र ऊपर की ओर करके बोया जाता है। पड़ी स्थिति में रोपित फलों से उत्पन्न पौधों की तुलना में खड़ी स्थिति में रोपित फलों से उत्पन्न पौधे सूखे से अधिक पीड़ित और कम पुष्ट होते हैं। इस प्रणाली से प्राप्त पौधे प्रतिरोपाई के समय क्षतिग्रस्त होने की संभावना बहुत कम है क्योंकि अंकुरण और फल के बीच का जोड़ छिलके से बेहतर तरीके से संरक्षित होता है। पड़ी स्थिति में रोपण करने पर अंकुरण दर और पौद का बढ़वार खड़ी स्थिति से उत्पादित पौधों की तुलना में अधिक तेज़ होता है। फलों को रेत से ढका जाता है जिससे कि छिलके का ऊपरी भाग ही

प्रकट होता है और इसलिए फल से निकलते पौदों के गर्दनी भाग का रोग संक्रमण रोकना संभव हो जाता है। फार्म की प्रत्येक क्यारी की प्रति पंक्ति में 50 नारियल के हिसाब से पाँच पंक्तियों में या ढालू भू परिस्थिति के कारण बीज क्यारी की चौड़ाई के अनुसार नारियल का रोपण किया जाता है।

फार्म की परिस्थितियों में स्प्रिंक्लर सिंचाई प्रणाली अपनायी गयी है। नारियल नर्सरियों की सिंचाई के लिए मैक्रो जेट स्प्रिंक्लर या छोटी हॉस सिंचाई भी काफी उपयुक्त है। बीज रोपण के बाद फलों को पूरी तरह भीगने तक अच्छी तरह से सिंचित किया जाता है। मिट्टी की नमी सुनिश्चित करने के लिए नियमित रूप से बीज क्यारियों की सिंचाई की जाती है। गर्मी के महीनों में क्यारियों को एकान्तर दिनों में सिंचित किया जाता है। मानसून बारिश की समाप्ति के बाद क्यारियों को नारियल पत्ते या भूसे से पलेवा किया जाता है। यह नमी बरकरार रखने और खरपतवार की वृद्धि की जांच करने के लिए है। सामयिक निराई के द्वारा नर्सरी क्यारियों को खरपतवारों से मुक्त रखा जाता है। नर्सरी को छाया प्रदान करने के लिए क्यारियों के बगल में ग्लिरिसिडिया, सेसबेनिया या ल्यूसिएना जैसे छाएदार पौधों को उगाया जाता है।

फावड़े से उठाकर और जड़ों को काटकर पौद को नर्सरी से निकाला जाता है। पौद को मिट्टी से निकालते वक्त पत्ते या तने को खींचकर उठाना उचित नहीं है। पौदों को कसकर पैक करके ले जाना चाहिए। दूरस्थ क्षेत्रों में परिवहन करने के लिए पौदों को नारियल पत्ते से कवर करके कयर गूदा या अन्य नमी बनाई रखनेवाली सामग्री से ध्यानपूर्वक पैक किया जाता है। पॉली बैग पौदों को ज्यों का त्यों ले जाया जाता है और जड़ों का विकास सुगम बनाने के लिए पॉली बैग के निचले भाग को काटकर निकाला जाता है और खेत में सीधा रोपण किया जाता है। नर्सरी से निकालने के बाद जितनी जल्दी हो सके पौदों का रोपण करना चाहिए। पौदों को चार हफ्ते तक छायेदार परिस्थिति में ध्यानपूर्वक भंडारित किया जा सकता है और नर्सरी से निकालने के बाद नमी प्रदान करने के लिए पौदों की सिंचाई करती रहनी चाहिए।

राष्ट्रीय पुरस्कार 2014 के लिए आवेदन आमंत्रित

नारियल खेती, नारियल खेती की नूतन प्रणालियों, उत्पाद विकास, उत्पाद सुधार, गुणवत्ता सुधार, उत्पाद विविधीकरण और विपणन, निर्यात और विस्तार गतिविधियों की उत्कृष्ट उपलब्धियों को बढ़ावा देने और उन्हें सम्मानित करने के लिए निम्नलिखित श्रेणियों के अंतर्गत राष्ट्रीय पुरस्कार 2014 के लिए आवेदन/ नामांकन आमंत्रित किया गया है। सर्वोत्तम किसान पुरस्कार श्रेणी के अंतर्गत सर्वोत्तम नारियल किसान-राष्ट्रीय स्तर पर, सर्वोत्तम नारियल किसान-दक्षिण एवं पश्चिम क्षेत्र (केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु, पुदुच्चेरी, आँध्र प्रदेश, गोवा, गुजरात, महाराष्ट्र, आंडमान निकोबार द्वीप समूह तथा लक्षद्वीप) और सर्वोत्तम नारियल किसान-पूर्व एवं उत्तर पूर्वी क्षेत्र (सभी अन्य राज्य जो दक्षिण एवं पश्चिम क्षेत्र के अंदर नहीं आते हैं) के लिए अवार्ड दिया जाएगा। सर्वोत्तम नारियल किसान-दक्षिण एवं पश्चिम क्षेत्र और पूर्व एवं उत्तर पूर्वी क्षेत्र के अंतर्गत दो अवार्ड दिए जाएंगे: बड़े किसान-जिन्हें एक हेक्टर से अधिक नारियल कृषि है और छोटे किसान-जिन्हें एक हेक्टर तक नारियल कृषि है।

सर्वोत्तम नारियल प्रक्रमणकर्ता के अंतर्गत परंपरागत नारियल उत्पादों के लिए और गैर परंपरागत नारियल उत्पादों के लिए दो पुरस्कार हैं। सर्वोत्तम शोधकर्ता श्रेणी में भी दो पुरस्कार हैं, नारियल के उत्पाद विकास/ नए प्रयोग और उपयोग/ नए पोषणिक एवं जीवरसायनिक अनुसंधान-निष्कर्ष और मशीनरी/उपस्कर का विकास आदि श्रेणी में। नारियल आधारित हस्तशिल्पों के निर्माण करनेवाले सर्वोत्तम कारीगर पुरस्कार में बड़े एवं छोटे पैमाने की दो श्रेणी में पुरस्कार दिए जाएंगे। नारियल उत्पादों के सर्वोत्तम निर्यातक के लिए प्रति वर्ष 10 करोड़ रुपए या उससे अधिक एनुअल टर्न ऑवर और प्रति वर्ष 10 करोड़ से कम एनुअल टर्न ऑवर करने वाले निर्यातक की दो श्रेणी में पुरस्कार दिए जाएंगे। सर्वोत्तम नारियल ताड़ारोहक की श्रेणी में तीन अलग पुरस्कार होंगे-परंपरागत तरीके से चढ़ने वाला ताड़ारोहक, बोर्ड के एफओसीटी कार्यक्रम के अधीन आनेवाला ताड़ारोहक और सर्वोत्तम नीरा तकनीशियन(दक्षिणी राज्य)। पुरस्कार की अन्य श्रेणियाँ हैं: नारियल विकास के क्षेत्र में सर्वोत्तम विस्तार कार्यकर्ता, सर्वोत्तम नारियल उत्पादक फेडरेशन और महिलाओं द्वारा संचालित सर्वोत्तम नारियल प्रसंस्करण इकाई। पुरस्कार विजेताओं को ट्रॉफी, प्रमाणपत्र और नकद पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा।

राष्ट्रीय पुरस्कार संबंधी विस्तृत जानकारी और आवेदन फॉर्म बोर्ड के कार्यालय से नि:शुल्क उपलब्ध है या बोर्ड के वेबसाइट (www.coconutboard.gov.in) से डाउनलोड किया जा सकता है। नामित व्यक्ति/ आवेदक को भारतीय नागरिक तथा भारतवासी होना चाहिए। अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड द्वारा नामांकित विशेषज्ञ समिति पुरस्कार के पात्र को चुनेगी। चयन प्रक्रिया के दौरान चयन समिति द्वारा इकाई/बाग के निरीक्षण के लिए आवश्यक सभी सुविधाएँ नामित व्यक्ति/आवेदक द्वारा दी जाए। योग्य आवेदनों के अभाव में पुरस्कार घोषित न करने का अधिकार अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड पर निहित होगा। संबंधित क्षेत्र में, नामित व्यक्ति/आवेदक के अनुभव एवं निपुणता के समर्थन में अखबारों के कतरन, फोटोग्राफ, वीडियो क्लिप्पिंग, प्रमाण पत्र आदि प्रस्तुत किए जाए। नामित व्यक्ति/आवेदक का पासपोर्ट साइज़ फोटो सहित जीवनवृत्त आवेदन के साथ प्रस्तुत करना है। आवेदक/ नामित व्यक्ति आयकर, बिक्री कर/ मूल्यवर्धित कर आदि के बाकीदार न हो। यदि किसी भी श्रेणी में ऐसी प्रविष्टियाँ प्राप्त हो जो अच्छी प्रतिभा, उद्यमिता तथा नवीनता दर्शानेवाली है और मान्यता एवं प्रोत्साहन देने लायक हैं तो चयन समिति सांत्वना पुरस्कार देने की सिफारिश करेगी। सांत्वना पुरस्कार स्वरूप उचित नकद पुरस्कार और प्रमाणपत्र दिए जायेंगे। सर्वोत्तम नारियल किसान पुरस्कार के लिए राज्य कृषि/बागवानी निदेशक/ किसान उत्पादक संगठन /नाविबो कार्यालयों द्वारा सिफारिश किए गए नामांकन/आवेदन भेज देना चाहिए। सभी पुरस्कारों के लिए आवेदन नारियल विकास बोर्ड, केरा भवन, कोची-682011 को निर्धारित प्रपत्र में भेज दें।

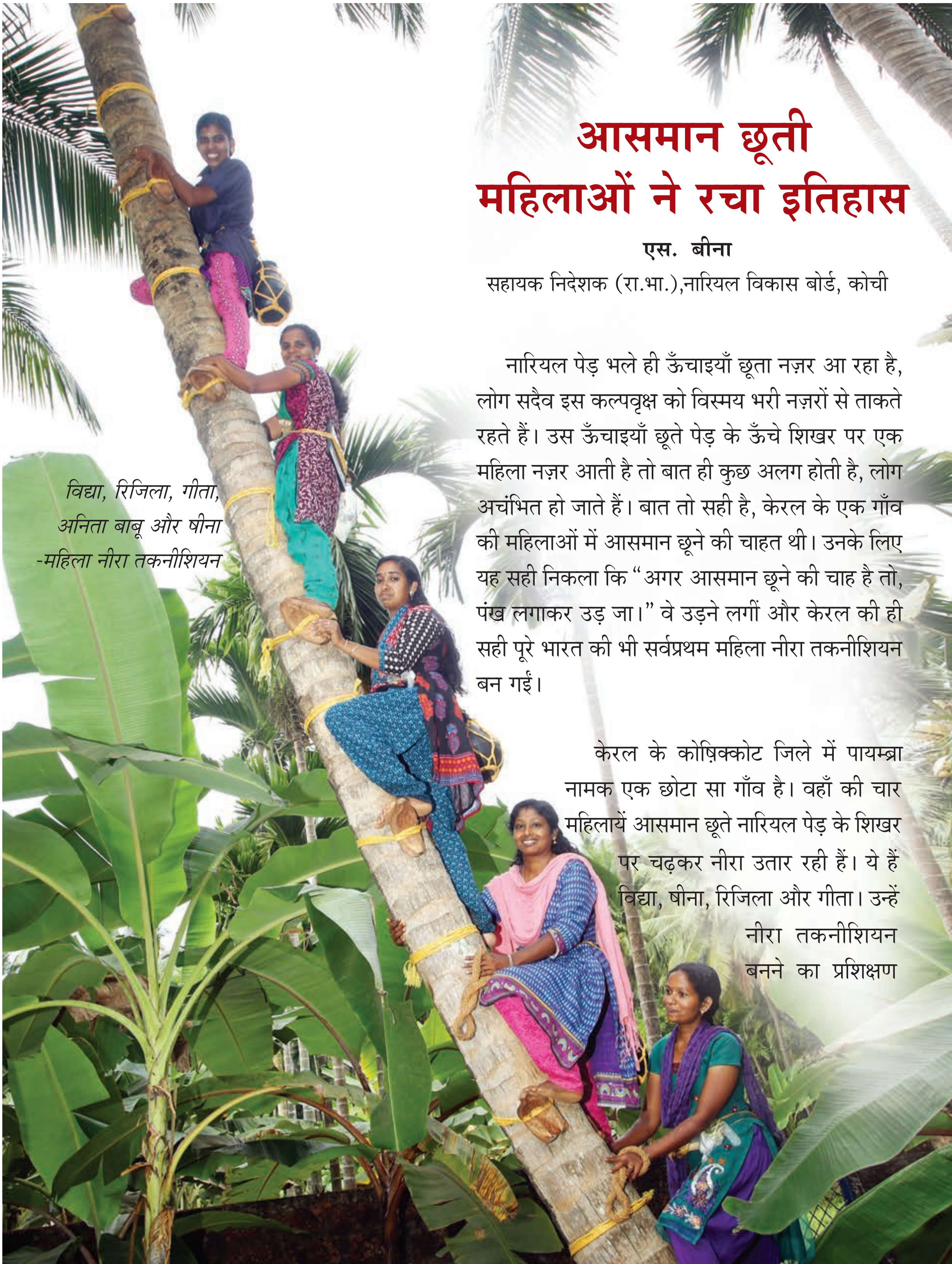

आसमान छूती महिलाओं ने रचा इतिहास

एस. बीना
सहायक निदेशक (रा.भा.),नारियल विकास बोर्ड, कोची

विद्या, रिजिला, गीता, अनिता बाबू और षीना -महिला नीरा तकनीशियन

नारियल पेड़ भले ही ऊँचाइयाँ छूता नज़र आ रहा है, लोग सदैव इस कल्पवृक्ष को विस्मय भरी नज़रों से ताकते रहते हैं। उस ऊँचाइयाँ छूते पेड़ के ऊँचे शिखर पर एक महिला नज़र आती है तो बात ही कुछ अलग होती है, लोग अचंभित हो जाते हैं। बात तो सही है, केरल के एक गाँव की महिलाओं में आसमान छूने की चाहत थी। उनके लिए यह सही निकला कि "अगर आसमान छूने की चाह है तो, पंख लगाकर उड़ जा।" वे उड़ने लगीं और केरल की ही सही पूरे भारत की भी सर्वप्रथम महिला नीरा तकनीशियन बन गईं।

केरल के कोषिक्कोट जिले में पायम्ब्रा नामक एक छोटा सा गाँव है। वहाँ की चार महिलायें आसमान छूते नारियल पेड़ के शिखर पर चढ़कर नीरा उतार रही हैं। ये हैं विद्या, षीना, रिजिला और गीता। उन्हें नीरा तकनीशियन बनने का प्रशिक्षण

दिलाया और एक महिला ने; वही है अनिता बाबू। भारत की सबसे प्रथम महिला नीरा तकनीशियन का श्रेय अनिता को ही जाता है।

नारियल पेड़ के छत्र तले खड़े होकर उन पाँचों ने बताने लगा, अपनी संघर्ष और मेहनत की दास्ताँ जिसने उनके जीवन में सफलता और अपनापन का बोध जगाया। ये पाँचों ने पहले ही अपनी आजीविका चलाने के लिए किसी न किसी काम में लगी हुई थीं। फिर, एक दिन उन्होंने नीरा तकनीशियन प्रशिक्षण के बारे में सुना और प्रशिक्षण पाने के लिए निकल पड़ीं।

नारियल विकास बोर्ड के अधीन पंजीकृत 586 नारियल उत्पादक फेडरेशनों में कोषिक्कोट जिले के पायम्ब्रा फेडरेशन को 2015 जनवरी में नीरा उतारने के लिए लाइसेंस मिला था। लाइसेंस मिलने के बाद फेडरेशन ने नीरा तकनीशियन

विद्या नारियल पेड़ के शिखर पर मटकी में नीरा इकट्ठा करती हुई

पायम्ब्रा नारियल उत्पादक फेडरेशन प्रेसिडेंट पी. अरविंदन:

"महिलायें पुरुषों की अपेक्षा ज्यादा लगन और साफ-सुथरे ढंग से नीरा उतारने का काम कर रही हैं और अपने काम में अत्यंत रुचि दिखाती हैं। अनखुले पुष्पक्रम को छेदने के लिए तैयार बनाने से लेकर नीरा इकट्ठा करने तक हरेक चरण में सफाई का अत्यंत महत्व रखता है। इस पर ये महिला तकनीशियन पूरा ध्यान देती हैं। फेडरेशन के नीरा तकनीशियनों में से सबसे अधिक नीरा एक महिला तकनीशियन ही लाती है । कभी कभी महिलाओं के पेड़ों पर आदमी लोग चढ़कर नीरा उतारते समय नीरा की मात्रा कम होती हुई भी दिखाई पड़ती है।"

प्रशिक्षण में भाग लेने के लिए इच्छुक लोगों से आवेदन आमंत्रित किया। बहुत से पुरुष प्रशिक्षण में भाग लेने आए, किंतु एक भी महिला नहीं आई। अंत में फेडरेशन ने कुटुम्बश्री (देश की सबसे बड़ी स्त्री सशक्तीकरण परियोजना) से संपर्क किया और 20 महिलायें आईं। उनमें से स्वास्थ्य और आयु को दृष्टि में रखकर पाँच महिलाओं को चुन लिया। इन पाँच महिलाओं को प्रशिक्षण देने का कार्य सौंपा गया अनिता बाबू को। अनिता बाबू ने कोषिक्कोट जिले के ही दूसरे नारियल उत्पादक फेडरेशन कोराप्पुष्पा फेडरेशन से प्रशिक्षण प्राप्त किया था। अनिता ने समाचार पत्र में नीरा तकनीशियन प्रशिक्षण का विज्ञापन देखकर आवेदन भेजा था। वह अकेले एक महिला थी प्रशिक्षण पाने के लिए और उसने नवंबर 2014 में प्रशिक्षण पूरा किया। वह नारियल पेड़ से नीरा उतारने में प्रशिक्षण देना ज्यादा पसंद करती है।

पायम्ब्रा में प्रशिक्षण प्राप्त महिलाओं में विद्या, षीना, रिजिला और गीता ने नीरा उतारने के काम को अपनी जीविका चलाने के लिए स्वीकार कर लिया है। यह सच है कि शुरू शुरू में नारियल पेड़ पर चढ़ने को ये डरती थीं। थोडे ही दिनों में सब कुछ आसान हो गए। डर दूर भागा और नारियल पेड़ आया उनके पैर तले।

इन पाँच महिलाओं को अपने काम में परिवारवालों का पूरा साथ मिल रहा है। रिजिला पहले नारियल विकास बोर्ड के फ्रेंड्स ऑफ कोकनट ट्री (एफओसीटी) प्रशिक्षण (मशीन से नारियल पेड़ पर चढ़ने का प्रशिक्षण) प्राप्त कर चुकी थी।

अनिता बाबू अनखुले नारियल पुष्पक्रम छेदती हुई

अब उसके पति भी नीरा तकनीशियन है और दोनों नीरा उतारने का काम कर रहे हैं। एफओसीटी के पास मशीन था पेड़ पर चढ़ने के लिए। लेकिन ये नारियल पेड़ पर नारियल छिलके सीढ़ियों की तरह बाँध कर उसके ज़रिए नीरा उतारने के लिए पेड़ पर चढ़ते हैं। प्रशिक्षण के समय ये नारियल के अनखुले पुष्पगुच्छ के नमूने के रूप में केवडे के तने पर छेद करके सीखती थीं। उसके बाद नारियल के अनखुले पुष्पक्रम को नीचे लाकर सीखने लगा। फिर इन्होंने धीरे-धीरे पेड़ पर चढ़ना सीखा और नारियल पेड़ से दोस्ती बनायी।

अनखुले नारियल पुष्पक्रम की कटी हुई नोक

कोष़िक्कोट जिले की प्रभारी अधिकारी के. मृदुला :

"जैसे कि हम जानते हैं महिलायें किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं हैं और इन पाँच महिलाओं ने इस बात को सच साबित किया। मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि ये महिलायें पुरुष तकनीशियन की तुलना में अधिक नीरा भी निकालती है। इस जिले की प्रभारी होने के नाते यह मेरे लिए बड़े ही गर्व की बात है और मेरी शुभ कामनायें हमेशा इनके साथ है कि ये जीवन की हर ऊँचाइयों को पार करे जिस तरह वे इन ऊँचे नारियल पेड़ों पर आसानी से चढ़ जाती हैं।"

42 दिवसीय प्रशिक्षण के बाद ये पायम्ब्रा फेडरेशन के लिए नीरा उतारने का काम कर रही हैं। ये महिलायें पायम्ब्रा गाँव की पगडंडियों पर अपने पीछे मटकी लगाकर चलती हैं और नारियल के पेड़ों पर आसानी से चढ़कर नीरा उतारती हैं। अब इनमें से हरेक पाँच-पाँच नारियल पेड़ों पर चढ़कर नीरा उतारती हैं। दिन में तीन बार, सुबह छः बजे, दोपहर बारह बजे और शाम चार बजे ये पेड़ पर चढ़ती हैं, नीरा सिर्फ सुबह और शाम को उतारती हैं और दोपहर को पुष्पक्रम को अच्छी तरह पीटकर नीरा के रिसाव को सुगम बना देती हैं। प्रतिदिन इन्हें 5 लीटर से 13 लीटर तक नीरा मिल रही है। हर महीने फेडरेशन इन्हें 5000 रु. वेतन देता है और हरेक लीटर नीरा के लिए 40 रु. करके प्रोत्साहन भी दे रहा है। किसी भी प्रकार के हादसे से इन्हें बीमा सुरक्षा भी प्राप्त है। पायम्ब्रा फेडरेशन उतारती नीरा कोष़िक्कोट नारियल उत्पादक कंपनी को प्रसंस्करण करने के लिए देता है। ये महिलायें अपने काम में खुश हैं और कुशल भी हैं और आशा करती हैं कि अपने काम में कभी भी कोई बाधा न पडें। उन्हें अपने काम पर गर्व है। औरों तो डरते हैं इस काम को, सो हम तो अलग हैं इस दुनिया में, हमें अलग पहचान है, यही उनका सोच है। ये महिलायें महिला सशक्तीकरण की अनमोल मिसाल हैं।

नारियल विकास बोर्ड नीरा के ज़रिए नारियल किसान के जीवन में खुशियाली भरने के लिए अनवरत कार्यरत है। नारियल पेड़ के अनखुले पुष्पगुच्छ से उपलब्ध पौष्टिक और स्वास्थ्य रस है नीरा। अमिनो अम्लों, विटामिनों और खनिजों से भरपूर नीरा की स्वास्थ्य पेय के रूप में असीम संभावनायें होती हैं। नारियल विकास बोर्ड और नारियल किसानों के त्रिस्तरीय संगठन नारियल पेड़ को किसानों और कामगारों के जीवन की आधारशिला बनाने का प्रयास कर रहे हैं। बोर्ड और नारियल उत्पादक फेडरेशन बेरोज़गार युवा-युवतियों को नीरा उतारने का प्रशिक्षण दिला रहे हैं।

नारियल की भूमि केरल में नारियल नीरा किसानों और कृषि कामगारों के जीवन में समृद्धि की नई उमंग भर दे रही है। नारियल विकास बोर्ड के लगातार प्रयास करने के परिणाम स्वरूप ही राज्य आबकारी नियम में संशोधन लाकर नीरा उतारने का कार्य संभव हो गया है। नीरा क्रांति के ज़रिए नारियल विकास बोर्ड किसानों की आमदनी में बढ़ोत्तरी लाने के साथ साथ रोज़गार के अवसर भी खोल रहा है।

नारियल कृषकों को क्या करना चाहिए?

जुलाई से सितंबर तक

अन्डमान व निकोबार द्वीप समूह

जुलाई

पेड़ के तने के निचले भाग से 2 मी. की दूरी पर पेड़ के चारों ओर थाला बनायें। प्रति पेड़ 25 से 50 कि. ग्रा. गोबर खाद या कम्पोस्ट तथा 10 से 20 कि. ग्रा. राख थाले में डालकर मिट्टी से ढक दें। नर्सरी से खरपतवार निकाल दें।

अगस्त

कली सड़न रोग और गैंडा भृंग के प्रकोप की जाँच करें और इनकी रोकथाम हेतु आवश्यक नियंत्रणोपाय अपनायें। यदि नारियल के छिलके उपलब्ध हैं तो नारियल पेड़ों की कतारों के बीच 50 से. मी. चौड़ी एवं 50-60 से.मी. गहरी खाई खोदकर छिलके भीतरी भाग ऊपर की ओर करके गाड़ दें और मिट्टी से ढक दें। मुख्य खेत में रोपित नारियल पौधों के थालों से खरपतवार निकालकर साफ़ रखें।

सितम्बर

हरी खाद फसल जोतकर मिट्टी में मिला दें। सूखा कंपोस्ट/गोबर/कुक्कुट खाद जैसी जैव खाद प्रति पेड़ 25 कि.ग्राम की दर पर पेड़ के थाले में डाल दें। खाद को मिट्टी से ढक दें। अब गुणवत्तापूर्ण बीजपौधों की रोपाई की जा सकती है। बीजपौधों के गड्ढ़ों में बरसाती पानी जमने न दें। बीच की जगहों में लौंग, जायफल, दालचीनी, काली मिर्च और केले का रोपण किया जा सकता है। रोगग्रस्त ताड़ों से भृंगों को बीटल हुक से निकालना, भृंग की प्रजनन सामग्रियों का सफाया करना तथा बैकुलोवायरस ऑफ ओरिक्टस एवं मेटाराइज़ियम एनिसोप्लिए जैसे सूक्ष्मजैविक एजेंटों का प्रयोग करके जैविक नियंत्रण करना आदि एकीकृत कीट प्रबंधन पैकेज अपनाकर गैंडा भृंग का नियंत्रण करना चाहिए। क्लियोडेंड्रॉन इनफोर्चुनेटम नामक खरपतवार को भृंग के प्रजनन स्थानों में मिला देने से लार्वे का विकास रुक जाता है जो अंततः कीटों की संख्या कम करती है। सबसे ऊपर के तीन पर्णकक्षों को 250 ग्राम मरोट्टी/नीमखली चूर्ण एवं तुल्य मात्रा में महीन रेत के मिश्रण से भरें या साल में तीन बार प्रति ताड़ 10 ग्राम नैफ्थालिन गोलियाँ रखें और मिट्टी से ढक दें।

आंध्र प्रदेश

जुलाई

जून में खाद नहीं डाली है तो अभी डालें। मुख्य बाग में पौद लगायें। गैंडा भृंग की रोकथाम हेतु रोगनिरोधी उपाय के रूप में पेड़ के भीतरी 3-4 पत्तों के कक्षों में 250 ग्रा. मरोट्टी/नीम खली चूर्ण एवं तुल्य मात्रा में महीन रेत के मिश्रण से भरें या साल में तीन बार नैफ्थालिन गोलियाँ (प्रति ताड़ 12 ग्राम) रखें और मिट्टी से ढक दें।

यदि बरुथी (mite) का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खास तौर पर बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा पिला दें।

अगस्त

हल चलाकर हरी खाद फसल वहीं मृदा में मिला दें। पेड़ के शिखर पर गैंडा भृंग की तलाश करें और भृंग अंकुश से भृंगों को निकालकर मार डालें। गैंडा भृंगों के प्रकोप के खिलाफ रोग निरोधी उपाय के रूप में पेड़ के ऊपरी 3-4 पत्तों के कक्षों में 250 ग्राम मरोट्टी / नीमखली चूर्ण और तुल्य मात्रा में महीन रेत के मिश्रण से भरें या साल में तीन बार नैफ्थालीन गोलियाँ रखकर महीन रेत से ढक दें। फफूँदी रोगों के खिलाफ रोग निरोधी उपाय के रूप में पेड़ों पर 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें।

यदि बरुथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खास तौर पर बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा पिला दें।

सितम्बर

ज़मीन पर हल चलाएं और लोबिया या किसी दूसरी दलहन फसल या सब्जी की फसल के बीज बोएं। तना स्रवण रोग की तलाश करें और रोग पाया तो (1) पेड़ के रोग बाधित ऊतक निकालकर वहाँ 5 प्रतिशत कैलिक्सिन लगाएं और गरम कोलतार का प्रयोग करें। (2) प्रति पेड़ 100 मि.ली. की दर पर 5 प्रतिशत कैलिक्सिन युक्त घोल तीन महीनों के अंतर से जड़ों द्वारा दें। (3) प्रति वर्ष प्रति पेड़ 5 कि. ग्रा. नीम की खली जैव खाद के साथ दें। (4) बारिश के समय पानी बह जाने की व्यवस्था करके और गरमी के समय सिंचाई करके खेत की नमी बनाए रखें।

यदि बरुथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खास तौर पर बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा पिला दें।

असम

जुलाई

नवरोपित पौदों के गड्ढ़ों में बरसाती पानी जमने न दें। पेड़ के शिखर की सफ़ाई करें। अगर तना स्रवण रोग पाया गया तो (1) रोगग्रस्त पेड़ों के रोगबाधित ऊतक निकालकर वहाँ 5 प्रतिशत कैलिक्सिन लगाएं। यह सूखने पर गरम कोलतार लगाएं। (2) प्रकोपित पेड़ को प्रति पेड़ 5 प्रतिशत कैलिक्सिन 100 मि.ली. पानी में घोलकर तीन महीनों के अंतर से जड़ों द्वारा दें। (3) मानसून की अवधि के बाद प्रति वर्ष प्रति पेड़ 5 कि. ग्रा. नीम की खली जैव खाद के साथ दें। (4) बारिश के समय पानी बह जाने की व्यवस्था करके और गरमी के समय सिंचाई करके खेत में पर्याप्त मात्रा में नमी बनाए रखें।

अगर कली सड़न रोग पाया जाता है तो प्रकोपित ऊतक हटा कर वहाँ बोर्डो पेस्ट लगायें। पेस्ट बरसाती पानी में बह जाने से रोकने के लिए सुरक्षा आवरण दिया जाए। आसपास के नारियल पेड़ों पर 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण छिड़क दें। जब मौसम अच्छा हो जाए पौधा संरक्षण उपाय अपनाए जाएं। नर्सरी से खरपतवार निकाल दें।

अगस्त

यदि तना स्रवण रोग पाया जाए तो (1) रोगग्रस्त पेड़ों के रोगबाधित ऊतक निकालकर वहाँ 5 प्रतिशत कैलिक्सिन लगाएं। यह सूखने पर गरम कोलतार लगाएं। (2) प्रकोपित पेड़ को प्रति पेड़ 100 मि.ली. की दर पर 5 प्रतिशत कैलिक्सिन तीन महीनों के अंतर से जड़ों द्वारा दें। (3) उर्वरकों की दूसरी मात्रा के साथ प्रति वर्ष प्रति पेड़ 5 कि. ग्रा. नीम की खली दें। (4) बारिश के समय पानी बह जाने की व्यवस्था करके और गरमी के समय सिंचाई करके खेत की नमी बनाए रखें। प्रतिरोपित पौदों के गड्ढ़ों में पानी जमा होने न दें। जल निकास के नालों को साफ़ करें।

सितम्बर

प्रति वर्ष प्रति ताड़ 5 कि. ग्राम की दर पर नीम खली के साथ उर्वरकों की दूसरी मात्रा यानी 334 ग्राम यूरिया, 666 ग्राम सिंगल सूपर फोस्फेट तथा 666 ग्राम म्यूरियेट ऑफ पोटैश डालें। नर्सरी से अनंकुरित बीजफलों तथा मृत पौदों को निकाल दें। उसी प्रकार देर से अंकुरित तथा कम बाढ़ वाली पौदों को भी निकाल दें। प्रत्येक वयस्क नारियल पेड़ को 25-50 कि.ग्राम की दर पर केंचुआ खाद/गोबर खाद दें। बीच की जगह भरने का कार्य इस महीने किया जा सकता है।

बिहार / झारखंड / मध्यप्रदेश / छत्तीसगढ़

जुलाई

पानी बह जाने के लिए उपयुक्त तरीके अपनाएं। बरसाती पानी को गड्ढ़ों में लम्बे समय तक जमा होने न दें। चुनिंदे बढ़िया पौदों को पहले ही बनाए गए एवं आधे भरे गड्ढ़ों में लगाएं। दीमक के प्रकोप को रोकने के लिए रोपित पौदों के थाले 0.05 प्रतिशत क्लोरपैरिफॉस से 20 से 25 दिनों के अंतर से दो बार भिगो दें। पौद लगाने के पहले गड्ढ़े में 2 कि. ग्रा. हड्डी चूर्ण या सिंगल सूपर फॉस्फेट डालें। पेड़ के चारों ओर नीचे भाग से 2 मी. की दूरी पर 15-20 से. मी. गहरे थाले खोदकर खाद एवं उर्वरक डालें और मिट्टी से ढक दें। इस महीने उर्वरक देने के पहले थाले में प्रति पेड़ 30-50 कि.ग्रा. अहाता खाद/कम्पोस्ट डालें। सिंचित एवं अच्छी तरह देखभाल किए जानेवाले बागों में 275 ग्रा. यूरिया, 500 ग्रा. सिंगल सूपर फॉस्फेट एवं 500 ग्रा. म्यूरियेट ऑफ पोटैश की दर पर उर्वरक डालें। बारानी खेतों में उर्वरकों की पहली मात्रा (अनुशंसित मात्रा का एक तिहाई भाग) यानी प्रति पेड़ 250 ग्रा. यूरिया, 350 ग्रा. सिंगल सूपर फॉस्फेट एवं 400 ग्रा. म्यूरियेट ऑफ पोटैश डालें और मिट्टी से ढक दें।

पिछले वर्ष लगायी पौद जो नष्ट हो गई हो, उनके स्थान पर नई पौद की रोपाई करें। इसके लिए विशेषकर पॉलीबैग में रोपित पौदों का प्रयोग करें। इसी तरह कमज़ोर और खराब पौदों को हटाकर उनकी जगह स्वस्थ पौद लगायें। पेड़ों पर कली सड़न रोग की जाँच करें। अगर प्रकोप पाया जाता तो सभी रोगबाधित भागों को हटाकर बोर्डो पेस्ट लगायें। आसपास के पेड़ों/पौदों पर एक प्रतिशत बोर्डो मिश्रण से छिड़काव करें।

अगस्त

अगर जुलाई में नहीं किया गया है तो पेड़ के चारों ओर 2 मी. की दूरी पर 15-20 से.मी. गहरे थाले खोदें। थाले में प्रति पेड़ 30-50 कि.ग्रा. अहाता खाद/कम्पोस्ट डालें। अगर हरी खाद फसल उगायी गयी है तो उस पर हल चलाकर वहीं मृदा में मिला दें या पेड़ के चारों ओर थालों में डालें। इस महीने चुनिंदे बढ़िया पौदों का चयन करके रोपाई करें। पौद इस तरह लगायें कि पौद का गर्दन भाग मृदा से न ढकें। नवरोपित पौदों के गड्ढ़ों में पानी जमने न दें। शिखर पर कली सड़न या कीट प्रकोप की जाँच करें और उन्हें नियंत्रित करने हेतु उपाय अपनायें। सूखे और सड़े पत्ते निकालकर पेड़ के शिखर साफ करें। फलगुच्छों को झुकने से रोकने हेतु उन्हें बाँध दें या सहारा दें। यदि उर्वरक का प्रयोग नहीं किया है तो डालें और थाले पूरी तरह ढक दें।

सितम्बर

कली सड़न रोग की जाँच करें। रोगग्रस्त पेड़ों के शिखरों के सभी रोगबाधित ऊतक

काटकर निकाल दें और बोर्डो पेस्ट लगायें।

तना स्रवण रोग की तलाश करें। यदि रोग पाया गया है तो (1) रोग बाधित ऊतक निकालकर वहाँ 5 प्रतिशत कैलिक्सिन लगाएं और उस पर गरम कोलतार लगाएं। (2) प्रकोपित पेड़ को प्रति पेड़ 5 प्रतिशत कैलिक्सिन युक्त 100 मि.ली. घोल तीन महीनों के अंतर से जड़ों द्वारा दें। (3) मानसूनोत्तर अवधि के दौरान प्रति वर्ष प्रति पेड़ 5 कि.ग्रा. नीम की खली जैव खाद के साथ दें। (4) बारिश के समय पानी बह जाने की व्यवस्था करके और गरमी के समय सिंचाई करके खेत की नमी नियमित रखें।

इस महीने के दौरान चुनी हुई बढ़िया किस्म की पौदों की रोपाई जारी रखें। नये रोपित पौधों को टेक लगाकर सहारा दें। यदि पिछले वर्ष या इस वर्ष रोपित पौद मर गई हैं तो उनके स्थान पर मुख्यतया पॉलीबैग में रोपित पौद लगायें।

दीमक के प्रकोप को रोकने के लिए 22-25 दिनों के अंतराल में दो बार 0.05 प्रतिशत क्लोरपाइरिफोस से प्रतिरोपित पौधों के थालों को शराबोर करें। बीजपौधों के गर्दनी भाग का सड़ना रोकने के लिए गर्दनी क्षेत्र से अतिरिक्त मिट्टी निकाल दें।

कर्नाटक

जुलाई

पेड़ के चारों ओर 2 मी. की दूरी पर वृत्ताकार थाला खोदें। गैंडा भृंग एवं लाल ताड़ घुन के प्रकोप की तलाश करें और उपयुक्त नियंत्रणोपाय अपनायें। बागों को खरपतवार से मुक्त रखें। अगर पिछले महीने रोगनिरोधी छिड़काव नहीं किया गया है तो अब एक प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें। इस महीने पौधों का रोपण किया जा सकता है।

यदि बरुथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी पर 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खास तौर पर बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा पिला दें।

अगस्त

अगर हरी खाद फसल उगाई गई है तो फूलने के पहले ही उन्हें काटकर पेड़ों के चारों ओर थालों में डालें। पेड़ों के शिखर साफ़ करें और फलगुच्छों को झुकने से रोकने हेतु उन्हें बाँध दें या सहारा दें। पेड़ के शिखरों पर कली सड़न के प्रकोप की तलाश करें। अगर कली सड़न का प्रकोप पाया जाता है तो सभी प्रकोपित ऊतक हटाकर वहाँ बोर्डो पेस्ट लगाएं और पानी अन्दर जाने से रोकने हेतु पॉलिथीन से ढक दें। गैंडा भृंग एवं लाल ताड़ घुन का पता लगायें और उपयुक्त उपाय अपनायें। लाल ताड़ घुन की रोकथाम के लिए एक प्रतिशत कार्बरिल का इंजेक्शन दें। पौधों की रोपाई जारी रखें। यदि बरुथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल-लहसुन-साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मिं.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खास तौर पर बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा पिला दें।

सितम्बर

बाग में नए बीजपौधों की रोपाई करने, थाला बनाने, गड्ढ़ा खोदने और मृत पौधों के स्थान पर नए पौधे लगाने का सबसे अनुकूल समय है। उचित हरी पत्तियों से नारियल थालों का पलेवा करें। चुने गए मातृ ताड़ों से बीजफल इकट्ठा करके नर्सरी में बोएं। बागों को खरपतवार से मुक्त रखने के लिए निराई गुड़ाई करें। नारियल बागों में प्रति इकाई क्षेत्र से अधिकतम आमदनी प्राप्त करने के लिए केला, सब्जियाँ, कंदमूल फसलें आदि जैसे उचित अंतरासस्यों की खेती करें। कलिका विगलन रोग की तलाश करें और रोग पाया है तो शिखर के रोगग्रस्त ऊतकों को निकाल दें और बोर्डो पेस्ट लगाएँ। रोगरोधी उपाय के रूप में रोगग्रस्त पेड़ों के आसपास स्थित स्वस्थ पेड़ों पर 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण स्प्रे करें। यदि सफेद सूँडी का प्रकोप है तो उस पर नियंत्रण पाने के लिए प्रति पेड़ 100 ग्राम

की दर पर फोरेट 10 जी का प्रयोग करें या प्रति लीटर पानी में 2.5 मि.ली. की दर पर 20 ईसी क्लोरपाइरिफोस से जड़ क्षेत्र को शराबोर करें। रोगग्रस्त ताड़ों से भृंगों को बीटल हुक से निकालना, भृंग की प्रजनन सामग्रियों का सफाया करना तथा बैकुलोवायरस ऑफ ओरिक्टस एवं मेटाराइज़ियम एनिसोप्लिए जैसे सूक्ष्मजैविक एजेंटों का प्रयोग करके जैविक नियंत्रण करना आदि एकीकृत कीट प्रबंधन पैकेज अपनाकर गैंडा भृंग का नियंत्रण करना चाहिए। क्लियोडेंड्रॉन इनफोर्चुनेटम नामक खरपतवार को भृंग के प्रजनन स्थानों में मिला देने से लार्वे का विकास रुक जाता है जो अंततः कीटों की संख्या कम करती है। पेड़ के सबसे ऊपर के तीन पर्णकक्षों को 250 ग्राम मरोट्टी/नीमखली चूर्ण एवं समान मात्रा में महीन रेत के मिश्रण से भरें या साल में तीन बार प्रति ताड़ 10 ग्राम नैफ्थालिन गोलियाँ (4 गोलियाँ) रखें और मिट्टी से ढक दें।

केरल/लक्षद्वीप

जुलाई

अगर जून में नहीं किया गया है तो पेड़ के चारों ओर 2 मी. की दूरी पर थाले खोदें और उनमें प्रति पेड़ 25 कि.ग्रा. की दर पर हरी खाद या हरे पत्ते या प्रति वयस्क पेड़ 50 कि. ग्रा. की दर पर गोबर खाद, कम्पोस्ट आदि जैसी कार्बनिक खाद डालें और थाले आंशिक रूप से ढक दें। गड्ढ़े जिनमें पौदें लगाई गई हैं, साफ़ करें। पेड़ के शिखरों पर गैंडा भृंग, लाल ताड़ घुन और कली सड़न रोग की भी जाँच करें। उनकी रोकथाम के लिए उपाय अपना लें। पेड़ के शिखर की सफाई करें।

यदि बरुथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खास तौर पर बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा पिला दें। नर्सरी से खरपतवार निकाल दें।

अगस्त

अगर दलहनी हरी खाद फसल उगायी गई है तो उन्हें वहीं जुताई करके मृदा में मिला दें। पेड़ों के शिखर साफ़ करें और फलगुच्छों का झुकना रोकने हेतु उन्हें बाँध लें या सहारा दें। मई-जून और सितंबर-अक्तूबर में प्रति ताड़ 100 ग्राम की दर पर फोरेट 10 जी का थाले में प्रयोग करके या जड़ों को प्रति लीटर पानी में 2.5 मि.ली. की दर पर क्लोरपाइरिफोस 20 ई सी के घोल से शराबोर करके कीटों पर नियंत्रण पा सकता है। यदि बरुथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल-लहसुन-साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मिं.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खास तौर पर बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा पिला दें।

सितम्बर

निचली भूमि में नारियल पौद उथले गड्ढ़ों में या उभरे टीलों पर लगायें। बारानी बागों में उर्वरकों की दूसरी मात्रा तथा सिंचित बागों में सिफारिश की गयी मात्रा का एक चौथाई भाग डालें। पिछले महीने खाद नहीं डाल सके तो इस महीने प्रति वयस्क पेड़ 25-50 कि.ग्रा. की दर पर गोबर खाद या हरी खाद डालें। उर्वरकों की दूसरी मात्रा के साथ प्रति पेड़ 500 ग्रा. की दर पर मैग्नीशियम सल्फेट डालें और थाले पूरी तरह ढक दें। बागों में हल चलायें या गुड़ाई करें। गैंडा भृंग तथा लाल ताड़ घुन की रोकथाम हेतु ऊपरी तीन-चार पत्तों के कक्षों में प्रति पेड़ 250 ग्राम मरोट्टी / नीम खली चूर्ण के साथ तुल्य मात्रा में रेत के मिश्रण से भरें या प्रति पेड़ 10 ग्राम नैफ्थलीन गोलियाँ रखकर उसे रेत से ढक दें।

यदि बरुथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे

से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खास तौर पर बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा पिला दें।

महाराष्ट्र / गोवा / गुजरात

जुलाई

पेड़ों के बीच की खाइयों में छिलके भीतरी भाग ऊपर की ओर करके गाड़ दें। फफूँदजन्य रोगों के खिलाफ रोग निरोधी उपाय के रूप में 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें।

अगस्त

जुताई करके खरपतवार एवं हरी खाद फसलें मृदा में मिला दें। भारी फलगुच्छों का झुकना रोकने के लिए उन्हें रस्सी से बाँधें। अगर गैंडा भृंग का प्रकोप पाया जाता है तो रोगनिरोधी छिड़काव के रूप में साल में तीन बार ऊपरी 3-4 पत्तों के कक्षों में 250 ग्रा. मरोट्टी/नीमखली चूर्ण तुल्य मात्रा में महीन रेत मिलाकर भरें या नैफ्थालीन गोलियाँ (12 ग्राम/पेड़) रखकर महीन रेत से ढक दें।

सितम्बर

पेड़ों के चारों ओर थाले बनाकर उर्वरकों की दूसरी मात्रा डालें। प्रति पेड़ 25 कि. ग्रा. की दर पर थालों में हरे पत्ते डालें। सभी पेड़ों पर बोर्डो मिश्रण से तीसरा रोगनिरोधी छिड़काव करें। नर्सरी से अनंकुरित फलों और मृत पौदों को निकाल दें। उसी प्रकार देर से अंकुरित तथा कम बाढ़ वाली पौदों को भी निकाल दें।

ओड़िशा

जुलाई

गैंडा भृंगों की रोकथाम हेतु कीटरोधी उपाय के रूप में ऊपरी तीन पत्तों के कक्षों में 250 ग्रा. मरोट्टी / नीम खली चूर्ण 250 ग्रा. महीन रेत मिला कर भरें या साल में तीन बार नैफ्थलीन गोलियाँ (12 ग्रा. प्रति पेड़) रखकर महीन रेत से ढक दें। गैंडा भृंगों को हुक से निकाल दें। अन्तरा/मिश्रित फसलों को खाद डालें। फफूँदी रोगों के खिलाफ रोग निरोधी उपाय के रूप में 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण से छिड़काव करें।

अगस्त

बागों से खरपतवार निकाल कर मृदा में मिला दें। पेड़ों के शिखर साफ़ करें। कच्चे फलगुच्छों को बाँध लें। शीतकालीन सब्जियाँ बोने हेतु ज़मीन तैयार करें।

सितम्बर

नारियल थालों में हरी खाद फसलों के बीज बोएं। नर्सरी को खरपतवारों से मुक्त रखें। कीटों/रोगों के प्रकोप से बचने के लिए शिखर को साफ रखें। सभी पौधा संरक्षण उपाय अपनाएं। यदि बरुथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल-लहसुन-साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट +5 ग्राम साबुन मिलाकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली.की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खास तौर पर बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरैक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली.की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी मिलाकर जड़ों द्वारा पिला दें।

तमिलनाडु/पुदुच्चेरी

जुलाई

पेड़ों के चारों ओर थाले खोदें। बाग खरपतवार से मुक्त रखें। कली सड़न और अन्य फफूँदी रोगों के खिलाफ रोग निरोधी उपाय के रूप में पेड़ों पर 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें। यदि पिछले महीने नहीं डालें हैं तो, उर्वरकों की पहली मात्रा यानी प्रति वयस्क पेड़ 300 ग्रा. यूरिया, 500 ग्रा. सिंगल सूपर फॉस्फेट एवं 500 ग्रा. म्यूरियेट ऑफ पोटैश अब डालें। पेड़ों के शिखरों पर भृंग अंकुश से गैंडा भृंग की तलाश करें और उन्हें मार डालें। गैंडा भृंग के खिलाफ कीटरोधी उपाय के रूप में पेड़ के ऊपरी 3-4 पत्तों के कक्षों में साल में तीन बार 250 ग्रा. मरोट्टी / नीम खली चूर्ण तुल्य मात्रा में महीन रेत मिला कर भरें या नैफ्थलीन गोलियाँ (12 ग्रा. प्रति पेड़) रखकर महीन रेत से ढक दें। मुख्य खेत में पौदों की रोपाई इस महीने में की जा सकती है। तंजावूर मुर्झा रोग का ध्यान रखें और उपयुक्त नियंत्रणोपाय अपनायें।

यदि बरुथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खास तौर पर बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और

रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा पिला दें।

अगस्त

अगर कोई हरी खाद फसल उगाई गई है तो उसकी जुताई करके पेड़ के चारों ओर खोदे गए थाले में डालें। पेड़ों के शिखर साफ करें और फलगुच्छ झुकने से रोकने हेतु उन्हें बाँध लें या सहारा दें। सिंचित बागों में उर्वरकों की अनुशंसित मात्रा का एक चौथाई भाग (तीसरी मात्रा) डालें। यदि बरुथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल-लहसुन-साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खास तौर पर बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा पिला दें।

सितम्बर

थाला बनाना, जुताई करना आदि जैसी खेती प्रक्रियाएं शुरू करें। बारानी स्थितियों में प्रति पेड़ उर्वरकों की दूसरी मात्रा, 500 ग्राम यूरिया, 800 ग्राम सिंगल सूपर फोस्फेट और 800 ग्राम म्यूरिएट ऑफ पोटैश का प्रयोग करें।

यदि बरुथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खास तौर पर बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा पिला दें।

नवरोपित पौदों के गड्ढ़ों में पानी का जमाव रोकने के लिए गड्ढ़ों के बांधों को मज़बूत बनाएं। नवरोपित पौदों को टेक देकर/सिंचाई आदि की व्यवस्था करके आवश्यक देखभाल करें।

त्रिपुरा

जुलाई

पेड़ के चारों ओर खोदे गए थाले से खरपतवार निकालकर साफ़ रखें। अगर किसी हरी खाद फसल मई में उगाई गई है तो इस महीने जुताई करके मिट्टी में मिला दें। गैंडा भृंग के प्रकोप की रोकथाम के लिए पेड़ के ऊपरी तीन-चार पत्तों के कक्षों में 250 ग्रा. मरोट्टी/नीम खली चूर्ण तुल्य मात्रा में महीन रेत मिलाकर भरें या साल में 3 बार नैफ्थलीन गोलियाँ (12 ग्रा. प्रति पेड़) रखकर महीन रेत से ढक दें। इकट्ठे किए गए बीजफल बारिश शुरू होते ही क्यारियों में बोयें।

अगस्त

कीट/रोग के प्रकोप से पेड़ों को सुरक्षित रखने के लिए शिखरों को साफ करें। पूरे शिखर पर 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण से छिड़काव करें। महीने के दौरान उर्वरकों की दूसरी मात्रा डालें। उर्वरक के प्रयोग के बाद यदि बारिश नहीं हुई हो तो सिंचाई अवश्य करनी चाहिए।

सितम्बर

कीटों तथा रोगों से बचाने हेतु पेड़ों के शिखरों की सफाई करें। पूरे शिखर पर 1% बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें। इस महीने उर्वरकों की दूसरी मात्रा दें। उर्वरक देने के बाद वर्षा नहीं मिल रही है तो सिंचाई करें।

पश्चिम बंगाल

जुलाई

प्रति पेड़ 25 कि. ग्रा. की दर पर हरी खाद दें। बाग खरपतवार से मुक्त रखें। मुख्य खेत में पौदों की रोपाई शुरू करें। फफूँदजन्य रोगों के खिलाफ रोग निरोधी उपाय के रूप में 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें।

अगस्त

पके नारियल की तुड़ाई करें। पेड़ के शिखर साफ़ करें और सूखे पत्ते निकालें। गैंडा भृंग एवं लाल ताड़ घुन का पता लगायें और नियंत्रणोपाय अपनायें। कली सड़न, पत्ता सड़न एवं महाली के कारण कच्चे फलों के गिराव की रोकथाम के लिए पेड़ों के शिखरों पर 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण या कोप्पर ऑक्सीक्लोराइड घोल (0.5 प्रतिशत) का छिड़काव करें।

सितम्बर

नर्सरी की निराई करें और छोटे पौधों को आंशिक रूप से छाया प्रदान करें। परिपक्व फलों की तुड़ाई जारी रखें।

नाविबो टीम ने अरुणाचल प्रदेश का दौरा किया

नारियल विकास बोर्ड के अध्यक्ष श्री टी.के.जोस भाप्रसे अरुणाचल प्रदेश के कृषि मंत्री श्री चौना मीन और नामसाई के विकास आयुक्त के साथ

अरुणाचल प्रदेश के माननीय कृषि मंत्री श्री चौना मीन नामसाई के बीज बाग में नारियल पौधे का रोपण करते हुए

नारियल के अधीन अधिकाधिक क्षेत्र लाने की संभावनाओं का लाभ उठाने के लिए श्री.टी.के जोस भाप्रसे, अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड के नेतृत्व में श्री.राजीव पी.जोर्ज, निदेशक, नारियल विकास बोर्ड, डॉ.रजत कुमार पाल, उप निदेशक, नारियल विकास बोर्ड और श्री.एम.एन गोपिनाथ, रबड़ उत्पादन अपर आयुक्त (सेवानिवृत्त)सहित एक उच्च स्तरीय तकनीकी टीम ने 22 और 23 अप्रैल 2015 को अरुणाचल प्रदेश के नामसाई का दौरा किया। अरुणाचल प्रदेश के माननीय कृषि मंत्री श्री चौना मीन भी टीम के साथ थे। अरुणाचल प्रदेश में नारियल कृषि के लिए लगभग एक लाख हेक्टर क्षेत्र उपयुक्त माना गया है। टीम ने प्रस्तावित न्यूक्लियस बीज बाग का दौरा किया और अरुणाचल प्रदेश के विभिन्न किसान समूहों के साथ चर्चा भी की।

कृषि विज्ञान मेला

नारियल विकास बोर्ड ने आईएआरआई, पुसा, नई दिल्ली द्वारा 10-12 मार्च 2015 को आयोजित कृषि विज्ञान मेले में भाग लिया। केन्द्रीय कृषि, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग राज्य मंत्री डॉ.संजीव कुमार बालियान ने श्री सिराज हुसैन, सचिव, कृषि एवं सहकारिता, डॉ.एस अय्यप्पन, सचिव, डीएआरई और महा निदेशक, आईसीएआर तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों की समुपस्थिति में मेले का उद्घाटन किया। विशाल थीमाटिक पवलियन में उपयुक्त प्रौद्योगिकियों के प्रदर्शन के साथ आईएआरआई द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियाँ भी प्रदर्शित की गईं।

नारियल विकास बोर्ड के स्टॉल में नारियल तथा नारियल पेड़ के अन्य भागों से निर्मित विविध मूल्य वर्धित उत्पाद

मेले में बोर्ड के स्टाल का दृश्य

प्रदर्शित किए गए। नारियल और नारियल उत्पादों के न्यूट्रास्यूटिकल तथा स्वास्थ्य लाभों के आकर्षक पोस्टर भी स्टॉल में प्रदर्शित किए गए।

उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में नारियल विकास कार्यक्रमों की समीक्षा बैठक

उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में नारियल विकास कार्यक्रमों की समीक्षा हेतु श्री.टी.के. जोस भाप्रसे, अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड की अध्यक्षता में 21 अप्रैल 2015 को गुवाहटी में एक विशेष बैठक आयोजित की गई। श्री.टी.के जोस भाप्रसे, अध्यक्ष ने अपने अध्यक्षीय भाषण में नारियल के वैश्विक परिदृश्य एवं उसके आर्थिक महत्व के बारे में संक्षिप्त विवरण दिया। उन्होंने मद्यांश रहित प्राकृतिक पौष्टिक पेय नीरा और उसके स्वास्थ्य लाभों के बारे में सूचित किया और नारियल के मूल्य वर्धन की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। अध्यक्ष ने उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में नारियल उत्पादों की जाँच और प्रमाणीकरण के लिए एक खाद्य प्रयोगशाला स्थापित करने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। उन्होंने आगे नारियल में ऊतक संवर्धन तकनीक पर बात की और ऊतक संवर्धन के ज़रिए नारियल पौदों के उत्पादन पर ध्यान केंद्रित करने के लिए कृषि वैज्ञानिकों से अनुरोध किया।

श्री. हागे खोड़ा भाप्रसे, कृषि आयुक्त, अरुणाचल प्रदेश सरकार ने अरुणाचल प्रदेश की जलवायु परिस्थिति और राज्य में उगाई जानेवाली फसलों के बारे में संक्षिप्त परिचय दिया। उन्होंने सूचित किया कि अरुणाचल प्रदेश में 4-5 लाख हेक्टर कृषि योग्य भूमि उपलब्ध है जिनमें से एक लाख हेक्टर ज़मीन नारियल कृषि के लिए उपयुक्त है। डॉ.बी.एन.हज़ारिका, फल विज्ञान विभागाध्यक्ष, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बागवानी और वानिकी कॉलेज, पासीगढ़, अरुणाचल प्रदेश ने सूचित किया कि अरुणाचल प्रदेश में प्रसंस्करण इकाई की कमी ही मुख्य रुकावट है। श्री गौतम चक्रबर्ती, ओएसडी, मेघालय बेसिन विकास प्राधिकारी, मेघालय ने मेघालय और अन्य उत्तर-पूर्वी राज्यों में नारियल कृषि की सफलता के लिए किसानों के बीच एकीकृत खेती तथा शोध कार्य पर जागरूकता पैदा करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। डॉ.जे.सी. नाथ, प्रधान वैज्ञानिक, बागवानी अनुसंधान स्टेशन, असम कृषि विश्वविद्यालय ने क्लस्टर क्षेत्रों में नारियल पेड़ों का चयन करने, इसकी सूची तैयार करने और उचित रखरखाव करने के बारे में बात की। डॉ.धीरेंद्र नाथ कलिता, कार्यक्रम समन्वयक, कृषि विज्ञान केन्द्र, असम कृषि विश्वविद्यालय, कहिकुची ने किसान सहभागिता अनुसंधान कार्यक्रमों को बढ़ावा देने के लिए अनुरोध किया। श्री.एम.एन गोपिनाथ, रबड़ उत्पादन अपर आयुक्त (सेवानिवृत्त) ने सूचित किया कि असम में 500 रबड़ उत्पादक समितियां हैं। उन्होंने नारियल के एकीकृत विकास के लिए बहु-फसल प्रणाली अपनाने का सुझाव दिया। उन्होंने किसानों के लिए पूर्वाभिमुखीकरण और प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता के बारे में भी सूचित किया। श्री राजीव पी.जोर्ज, निदेशक ने सभा का स्वागत किया और डॉ.रजत कुमार पाल, उप निदेशक, नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी ने कृतज्ञता ज्ञापित की।

समीक्षा बैठक का दृश्य

नर्सरी और लैंडस्केप एक्स्पो

नारियल विकास बोर्ड ने 20-22 मार्च 2015 तक नई दिल्ली में संपन्न तीसरे नर्सरी एवं लैंडस्केप एक्स्पो व अग्रि होर्टि टेक एक्स्पो में भाग लिया। एक्स्पो आधुनिक प्रौद्योगिकियों और नर्सरी प्रबंधन, अनुरक्षण एवं बढ़िया बीज उत्पादों के उत्पादन के अभिनव आकर्षणों से भरा था।

नर्सरी और लैंडस्केप एक्स्पो में बोर्ड के स्टाल का दृश्य

पैकेटबंद डाब पानी, कुदरती नारियल सिरका, वर्जिन नारियल तेल और वर्जिन नारियल तेल आधारित अन्य उत्पाद जैसे माउथ फ्रेशनर, बालों का क्रीम, बच्चों का मालिश तेल, त्वचा संरक्षण तेल, केश तेल, कैप्स्यूल आदि उत्पाद, नारियल तेल, नारियल दूध, डेसिक्केटेड नारियल पाउडर, नारियल दूध पाउडर, नारियल पानी के सिरके का उपयोग किए गए अचार, डेसिक्केटेड नारियल आधारित मिठाइयाँ और नारियल चिप्स आदि प्रदर्शित किए गए और दिल्ली के प्रमुख डीलरों ने नारियल विकास बोर्ड के स्टाल के ज़रिए विपणन भी किया। स्टाल में बोर्ड के प्रकाशन और नारियल विकास बोर्ड की योजनाओं पर सूचनात्मक पोस्टर भी लगाए गए ताकि नारियल के कुदरती गुणों के बारे में व्यापक जागरूकता पैदा की जा सके। देश के विभिन्न भागों के किसान, विनिर्माता और विभिन्न उपस्करों एवं नर्सरी संबंधी सामग्रियों से संबद्ध व्यापारीगण एवं दिल्ली और एनसीआर, हरियाणा, उत्तर प्रदेश के निवासी मेले का दौरा करने के लिए आए।

अग्री-लीडरशिप सम्मिट 2015 संपन्न

नारियल विकास बोर्ड ने हरियाणा सरकार द्वारा पीएचडी चेंबर ऑफ कोमेर्स और इंडस्ट्री के साथ मिलकर 13 से 15 मार्च 2015 तक गुड़गाँव में आयोजित अग्रि-लीडरशिप सम्मिट 2015 में भाग लिया। सम्मेलन का उद्घाटन हरियाणा के माननीय मुख्य मंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर ने किया। माननीय केन्द्रीय सड़क परिवहन, राजमार्ग और जहाजरानी मंत्री श्री नितिन गडकरी, हरियाणा सरकार के माननीय कृषि मंत्री श्री ओम प्रकाश धनकर, माननीय सहकारिता मंत्री श्री विक्रम सिंह यादव, पशुपालन, सहकारिता के सचिव और अन्य गणमान्य व्यक्ति इस अवसर पर उपस्थित थे। विभिन्न राज्यों से लाखों किसानों और नेथरलैंड एवं इस्राइल जैसे देशों के प्रतिनिधियों ने कार्यक्रम में भाग लिया। सम्मिट में कृषि एवं बागवानी पर एक संगोष्ठी और एक प्रदर्शनी आयोजित की गईं।

नारियल विकास बोर्ड ने अपने प्रकाशनों के साथ साथ मूल्यवर्धित नारियल उत्पादों की एक लंबी श्रेणी प्रदर्शित की। नारियल विकास बोर्ड की गतिविधियों और योजनाओं पर सूचनात्मक पोस्टर और चार्ट भी प्रदर्शित किए गए जिससे देश के विविध भागों से आए किसान एवं व्यापारी और नेथरलैंड, स्पेन आदि जैसे देशों के प्रतिनिधियों में जागरूकता पैदा की जा सकी। श्री ओम

अग्री-लीडरशिप सम्मिट 2015 में बोर्ड का स्टाल

प्रकाश, अपर आयुक्त, एमआईडीएच, कृषि मंत्रालय, भारत सरकार ने नाविबो स्टाल का दौरा किया। बोर्ड के स्टाल में नारियल उत्पादों की बिक्री की भी व्यवस्था की गई।

समाचार

होर्टि संगम 2015 संपन्न

नारियल विकास बोर्ड ने कृषि मंत्रालय, भारत सरकार के राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड द्वारा आयोजित होर्टि संगम 2015 में भाग लिया। होर्टि संगम मोतीहारी जिले के गाँधी मैदान में 10 से 12 अप्रैल 2015 तक आयोजित हुआ था। माननीय केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री राधा मोहन सिंह ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। श्रीमती रमा देवी, सांसद, श्री राम चंद्र साहनी, भूतपूर्व मंत्री और विधायक, श्री प्रमोद कुमार, विधायक, श्री कृष्ण नंदन पास्वान, विधायक, डॉ.ए.के.सिंह, प्रबंध निदेशक, राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड, कुलपति, राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, कृषि विज्ञान केन्द्र, केन्द्रीय/राज्य सरकार, गैर सरकारी संगठन, एनसीडीसी, इफ्को, मधुमक्खी बोर्ड, पशुपालन, डेयरी और मत्स्यपालन विभाग(भारत सरकार) के वरिष्ठ अधिकारीगण, पूर्वी चंपारन, सीवा, मोतीहारी और अन्य क्षेत्रों के किसान इस अवसर पर उपस्थित थे।

होर्टि संगम में कृषि और बागवानी विकास, खाद्य प्रसंस्करण, डेयरी, मात्स्यिकी, सिंचाई आदि क्षेत्र की अद्यतन प्रौद्योगिकियाँ निर्दर्शित की गईं। केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री राधा मोहन सिंह ने नारियल विकास बोर्ड के स्टाल का दौरा किया और नारियल किसानों के लिए लाभदायी गतिविधियों के बारे में पूछताछ की। नाविबो के स्टाल में बोर्ड के प्रकाशनों के अतिरिक्त डाब पानी, डेसिक्केटेड नारियल पाउडर, नारियल दूध पाउडर, वर्जिन नारियल तेल, नारियल चिप्स जैसे मूल्यवर्धित नारियल उत्पाद भी प्रदर्शित किए गए।

माननीय केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री राधा मोहन सिंह होर्टि संगम का उद्घाटन करते हुए

होर्टि संगम 2015 में बोर्ड का स्टाल

सेवानिवृत्ति

श्री के.पी. आन्टणी नारियल विकास बोर्ड की सेवाओं से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने 29, जुलाई 1986 को बोर्ड में अपनी सेवा शुरू की थी।

नारियल विकास बोर्ड ने नीरा वेबसाइटों का लोकार्पण किया

नीरा का व्यापक संवर्धन करने और किसानों, उपभोक्ताओं, उद्यमियों एवं आम जनता को वैश्विक रूप से स्वीकृत इस स्वास्थ्यवर्धक पेय की उच्च संभावनाओं के बारे में अवगत कराने के लिए नारियल विकास बोर्ड ने चार नए वेबसाइट बनाए हैं। वे हैं: www.neerakeralam.com, www.neeraindia.com, www.neeraworld.com और www.neeraglobal.net । ये वेबसाइट नीरा, इसका उत्पादन, इसके उत्पाद, स्वास्थ्य लाभ आदि के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं। नीरा उत्पादन के लिए लाइसेंस प्राप्त करने हेतु नारियल विकास बोर्ड द्वारा की गई पहलें और नीरा उत्पादन के लिए लाइसेंस प्राप्त नारियल उत्पादक फेडरेशनों के ब्योरे www.neerakeralam.com और www.neeraindia.com में दिए गए हैं। स्वास्थ्यवर्धक वैश्विक पेय के रूप में नीरा की अहमियत, नारियल नीरा के प्रमुख वैश्विक उत्पादक और इसके मूल्यवर्धित उत्पाद, नारियल नीरा के अंतर्राष्ट्रीय ब्रैंड और उत्पाद संबंधी जानकारियाँ www.neeraworld.com में प्रकाशित की गई हैं। नीरा और इसके मूल्यवर्धित उत्पादों के वैश्विक उत्पादन

संबंधी आंकड़े www.neeraglobal.net में प्रस्तुत किए गए हैं। इन वेबसाइटों के ज़रिए बोर्ड नीरा और इसके मूल्यवर्धित उत्पादों के वितरण और विपणन के लिए ई कोमेर्स सुविधा सृजित करने की संभावनाओं वाले भविष्य की ओर ताक रहे हैं।

नारियल शर्करा

नारियल सिरप या गुड़ को क्रिस्टल बनाके महीन दानेदार नारियल शर्करा बनाई जा सकती है। विश्व बाज़ार में नारियल गुड़ की अपेक्षा उससे बनी नारियल शर्करा की अधिक स्वीकार्यता होती है। नारियल गुड़ से 15 प्रतिशत शर्करा प्राप्त होती है। इस शर्करा के महत्वपूर्ण स्वास्थ्य गुण जैसे कि कम ग्लैसेमिक इंडेक्स और उच्चतम पोषण संघटन के कारण इसके उपयोग की भारी संभावनाएं होती हैं। मिठास देने के लिए यह अत्यंत उपयुक्त है। यह वैकल्पिक शर्करा उद्योग 1.3 अरब अमेरिकी डॉलर का है इसलिए बाज़ार संभावनाएं अत्यधिक हैं।

इंडोनेशिया जैसे प्रमुख नारियल उत्पादक देश प्रति महीने 50,000 मेट्रिक टन तथा प्रति वर्ष 6 लाख मेट्रिक टन नायिल शर्करा का उत्पादन करते हैं। इंडोनेशिया में इसकी घरेलू माँग भी अधिक है।

परियोजना अनुमोदन समिति की 45 वीं बैठक में 21.2 करोड़ रुपए की परियोजनाओं के लिए अनुमोदन

परियोजना अनुमोदन समिति के सदस्य और विशेषज्ञ

नारियल प्रौद्योगिकी मिशन की परियोजना अनुमोदन समिति की 45 वीं बैठक नारियल विकास बोर्ड के अध्यक्ष श्री टी.के.जोस भाप्रसे की अध्यक्षता में कोची में संपन्न हुई। बैठक में 21.2 करोड़ रुपए के कुल परिव्यय और 4.2 करोड़ रुपए की सहायिकी के साथ 19 परियोजनाओं के लिए अनुमति दी गई। इनमें 6 अनुसंधान परियोजनाएं, 13 प्रसंस्करण और उत्पाद विविधीकरण परियोजनाएं और बाज़ार संवर्धन परियोजनाएं शामिल हैं।

बैठक में प्रसंस्करण और उत्पाद विविधीकरण उप संघटक के अंतर्गत प्रति दिन 2,00,000 नारियल की प्रसंस्करण क्षमता वाली डेसिक्केटेड नारियल पाउडर इकाइयों के लिए छह परियोजनाएं, प्रति दिन 15,000 फलों की प्रसंस्करण क्षमता वाली एक वर्जिन नारियल तेल इकाई, प्रति दिन 30,000 डाब की प्रसंस्करण क्षमता वाली दो डाब पानी परिरक्षण और पैकिंग इकाइयाँ, प्रति दिन 26 मेट्रिक टन खोपड़ी के प्रसंस्करण के लिए दो नारियल खोपड़ी कोयला निर्माण इकाई, प्रति दिन 20 मेट्रिक टन खोपड़ी के प्रसंस्करण के लिए एक खोपड़ी पाउडर इकाई, प्रति वर्ष 12 लाख नारियल की प्रसंस्करण क्षमता वाली एक गोल खोपरा इकाई और 70 एकीकृत नारियल केन्द्र स्थापित करने के लिए एक बाज़ार संवर्धन कार्यक्रम के लिए अनुमति दी गई।

केरल में प्रति दिन 15,000 फलों की प्रसंस्करण क्षमता वाली एक वर्जिन नारियल तेल प्रसंस्करण इकाई, प्रति दिन 10,000 डाब की प्रसंस्करण क्षमता वाली एक डाब पानी प्रसंस्करण इकाई, प्रति दिन 1,35,000 फलों की प्रसंस्करण क्षमता वाली तीन डेसिक्केटेड नारियल पाउडर इकाइयों और प्रति दिन 26 मेट्रिक टन खोपड़ी की प्रसंस्करण क्षमता वाली दो खोपड़ी कोयला इकाइयों के लिए मंजूरी दी गई।

परियोजना अनुमोदन समिति की 45वीं बैठक का दृश्य

तमिलनाडु में प्रति दिन 45,000 नारियल की प्रसंस्करण क्षमता वाली दो डेसिक्केटेड नारियल पाउडर इकाइयों, प्रति दिन 20,000 डाब की प्रसंस्करण क्षमता वाली एक डाब पानी इकाई और प्रति दिन 20 मेट्रिक टन खोपड़ी कोयला पाउडर उत्पादित करने के लिए एक खोपड़ी पाउडर इकाई के लिए मंजूरी दी गई।

आंध्र प्रदेश में प्रति वर्ष 12 लाख नारियल की प्रसंस्करण क्षमता वाली एक गोल खोपरा इकाई के लिए मंजूरी मिली। महाराष्ट्र में प्रति दिन 20,000 फलों की प्रसंस्करण क्षमता वाली एक डेसिक्केटेड नारियल पाउडर इकाई के लिए मंजूरी मिली।

डॉ.एम.अरविन्दाक्षन, डॉ.डी.एम. वासुदेवन, प्रिंसिपल(सेवानिवृत्त), अमृता इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्सेस, कोची, डॉ.के.एस.एम.एस. राघव राव, मुख्य वैज्ञानिक, केन्द्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान(सीएसआईआर), मैसूर; डॉ.वी.कृष्णकुमार, अध्यक्ष, केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, अनुसंधान स्टेशन, कायंकुलम; श्रीमती उषा के., सहायक महा प्रबंधक, नाबार्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, तिरुवनंतपुरम; डॉ.अनिलकुमार आर., सहायक कृषि विपणन सलाहकार, बाज़ार आसूचना निदेशालय, कोची; सुश्री मार्टिना योहन्नान, सहायक प्रबंधक, इंडियन ओवरसीस बैंक, कोची; नारियल विकास बोर्ड, कोची के मुख्य नारियल विकास अधिकारी श्री सुगत घोष, सचिव डॉ.ए.के.नंदी, निदेशक श्री राजीव पी.जोर्ज और उप निदेशक श्री हेमचंद्रा ने बैठक में भाग लिया।

कृषक उत्पादक संगठनों को एसएफएसी का समर्थन

श्री परवेश शर्मा भाप्रसे के साथ नाविबो के अध्यक्ष श्री टी.के.जोस भाप्रसे एवं वरिष्ठ अधिकारी गण चर्चा करते हुए

कृषि मंत्रालय, भारत सरकार के कृषि एवं सहकारिता विभाग के समर्थन से कार्यरत स्मॉल फार्मेर्स अग्रि-बिज़नेस कंसोर्शियम (एसएफएसी) ने नारियल विकास बोर्ड के अधीन पंजीकृत कृषक उत्पादक संगठनों की सहायता के लिए इच्छा ज़ाहिर की है। एसएफएसी के प्रबंध निदेशक श्री परवेश शर्मा भाप्रसे ने एसएफएसी की मौजूदा योजनाओं के अंतर्गत संभव भरपूर सहायता देने का वादा किया है। वे नारियल विकास बोर्ड के अध्यक्ष श्री टी.के.जोस भाप्रसे की अध्यक्षता में नाविबो के मुख्यालय में 19 मई 2015 को संपन्न बैठक में बात कर रहे थे।

उन्होंने कृषक उत्पादक संगठनों की तारीफ करते हुए कहा कि वे काफी बढ़िए तरीके से प्रस्तुत परियोजना सफलतापूर्वक चला रहे हैं। श्री शर्मा ने आग्रह किया कि मूल्यवर्धन की तरफ भी हमें ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमारा सही उद्देश्य किसानों को मूल्य श्रृंखला की एक कड़ी बनाना है ताकि उन्हें उपभोक्ता मूल्य का 40 से 50 प्रतिशत हिस्सा प्राप्त हो सके। मौजूदा परिस्थितियों में उन्हें मात्र 20 से 25 प्रतिशत ही प्राप्त हो रहे हैं।

कृषक उत्पादक संगठनों ने 500 लाख रुपए तक गिरवी रहित ऋण और किसानों द्वारा जुटाए गए शेयर के 25 प्रतिशत का समतुल्य रकम या अधिकतम 50 लाख रुपए तक शेयर अनुदान के रूप में देने और उपक्रम के लिए पूँजी सहायता 50 लाख रुपए से बढ़ाकर 100 लाख करने के लिए सहायता हेतु अनुरोध किया है।

नारियल विकास बोर्ड के मुख्य नारियल विकास अधिकारी श्री सुगत घोष, सचिव डॉ.ए.के.नंदी, निदेशक श्री राजीव पी.जोर्ज और केरल के विविध कृषक उत्पादक संगठनों के प्रतिनिधियों ने बैठक में भाग लिया।

किसानों के लिए कल्पकश्री डेबिट कार्ड

स्टेट बैंक ऑफ त्रावणकोर ने नारियल विकास बोर्ड के सहयोग से किसानों के लिए कल्पकश्री कोम्बो कार्ड का लोकार्पण किया। नारियल विकास बोर्ड से संबद्ध फेडरेटेड नारियल उत्पादक समितियों के सदस्य एटीएमों और बिक्री केन्द्रों में इस कार्ड का उपयोग कर सकते हैं। कोची नगर के नेट्टुंबाश्शेरी में 18 अप्रैल 2015 को संपन्न समारोह का उद्घाटन नारियल विकास बोर्ड के अध्यक्ष श्री टी.के.जोस भाप्रसे और एसबीटी के प्रबंध निदेशक श्री जीवन दास नारायण ने संयुक्त रूप से किया। प्रारंभिक तौर पर एरणाकुलम जिले के पाँच नारियल उत्पादक फेडरेशनों के 65 नारियल किसानों को कार्ड प्रदान किए गए।

बोर्ड के अध्यक्ष श्री टी.के.जोस भाप्रसे और एसबीटी के प्रबंध निदेशक श्री जीवन दास नारायण कल्पकश्री डेबिट कार्ड वितरित करते हुए

भारत में पहली बार कोई कमोडिटी बोर्ड, बैंक के साथ मिलकर संयुक्त रूप से किसानों के लिए कुछ कर रहा है ताकि कृषक उत्पादक संगठनों के सदस्य दीर्घकालिक फसल ऋण और किसान क्रेडिट कार्ड जैसी सुविधाओं का लाभ उठा सकें और उन्नत प्रौद्योगिकी वाले डेबिट कार्ड के रूप में इसका उपयोग कर सके। समारोह में भाषण देते हुए श्री टी.के.जोस ने कहा, "इस प्रकार के कोम्बो कार्ड पहले आईटी पेशेवरों, सरकार-सार्वजनिक क्षेत्र के कर्मचारियों आदि को वितरित किए जाते थे।"

नारियल विकास बोर्ड किसानों के लिए मात्र 25 प्रतिशत सहायिकी ही दे सकते हैं। इसलिए राज्य सरकारों के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि कार्य को और सुगम एवं प्रभावी बनाने के लिए किसानों को 25 प्रतिशत सहायिकी दें। राज्य सरकारों की तरफ से जो कदम उठाया जाएगा वह बैंकों को भी इस कार्य में सफल तरीके से जुड़ने में मदद करेगा। अगर बैंकों को केन्द्रीय और राज्य सरकारों का समर्थन प्राप्त हो तो ऋण प्रदान करके किसानों की मदद करना बैंकों के लिए और आसान हो जाएगा।

उत्तरप्रदेश, हरियाणा, महाराष्ट्र और पंजाब में किसान बिना कोई परियोजना सर्मपित किए या बिना कुछ गिरवी रखे 3 लाख रुपए तक के ऋण के लिए बैंकों से संपर्क कर सकते हैं। केरल के त्रिस्तरीय कृषक समूहों को इस मौके का फायदा उठाना होगा और प्रत्येक किसान के पास इस प्रकार के डेबिट कार्ड होने की स्थिति पैदा करनी होगी। यदि हम विश्व नारियल उद्योग का अवलोकन करें तो देख सकते हैं कि श्रीलंका और फिलिप्पीन्स में किसान 4 प्रतिशत ब्याज पर ऋण प्राप्त कर सकते हैं और इंडोनेशिया में यह 10 प्रतिशत और वियतनाम में शून्य प्रतिशत है। जब हमारे प्रतियोगी ऐसे देश हैं तो हमें यहाँ उपलब्ध सारे अवसरों का भरपूर लाभ उठाना होगा और इस उद्योग की उन्नति के लिए सबसे बढ़िया तरीके से कार्य करना होगा। बोर्ड और एसबीटी का लक्ष्य यह है कि इस वर्ष कम से कम एक लाख कोम्बो कार्ड का वितरण करें। श्री टी.के.जोस ने कृषक उत्पादक संगठनों के सभी किसानों से अनुरोध किया कि वे इस कार्ड का पूरा का पूरा फायदा उठा लें।

कल्पकश्री एक डेबिट कार्ड है, जिसका एटीएमों और बिक्री केन्द्रों/ई कोमेर्स लेनदेनों में नकद वापसी के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। कल्पकश्री कार्ड मैगनेटिक

स्ट्रिप डेबिट कार्ड है और इसमें एसबीटी और सीडीबी का लोगो होता है। कोम्बो कार्ड की एक तरफ कार्ड धारक का नाम छपा होगा जो रुपे प्लैटफार्म में (व्यक्तिगत कार्ड) जारी किया जाता है।

कार्ड धारक स्टेट बैंक ऑफ त्रावणकोर के किसी भी शाखा से अनुमोदन और मंजूरी मिलने के बाद योजना, वित्त मान, इकाई की लागत के अनुसार आवश्यकता आधारित कृषि ऋण के लिए हकदार है। जिन नारियल किसानों के पास कल्पकश्री कार्ड है वे नारियल पौधों के रोपण/पुनर्रोपण के लिए 13 वर्ष की अवधि के साथ प्रति हेक्टर के लिए बारानी परिस्थितियों में 1.26 लाख रुपए और सिंचित बागानों में 1.50 लाख रुपए इकाई लागत के सावधिक ऋण के लिए हकदार हैं। ऋण का विमोचन विविध चरणों में किया जाएगा। इसके अलावा कार्ड धारक फलदायी नारियल पेड़ों के अनुरक्षण के लिए और अंतरा फसलों के लिए अल्पावधिक एसीसी/केसीसी के लिए हकदार है और वित्त प्रबंध का मान निर्दिष्ट फसल के आधार पर होगा।

कल्पकश्री डेबिट कार्ड की विशेषताएं

कल्पकश्री डेबिट कार्ड स्टेट बैंक डेबिट कार्ड के समान मूल्य का ही होता है। इसके मूल्य संबंधी कुछ विवरण निम्नप्रकार हैं।

समारोह में एसबीटी मुख्य महा प्रबंधक श्री ई.के.हरिकुमार ने आशीर्वचन भाषण दिया। एसबीटी महा प्रबंधक (नेटवर्क) श्री एस.हरिशंकर ने स्वागत भाषण दिया और उप महा प्रबंधक श्री वासु ने कृतज्ञता ज्ञापित की।

उत्पाद कोड	***सभी बचत खाता धारक और चालू खाता धारक जो नारियल विकास बोर्ड के साथ संबद्ध फेडरेटेड समितियों के सदस्य हैं, डेबिट कार्ड के लिए हकदार हैं।***
दैनिक एटीएम सीमा	40,000 रुपए
दैनिक पीआ`एस सीमा	50,000 रुपए
बीमा शुल्क	शून्य(सिर्फ पहले वर्ष के लिए)
वार्षिक शुल्क	112 रुपए(100 रुपए + सेवा कर) (दूसरे वर्ष से)
कार्ड का प्रकार	हस्ताक्षर आधारित/पिन आधारित
वैधता	जारी करने की तारीख से 20 साल
कार्ड का प्रकार	देश में उपयोगी
निष्ठा अंक	पीओएस में खर्च किए जाने वाले हर 100 के लिए 2.5 अंक
प्लैटफार्म/प्रौद्योगिकी	रुपे प्लैटफार्म/मैगस्ट्रिप
कार्ड प्राप्यता	हस्ताक्षर फीड बैक सहित पिन
प्रतिपूरक बीम ा	सभी रुपे कार्ड धारक एनपीसीआई के परिपत्र रुपे/20/2014-14 दिनांक 31.3.2015 में निर्धारित निबंधन एवं शर्तों के अनुसार एनपीसीआई के 1 लाख रुपए की बीमा परिरक्षा के हकदार होंगे।
एसएमएस चेतावनी	सभी एटीएम/पीओएस लेनदेनों के लिए

‘भारतीय नारियल पत्रिका’ के वार्षिक चंदे का नवीनीकरण

यदि आप ने भारतीय नारियल पत्रिका के वार्षिक चंदे का अब तक नवीनीकरण नहीं करवाया है तो कृपया नवीनीकरण हेतु 40 रु. का मनीऑर्डर या अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड के नाम बना रेखांकित डिमांड ड्राफ्ट नीचे लिखे पते पर भेजने का कष्ट करें।

अध्यक्ष,

नारियल विकास बोर्ड, केरा भवन, कोची - 682 011.

कृषि मेला 2015

नारियल विकास बोर्ड के राज्य केन्द्र, पित्तापल्ली, ओड़िशा ने 24 से 29 मई 2015 तक पुरी में श्री श्रीखेत्रा सूचना, पुरी, ओड़िशा द्वारा आयोजित छठाँ कृषि मेला 2015 में भाग लिया। नवकलेवर अवसंरचना विकास समिति के अध्यक्ष एवं विधायक श्री महेश्वर मोहंती ने मेले का उद्घाटन किया और प्रदर्शनी स्टालों का दौरा किया।

कृषि मेला 2015 में बोर्ड का स्टाल

बोर्ड ने अपने स्टाल में नारियल पौधों की विभिन्न किस्मों, नारियल पेड़ पर चढ़ने की मशीनों, नारियल की विविध किस्मों के फलों, मूल्य वर्धित नारियल उत्पाद जैसे वर्जिन नारियल तेल, वर्जिन नारियल तेल कैप्स्यूल, डेसिक्केटेड नारियल, नारियल दूध, नारियल जैम, स्क्वैश, नारियल तेल, नारियल दूध पाउडर, दस्तकारियाँ आदि प्रदर्शित कीं। नारियल और नारियल उत्पादों की विभिन्न पहलुओं, बोर्ड की योजनाओं और गतिविधियों पर तरह-तरह के पोस्टर लगाए गए। बोर्ड के पवलियन में प्रदर्शित नारियल पेड़ पर चढ़ने की मशीन मेले का मुख्य आकर्षण था।

ओड़िशा सरकार के माननीय कृषि, मात्स्यिकी एवं पशु संसाधन विकास मंत्री श्री प्रदीप महारथी, राज्य सभा के माननीय सांसद श्री बैष्णब चरण परिदा, पुरी के सांसद एवं भारत सरकार के शहरी विकास स्थायी समिति के अध्यक्ष श्री पिनाकी मिश्रा और पुरी के उप जिलाधीश श्री मधुसूदन दास ने 29 मई 2015 को संपन्न समापन समारोह में भाग लिया।

हज़ारों लोग मेला देखने के लिए आए। पुरी ओड़िशा का प्रमुख नारियल उत्पादक जिला होने के नाते कृषि मेला 2015 में पाँच दिनों की सहभागिता से नारियल खेती प्रौद्योगिकियों, बोर्ड की गतिविधियों और योजनाओं के बारे में जागरूकता पैदा करने में मदद मिली।

चीन के एयरलाइन ने उपयोग में लाए गए कुकिंग तेल ईंधन से पहली उड़ान भरी

यूएस एयरक्राफ्ट जायन्ट बोयिंग से प्राप्त विवरण के अनुसार चाइना नेशनल एविएशन फ्युअल कंपनी और ऊर्जा क्षेत्र के अतिकाय सिनोपेक द्वारा सप्लाई किए गए जैव ईंधन से हैनान एयरलाइन्स फ्लाइट ने शांगहाई से बीजिंग तक पहली उड़ान भरी। चूँकि वहाँ की सरकार पर्यावरणिक सुस्थिरता को बढ़ावा देने की मांग की है, इसलिए जैव ईंधन का प्रयोग करके देश

की यह पहली उड़ान थी। बोयिंग 737 ने 50-50 अनुपात में परंपरागत जेट ईंधन और चीन के रेस्तराँ से एकत्रित अवशिष्ट कुकिंग तेल से बनाए गए जैव ईंधन का प्रयोग किया था। एक बोयिंग वक्ता ने एएफपी को इसकी पुष्टि दी है कि उड़ान पूरा हुए एक हफ्ता हो चुका है।

उपयोग किए गए कुकिंग तेल को चीन में गटर तेल कहते हैं। यह तेल मीडिया का निशाना बन गया और इस बात का खुलासा हुआ कि गैर कानूनी तरीके से इस अवशिष्ट उत्पाद का पुनःउपयोग कभी कभी मनुष्य की खपत के लिए कैसे होता है। पर्यावरण संबंधी चीनी वृत्तचित्र "अंडर द डॉम" में यह कहते हुए सिनोपेक की काफी आलोचना हुई थी कि अवशिष्ट तेल का उपयोग बेहतर प्रयोजनों के लिए किया जाना चाहिए। "यह सिनोपेक को वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीय आविष्कारों में निरंतर प्रगति हासिल करने और प्रकृति का समर्थन करते हुए कम उत्सर्जन को बढ़ावा देने के लिए पूरी तरह वचनबद्ध बनाया है," सिनोपेक ने कहा। मात्र जैव ईंधन का प्रयोग करके विश्व की पहली उड़ान वर्ष 2012 में हुई थी जब कैनडा की राजधानी ओटावा से हवाई जहाज़ ने उड़ान भरी थी। कई अन्य हवाई जहाज़ें परंपरागत पेट्रोलियम आधारित जेट ईंधन के साथ जैव ईंधन मिश्रित करके उड़ानें भरी हैं। आस्ट्रेलिया का क्वांटास और एयर कैनडा ने हवाई जहाज़ों की उड़ान के लिए जैव ईंधन का उपयोग करके परीक्षण चलाए हैं। (यूसीएपी बुलेटिन)

हॉर्टि संगम मेला 2015, झारखंड

माननीय केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री राधा मोहन सिंह नाविबो स्टाल में

नारियल विकास बोर्ड ने 27-28 जून तक झारखंड में हज़ारिगंज के बराही में संपन्न हॉर्टि संगम मेला 2015 में भाग लिया। माननीय केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री राधा मोहन सिंह ने दो दिवसीय मेले का उद्घाटन किया।

अपने उद्घाटन भाषण में मंत्रीजी ने भारत के कृषि क्षेत्र की अहमियत के बारे में बात की। डॉ.श्यामलाल, सहायक निदेशक, नारियल विकास बोर्ड ने नाविबो स्टाल में मंत्री महोदय का स्वागत किया।

कार्यक्रम के सिलसिले में एक कृषि संगोष्ठी भी आयोजित हुई जिसमें विशेषज्ञों ने विभिन्न फसलों की विभिन्न प्रबंधन प्रणालियों पर बात की। हज़ारों किसानों ने मेले का दौरा किया। आगंतुकों ने नारियल बीजपौधों पर काफी दिलचस्पी जताई और इसकी मांग भी अधिक थी।

हॉर्टि संगम मेले में नाविबो स्टाल का दृश्य

एप-टेक 2015

नारियल विकास बोर्ड ने आंध्र प्रदेश प्रौद्योगिकी विकास एवं संवर्धन केन्द्र (एपीटीडीसी) और कोन्फेडरेशन ऑफ इंडियन इंडस्ट्री (सीआईआई) द्वारा 5 से 7 जून 2015 तक केन्द्रीय तंबाकू अनुसंधान संस्थान, राजमुंड्री में आयोजित एप-टेक 2015 में भाग लिया। प्रदर्शनी आधुनिक खेती के लिए विकसित प्रौद्योगिकियों पर लक्षित थी जिसमें जानकारियों का आदान-प्रदान, प्रौद्योगिकी निदर्शन, व्यापार एवं व्यवसाय संवाद और कृषीय मूल्य श्रृंखला के क्षेत्र में हुई नवीनतम विकासों से लाभभोगियों को परिचित कराने हेतु उचित मंच प्रदान किया गया। डॉ.डी. दामोदर रेड्डी, निदेशक, केन्द्रीय तंबाकू अनुसंधान संस्थान, राजमुंड्री ने पूर्वी गोदावरी के जिलाधीश श्री एच.अरुण कुमार भाप्रसे और आंध्र प्रदेश के संयुक्त कृषि निदेशक श्री विजयकुमार की समुपस्थिति में 5 जून 2015 को बोर्ड के स्टाल का उद्घाटन किया। प्रदर्शनी में स्पाइसेस बोर्ड, सीटीआरआई, बागवानी विभाग और फार्म मशीनरी विनिर्माताओं, टाटा स्टील लिमिटेड, महीन्द्रा एंड महीन्द्रा, जेसीबी इंडिया लिमिटेड ने भाग लिया और अपने उत्पाद प्रदर्शित किए।

एप टेक 2015 में बोर्ड का स्टाल

बोर्ड ने अपने स्टाल में नारियल के विविध मूल्यवर्धित उत्पाद जैसे पैकेटबंद नीरा, पैकेटबंद डाब पानी, पैकेटबंद नारियल दूध पाउडर, वर्जिन नारियल तेल, मिष्टान्न, नारियल की लकड़ी और खोपड़ी से बने हस्तशिल्प आदि प्रदर्शित किए। विविध नारियल उत्पादों, नारियल की विविध किस्मों, बोर्ड की योजनाओं और नारियल उत्पादों के स्वास्थ्यपरक गुणों के बारे में सूचनात्मक पोस्टर भी लगाए गए। प्रदर्शनी के दौरान बोर्ड के वेगिवाड़ा स्थित प्रबीउ फार्म से नारियल के बीजपौध लाकर बिक्री की गई। नारियल के बीजपौध और विभिन्न नारियल किस्मों के फलगुच्छे भी बोर्ड के स्टाल में प्रदर्शित किए गए। किसानों, उद्यमियों, नारियल उत्पादक समितियों/नारियल उत्पादक फेडरेशनों के कार्यकर्ताओं, विविध संस्थानों के छात्र-छात्राओं और कृषि एवं बागवानी विभाग के अधिकारियों ने बोर्ड के स्टाल का दौरा किया।

नवाँ एशियन इंटरनेशनल ट्रेड एंड टूरिज़म एक्स्पो 2015

नारियल विकास बोर्ड ने सीईएमएस ग्लोबल, ढाका द्वारा इंटरनेशनल कन्वेंशन सिटी, बसुंधरा, ढाका में 10 से 14 जून 2015 तक आयोजित नवाँ एशियन इंटरनेशनल ट्रेड एंड टूरिज़म एक्स्पो 2015 में भाग लिया।

नारियल विकास बोर्ड के सचिव डॉ.ए.के.नंदी बोर्ड के स्टाल में

बांग्लादेश प्रधानमंत्री के राजनीतिक सलाहकार श्री एच टी इमाम ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री अब्दुल मतलब अहमद, अध्यक्ष, फेडरेशन ऑफ बांग्लादेश चेंबेर्स ऑफ कोमेर्स एंड इंडस्ट्री और श्री हुमायून रशिद, कार्यकारी अध्यक्ष, ढाका चेंबर ऑफ कोमेर्स एंड इंडस्ट्री उपस्थित थे। श्री इमाम ने अपने विषय प्रवेश भाषण में कहा कि बांग्लादेश और भारत के बीच व्यापार बढ़ाने के पर्याप्त अवसर मौजूद हैं और वांछित विकासात्मक लक्ष्य प्राप्त करने के लिए आपस में हाथ मिलाकर बांग्लादेश और भारत प्रगति की राह पर अग्रसर हो सकते हैं। श्री इमाम ने हाल में भारत के प्रधानमंत्री द्वारा बांग्लादेश में किए गए दौरे को दो मित्र देशों के बीच द्विपक्षीय संबंध की मिसाल की संज्ञा दी।

नवाँ एशियन इंटरनेशनल ट्रेड एंड टूरिज़म एक्स्पो 2015 में बोर्ड का स्टाल

प्रदर्शनी में 10 देशों से तकरीबन 100 प्रदर्शकों ने अपने उत्पाद प्रदर्शित किए। भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका, सिंगापूर, थाईलेंड, म्यानमर, भूटान, मलेशिया, वियतनाम और मेज़बान देश बांग्लादेश एक्स्पो के सहभागी देश थे। प्रदर्शकों ने खाद्य और पेय उत्पाद, स्वास्थ्य संरक्षण उत्पाद, सौंदर्यवर्धक उत्पाद, फैशन और एक्सेसरीज़, वस्त्र, घरेलू उत्पाद, कलाकृतियाँ, उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स, मशीनरी, रियल एस्टेट, पर्यटन व यात्रा आदि की विपुल श्रेणी प्रदर्शित की।

प्रदर्शनी में बोर्ड का प्रतिनिधित्व करते हुए डॉ.ए.के.नंदी, सचिव, नारियल विकास बोर्ड ने भाग लिया। नारियल उत्पादों के प्रति जागरूकता पैदा करने और बाज़ार अवसर खोलने के लिए बोर्ड के स्टाल में नारियल के मूल्यवर्धित उत्पादों की बहुत बड़ी श्रेणी प्रदर्शित की गई। डॉ.नंदी ने वर्जिन नारियल तेल, नीरा, डाब पानी आदि के गुणों के बारे में बताया और नारियल आधारित अन्य मूल्यवर्धित उत्पाद जैसे डेस्सिकेटेड नारियल, नारियल दूध, नारियल दूध पाउडर आदि के सुविधाजनक उपयोगों के बारे में आगंतुकों को बताया जिससे बांग्लादेश में इन उत्पादों के प्रति काफी रुचि बढ़ी। हेल्थफिट्ज़ एनर्जी प्रोडक्ट

प्राइवेट लिमिटेड, कोलकाता के श्री जे.एल.मुखर्जी ने 'बेबी फस्ट' ब्रैंड नाम से बने नारियल आधारित बेबी ऑयल के सैंपल वितरित किए और स्टाल में प्रदर्शित किए। आगंतुकों ने इसकी खूब तारीफ की और अधिकांश लोगों ने स्टाल से ही पूरा का पूरा माल खरीद लिया। नारियल आधारित कई अन्य मूल्यवर्धित उत्पाद जैसे वर्जिन नारियल तेल, नारियल दूध, नारियल दूध पाउडर, बदन के लिए वर्जिन नारियल तेल आधारित मालिश तेल, वर्जिन नारियल तेल आधारित माउथ फ्रेशनर, नारियल तेल आधारित केश क्रीम, शुद्ध नारियल तेल (खोपरा आधारित), पैकेटबंद डाब पानी, नारियल चिप्स, नीरा से बने स्प्रेड एवं सिरप और विविध भारतीय कंपनियों द्वारा उत्पादित सक्रियित कार्बन आदि भी स्टाल में प्रदर्शित किए गए जिसके प्रति आगंतुकों ने काफी दिलचस्पी दिखाई। नारियल विकास बोर्ड के स्टाल ने अनेकों को आकर्षित किया और प्रदर्शित मूल्यवर्धित उत्पादों की श्रेणी देखकर आम जनता काफी आकृष्ट हुए।

यह महसूस हुआ कि वर्तमान में बांग्लादेश की जनता नारियल के मूल्यवर्धित उत्पादों के बारे में बहुत कम जानकारी ही रखती है। नारियल आधारित उत्पादों के बारे में उनकी जानकारी डाब, नारियल गरी और खोपरा आधारित नारियल तेल तक ही सीमित है। नारियल के विविध मूल्यवर्धित उत्पादों के बारे में सुनकर, इसकी खूबियों को जानने और परखने के बाद लोगों ने इसके प्रति काफी दिलचस्पी दिखाई। नारियल विकास बोर्ड द्वारा प्रदान की गई प्रौद्योगिकियों का प्रयोग करके बनाए गए गुणवत्तापूर्ण भारतीय नारियल उत्पादों ने आगंतुकों के दिलों को जीत लिया।

कोयंबत्तूर में उद्यमियों की बैठक आयोजित

नारियल विकास बोर्ड ने कृषि विभाग और तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय के सहयोग से रासी सीड्स हॉल, तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयंबत्तूर में 13 जून 2015 को उद्यमियों की एक बैठक आयोजित की। विविध विभागों, तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय और सक्षम उद्यमियों को मिलाकर तकरीबन 250 लोगें ने बैठक में भाग लिया। श्री राजेश लखोनी भाप्रसे, कृषि उत्पादन आयुक्त, तमिलनाडु सरकार ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

उद्यमियों की बैठकका उद्घाटन

श्री राजेश लखोनी भाप्रसे, कृषि उत्पादन आयुक्त, तमिलनाडु सरकार ने अपने उद्घाटन भाषण में उल्लेख किया कि इस बैठक का लक्ष्य नारियल आधारित उत्पादों को बढ़ावा देना और नारियल का मूल्यवर्धन करना है। उन्होंने अनुरोध किया कि नारियल अनुसंधान केन्द्र, वेप्पांकुलम और अलियार नगर में नारियल विकास बोर्ड के सहयोग से नीरा प्रशिक्षण चलाया जाए। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि दोनों नारियल अनुसंधान केन्द्रों से लोगों को मास्टर तकनीशियन प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए नाविबो प्रौद्योगिकी संस्था, वाष़क्कुलम में प्रतिनियुक्त किया जाए। कृषि उत्पादन आयुक्त ने यह भी उल्लेख किया कि इस वर्ष के दौरान नाविबो योजनाओं के लिए आबंटित निधि में कमी हुई है और नाविबो से अनुरोध किया है कि नाविबो योजनाओं के लिए अधिक निधि आबंटित करें और यहाँ एक प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म स्थापित करें।

श्री लुम्हार ओबेद, निदेशक, नाविबो, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई ने अपने स्वागत

भाषण में सूचित किया कि इस बैठक का उद्देश्य नारियल की नई प्रौद्योगिकियों से लोगों का परिचय कराना है। उन्होंने कहा कि भारत में नारियल क्षेत्र की दृष्टि से तमिलनाडु का योगदान 21 प्रतिशत है और उत्पादन 31.3 प्रतिशत है। डॉ.एम. राजेन्द्रन भाप्रसे, कृषि निदेशक, तमिलनाडु सरकार ने अपने विषय प्रवेश भाषण में कहा कि भारत में नारियल उत्पादन का एक तिहाई हिस्सा तमिलनाडु का है और उत्पादकता में भी तमिलनाडु आगे है। उन्होंने पुनरुज्जीवन योजना तमिलनाडु में भी कार्यान्वित करने के लिए नाविबो से अनुरोध किया। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि तमिलनाडु सरकार ने उदुमलपेट के धली गाँव में नारियल विकास बोर्ड का प्रबीउ फार्म स्थापित करने हेतु एकड़ ज़मीन दी है और वहाँ पर कार्य प्रगति से चल रहा है। श्रीमती टी बालसुधाहरी, उप निदेशक, नाविबो, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई के धन्यवाद ज्ञापन के साथ उद्घाटन सत्र का समापन हुआ।

इसके बाद संपन्न हुए तकनीकी सत्र में श्री राजमाणिक्कम, प्रोफसर और अध्यक्ष, सीआरएस, अलियार नगर संचालक रहे। विषय विशेषज्ञों ने नारियल के मूल्यवर्धित उत्पाद, नीरा, नारियल उत्पादों की मशीनरियाँ, ऋण सुविधाएं एवं योजनाएं आदि विविध पहलुओं पर बात की। सहभागियों ने अनुरोध किया कि नारियल दूध और नारियल तेल के औषधीय उपयोगों के बारे में मीडिया के ज़रिए व्यापक प्रचार करें।

कार्यक्रम के सिलसिले में एक प्रदर्शनी भी आयोजित की गई जिसमें तिरुकोची, कैप्पुष़ा और पालक्काट नारियल उत्पादक कंपनियों, सीआईटी वाष़क्कुलम और तमिलनाडु पाम डेवलपमेंट बोर्ड ने अपने उत्पाद प्रदर्शित किए। प्रदर्शनी में नीरा और इसके मूल्यवर्धित उत्पाद भी प्रदर्शित किए गए।

गोवा में कल्परसा का लोकार्पण

हाल में गोवा में नारियल के पुष्पक्रम से निकाला गया ताज़ा, निर्मल और अकिण्वित ऊर्जा दायक पेय कल्परसा का लोकार्पण संपन्न हुआ। श्रीकृष्णा प्लान्टेशन्स, गोवा ने आईसीएआर-केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान (सीपीसीआरआई) के साथ कोको-सैप चिल्लर प्रौद्योगिकी से इसके एकत्रीकरण के लिए एक करार ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया। रिसोर्टों एवं स्थानीय बाज़ारों में इसकी बिक्री की जाएगी।

इसमें परिरक्षकों और अन्य संयोजी पदार्थों का अंश बिलकुल भी नहीं है। केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड़ और कृष्णा एंटरप्राइसेस, गोवा द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित समारोह में डॉ.एन.के.कृष्णकुमार, उप महा प्रबंधक(बागवानी विज्ञान), आईसीएआर ने कल्परसा का लोकार्पण करते हुए इस बात पर बल दिया कि कल्परसा संपूर्ण कुदरती पेय है और अन्य एरेटेड पेयों के बदले में इसका उपयोग किया जा सकता है। पौष्टिक तत्वों और अन्य फाइटोकेमिकलों जैसे खनिज पदार्थों, अमिनो अम्लों, विटामिनों और प्रतिऑक्सीकारकों से संपुष्ट होने के कारण यह स्वास्थ्य के लिए उचित पेय ही नहीं बल्कि सर्वोत्तम स्पोर्ट पेय भी है। उन्होंने नानु एंटरप्राइसेस के अध्यक्ष श्री कृष्णा(बाउ) नाइक को बोतलबंद कल्परसा जिसे नानुकल्परसा का नाम दिया है, देकर इसका लोकार्पण किया। श्री प्रवास नाइक, प्रबंध निदेशक, सर्वश्री कृष्णा प्लान्टेशन्स प्राइवेट लिमिटेड

डॉ.एन.के.कृष्णकुमार, उप महा प्रबंधक(बागवानी विज्ञान), आईसीएआर कल्परसा का लोकार्पण करते हुए

ने प्रतिनिधिगणों का स्वागत किया और वादा किया कि बहुत जल्द ही नानुकल्परसा गोवा के स्थानीय बाज़ारों में भी उपलब्ध कराएंगे।

डॉ.पी. चौदप्पा, निदेशक, केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड ने कल्परसा एकत्रीकरण की नई पद्धतियों, इसके गुणवत्ता मानदंडों, मूल्य वर्धन, विपणन और वित्तीय लाभों के बारे में विस्तृत विवरण दिया। उन्होंने कहा कि कल्परसा की टैप्पिंग शुरू करने से अर्थव्यवस्था, पर्यावरण, कृषक समूह और उपभोक्ताओं को कई लाभ प्राप्त होंगे। नारियल के फलोत्पादन से जो आय प्राप्त होती है, उससे कम से कम दस गुना ज्यादा आय कल्परसा की टैप्पिंग से प्राप्त होगी। श्री ओरलैंडो रोड्रिग्स, कृषि निदेशक ने केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड़ द्वारा 'कल्परसा-एकत्रीकरण और मूल्यवर्धन' पर प्रकाशित तकनीकी बुलेटिन का विमोचन किया। उन्होंने कल्परसा के एकत्रीकरण और विपणन में अपनाई जा रही नई पद्धतियों की सराहना की और अन्य राज्यों के फेडरेशनों की तरह गोवा में भी फेडरेशन गठित करने का आशय सामने रखा।

डॉ.एन.पी.सिंह, निदेशक, केन्द्रीय तटवर्ती कृषि अनुसंधान संस्थान, गोवा ने आशीर्वचन दिया। डॉ.के.बी.हेब्बार, अध्यक्ष, पीबी व पीएचटी प्रभाग, केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड ने कोको सैप चिल्लर का प्रयोग करके कल्परसा एकत्रित करने का तरीका प्रदर्शित किया। बैठक में किसानों, उद्यमियों और अकादमी सदस्यों ने भाग लिया।

नारियल विकास बोर्ड में वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक संपन्न

वित्तीय वर्ष 2014-15 के दौरान विभिन्न राज्यों में बोर्ड की गतिविधियों और उपलब्धियों की समीक्षा करने और 2015-16 की कार्ययोजना पर चर्चा करने के लिए बोर्ड में 1-2 जून, 2015 को वरिष्ठ आधिकारियों की बैठक संपन्न हुई। श्री टी.के.जोस भाप्रसे, अध्यक्ष ने बैठक की अध्यक्षता की।

वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक की झाँकी

श्री टी.के.जोस भाप्रसे, अध्यक्ष ने अपने आमुख भाषण में प्रमुख नारियल उत्पादक राज्यों में गठित कृषक उत्पादक संगठनों के द्वारा नारियल क्षेत्र में हुई संरचनात्मक परिवर्तनों के बारे में बात की। कृषक उत्पादक संगठनों की त्रिस्तरीय प्रणाली ने निम्न तबके तक पहुँचने में बोर्ड की मदद की। कृषक उत्पादक संगठनों के ज़रिए बोर्ड के कार्यक्रम कार्यान्वित करने से इसका कार्यान्वयन बेहतर तरीके से संभव हुआ और अन्य योजनाओं के साथ समवाय भी सुगम हुआ। नाविबो योजनाओं के बेहतर कार्यान्वयन के लिए महाराष्ट्र, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, गोवा जैसे अन्य नारियल उत्पादक राज्यों में भी कृषक उत्पादक संगठन गठित करने की ज़रूरत है। अध्यक्ष ने वरिष्ठ अधिकारियों से कहा कि नेतृत्वगुण विकसित करके काम में लाया जाए और राज्य एजेंसियों के साथ आपसी विचार-विमर्श करते रहें।

श्री सुगत घोष, मुख्य नारियल विकास अधिकारी ने गत वित्तीय वर्ष के दौरान बोर्ड की प्रमुख गतिविधियों और 2015-16 की चालू वर्ष के दौरान नाविबो की कार्ययोजना पर प्रकाश डाला। डॉ. ए.के.नंदी, सचिव ने बोर्ड की वित्तीय और प्रशासनिक स्थिति के बारे में संक्षिप्त परिचय दिया और सभी इकाई कार्यालयों से अनुरोध किया कि नारियल कृषक समुदाय की उन्नति के लिए सारी गतिविधियाँ दूरदर्शिता और ईमानदारी के साथ करें। इकाई कार्यालयों के संबंधित अधिकारियों ने अपने अपने कार्यालयों की उपलब्धियों और चालू वर्ष के लिए नियत लक्ष्य पर प्रस्तुति की।

बैठक में बोर्ड के निदेशक श्री राजीव पी.जोर्ज, डॉ.टी.आई.मात्युकुट्टी एवं श्री लुम्हार ओबेद तथा उप निदेशक और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया।

नाविबो फार्म अनुसंधान गतिविधियों की पहल करेंगे

नारियल विकास बोर्ड के अधीन कार्यरत नौ प्रबीउ फार्मों के फार्म प्रबंधकों और सहायक निदेशकों की बैठक 8 और 9 जून 2015 को कोची में संपन्न हुई। इस बैठक में अनुसंधान गतिविधियों की नई पहल की शुरुआत करने का निर्णय लिया गया। प्रबीउ फार्म विभिन्न बुआई प्रणालियों में नारियल बीजपौधों (लंबी और बौनी)की ओज, नर्सरी में (लंबी और बौनी) नारियल बीजपौधों की वृद्धिपरक विशेषताओं पर सिंचाई और पलेवा करने का असर, प्रबीउ फार्मों की विभिन्न जलवायु परिस्थितियों में विविध कृषिजोपजातियों का किस्मवार निष्पादन, नारियल बागानों में दीर्घकालीन फसल और हरी खाद के साथ अंतरा खेती का प्रभाव आदि जैसे विविध अनुसंधान कार्यक्रम चलाएंगे।

बैठक का दृश्य

बोर्ड के प्रबीउ फार्मों के ज़रिए अनुसंधान में परिवर्तन लाने का ठोस प्रयास किया जाएगा। बोर्ड के निदेशक श्री राजीव पी.जोर्ज ने अधिकारियों का स्वागत किया और श्री सुगत घोष, मुख्य नारियल विकास अधिकारी ने आमुख भाषण दिया। श्री पी.शबरीनाथन, वित्त अधिकारी ने अपनी प्रस्तुति में इकाई कार्यालयों और फार्मों की विवरण सूची का लेखा-जोखा बनाए रखने हेतु ऑनलाइन सोफ्टवेयर की आवश्यकता के बारे में बात की। डॉ.रमणी गोपालकृष्णन, कंसल्टन्ट ने नाविबो प्रबीउ फार्मों में अनुसंधान कार्य चलाने की ज़रूरत के बारे में बात की। सहायक निदेशकों/फार्म प्रबंधकों ने संबंधित फार्मों की मौजूदा स्थिति की प्रस्तुति की। समापन भाषण में बोर्ड के अध्यक्ष श्री टी.के.जोस भाप्रसे ने कहा कि नाविबो फार्मों का प्रथम लक्ष्य गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियों का उत्पादन, देश में नारियल का उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाना और संकर बीजपौधों का उत्पादन बढ़ाना आदि होना चाहिए।

श्री सुगत घोष, मुख्य नारियल विकास अधिकारी ने मोडल निदर्शन फार्म के रूप में नाविबो प्रबीउ फार्मों की कायापलट करने के लिए आह्वान किया। श्री प्रमोद पी.कुरियन, सहायक निदेशक ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

नीरा उत्पादों का लोकार्पण

कृषि भवन, नई दिल्ली में 22 जून 2015 को नीरा और इसके मूल्यवर्धित उत्पादों का लोकार्पण संपन्न हुआ। श्री संजीव चोपड़ा भाप्रसे, संयुक्त सचिव, एमआईडीएच ने नारियल विकास बोर्ड के अध्यक्ष श्री टी.के.जोस भाप्रसे से नीरा उत्पाद ग्रहण किए। श्रीमती वी.उषा राणी भाप्रसे, बागवानी आयुक्त और सचिव, आंध्र प्रदेश सरकार, डॉ.एस.के.मल्होत्रा, बागवानी आयुक्त, भारत सरकार, श्री राजेश लखोनी भाप्रसे, कृषि उत्पादन आयुक्त, तमिलनाडु, श्री राजीव चावला भाप्रसे, प्रधान सचिव(बागवानी), कर्नाटक और डॉ.के.प्रतापन, निदेशक, राज्य बागवानी मिशन, केरल भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

श्री संजीव चोपड़ा भाप्रसे, संयुक्त सचिव, एमआईडीएच नीरा उत्पादों का लोकार्पण करते हुए

बाज़ार समीक्षा

मार्च 2015

मुख्यांश

- मार्च 2015 के दौरान देश के प्रमुख बाज़ारों में पेषण खोपरा और नारियल तेल के भाव में बढ़ाव का रुख रहा।
- पिछले महीने की तुलना में मार्च 2015 के दौरान नारियल तेल के अंतर्राष्ट्रीय भाव में घटाव का रुख रहा।
- मार्च 2015 के दौरान देश के प्रमुख बाज़ारों में नारियल, खोपरा और नारियल तेल के भाव में बढ़ाव का रुख रहा।

नारियल तेल

कोच्ची बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 13800 रुपए पर खुला जो 4 मार्च को घटकर 13700 रुपए हुआ और 10 मार्च तक स्थिर रहा और तत्पश्चात मिश्रित रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 500 रुपए के कुल लाभ से 14300 रुपए पर बंद हुआ। आलप्पुषा बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 13300 रुपए पर खुला और महीने भर स्थिर रहा। कोषिक्कोट बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 14200 रुपए पर खुला और 5 मार्च तक स्थिर रहा। तत्पश्चात बढ़ाव का रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 900 रुपए के कुल लाभ सहित 15200 रुपए पर बंद हुआ। कोच्ची बाज़ार में मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 13940 रुपए और आलप्पुषा बाज़ार में प्रति क्विंटल 13304 रुपए था जो पिछले महीने के औसतन भाव से नाममात्र कम थे। पिछले वर्ष के इसी महीने के औसतन भाव की तुलना में इन बाज़ारों के भाव क्रमशः 11 और 7 प्रतिशत अधिक थे। कोषिक्कोट बाज़ार का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 14868 रुपए था जो पिछले महीने से नाममात्र अधिक और पिछले वर्ष के इसी महीने के औसतन भाव से 10 प्रतिशत अधिक था। तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 13168 रुपए था जो पिछले महीने से नाममात्र अधिक और पिछले वर्ष इसी महीने के औसतन भाव से 8 प्रतिशत अधिक था।

पेषण खोपरा

कोच्ची बाज़ार में एफएक्यू खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 9300 रुपए पर खुलकर 4 को घटकर 9200 रुपए हुआ और 10 तक स्थिर रहा। तत्पश्चात् मिश्रित रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 600 रुपए के कुल लाभ के साथ 9900 रुपए पर बंद हुआ। आलप्पुषा बाज़ार में राशि खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 9400 रुपए पर खुलकर 7 तक स्थिर रहा और 9 को घटकर 9300 रुपए हुआ। 12 को भाव सुधरकर 9450 रुपए हुआ और उसके बाद मिश्रित रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 100 रुपए के कुल लाभ के साथ 9500 रुपए पर बंद हुआ।

कोषिक्कोट बाज़ार में ऑफिस पास खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 9500 रुपए पर खुला और बढ़ाव का रुख दिखाकर 17 को 10000 रुपए पर पहुँचा। 18 को भाव घटकर 9950 रुपए हुआ और मिश्रित रुख दिखाकर प्रति क्विंटल 500 रुपए का कुल लाभ सहित 10000 रुपए पर बंद हुआ। कोच्ची बाज़ार में मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 9508 रुपए और आलप्पुषा बाज़ार में 9454 रुपए रहा जो पिछले महीने से नाममात्र कम तथा पिछले वर्ष के इसी महीने से क्रमशः 6 और 9 प्रतिशत अधिक था। कोषिक्कोट बाज़ार में मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 9842 रुपए रहा जो पिछले महीने से नाममात्र अधिक और पिछले वर्ष के इसी महीने से 9 प्रतिशत अधिक था। तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में पेषण खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 9412 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र अधिक और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 10 प्रतिशत अधिक था। आंध्र प्रदेश के अंबाजीपेटा बाज़ार में पेषण खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 8879 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 10 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 21 प्रतिशत अधिक था।

खाद्य खोपरा

कोषिक्कोट बाज़ार में राजापुर खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 14146 रुपए था जो पिछले महीने के भाव से 7 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 50 प्रतिशत अधिक था।

गोल खोपरा

कोषिक्कोट बाज़ार में गोल खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 12592 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 8 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा 43 प्रतिशत अधिक था।

कर्नाटक के तिप्तूर एपीएमसी बाज़ार में गोल खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 12829 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 5 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा 56

प्रतिशत अधिक था। कर्नाटक के अरसिकेरे एपीएमसी बाज़ार में गोल खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 12204 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र कम और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा 49 प्रतिशत अधिक था।

सूखा नारियल

कोष़िक्कोट बाज़ार में सूखे नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 11876 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र अधिक और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 35 प्रतिशत अधिक था।

नारियल

नेडुमंगाड़ बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 16000 रुपए था जो पिछले महीने के बराबर और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 10 प्रतिशत अधिक था।

कर्नाटक के अरसिकेरे एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 12385 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 9 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा 65 प्रतिशत अधिक था।

बंगलुरु एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 16442 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 4 प्रतिशत अधिक और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 94 प्रतिशत अधिक था।

मैंगलूर एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए ग्रेड 1 गुणवत्ता के नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 18000 रुपए था जो पिछले महीने के बराबर और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 50 प्रतिशत अधिक था।

डाब

कर्नाटक के मद्दूर एपीएमसी बाज़ार में डाब का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 9404 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 4 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 51 प्रतिशत अधिक था।

मार्च महीने के दौरान महानगरों में रिपोर्ट किए गए डाब के भाव निम्नलिखित हैः

नगर	प्रति फल दर
नई दिल्ली	30 रु. से 35 रु.
कोलकाता	20 रु. से 25 रु.
मुम्बई	35 रु. से 40 रु.
चेन्नई	30 रु. से 35 रु.
पुणे	35 रु. से 40 रु.
हैदराबाद	25 रु. से 30 रु.
अहमदाबाद	25 रु. से 30 रु.
बंगलुरु	25 रु. से 30 रु.
कोच्ची	30 रु. से 35 रु.

अंतर्राष्ट्रीय

फिलिप्पींस (सी.आई.एफ. रोटरडैम) बाज़ार में नारियल तेल का मासिक औसतन भाव प्रति मेट्रिक टन 1102 यूएस $ था जो पिछले महीने की अपेक्षा 10 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा नाममात्र कम था।

फिलिप्पींस में महीने के दौरान नारियल तेल का देशी भाव प्रति मेट्रिक टन 1028 यूएस $ और इंडोनेशिया में 1057 यूएस $ था। महीने के दौरान पाम तेल, पाम गरी तेल और सोयाबीन तेल का अंतर्राष्ट्रीय भाव प्रति मेट्रिक टन क्रमशः 667 यूएस $, 1032 यूएस $ और 690 यूएस $ था।

अप्रैल 2015

मुख्यांश

- अप्रैल 2015 के दौरान देश के प्रमुख बाज़ारों में पेषण खोपरा और नारियल तेल के भाव में मिश्रित रुख रहा।
- पिछले महीने की तुलना में अप्रैल 2015 के दौरान नारियल तेल के अंतर्राष्ट्रीय भाव में घटाव का रुख रहा।

अप्रैल 2015 के दौरान देश के प्रमुख बाज़ारों में नारियल, खोपरा और नारियल तेल के भाव में मिश्रित रुख रहा।

नारियल तेल

कोच्ची बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 14300 रुपए पर खुला जो 7 अप्रैल को बढ़कर 14400 रुपए और 9 अप्रैल को फिर से बढ़कर 14500 रुपए हुआ और 23 अप्रैल तक स्थिर रहा। तत्पश्चात घटाव का रुख दर्शाकर 14300 रुपए पर बंद हुआ। आलप्पुष़ा बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 13300 रुपए पर खुला और बढ़कर 13800 रुपए हुआ। 13 अप्रैल को भाव घटकर 13300 रुपए हुआ जो पूरे महीने तक स्थिर रहा। कोष़िक्कोट बाज़ार में नारियल तेल का भाव जो प्रति क्विंटल 15200 रुपए पर खुला था, 11 अप्रैल को सुधर कर प्रति क्विंटल 15300 रुपए हुआ और 25 तक स्थिर रहा और तत्पश्चात घटाव का रुख दिखाकर प्रति क्विंटल 100 रुपए के कुल लाभ सहित 15100 रुपए पर बंद

हुआ। कोच्ची बाज़ार में मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 14420 रुपए और कोष़िक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 15248 रुपए था जो पिछले महीने के औसतन भाव से नाममात्र अधिक और पिछले वर्ष के इसी महीने के औसतन भाव से नाममात्र कम था। आलप्पुष़ा बाज़ार का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 13374 रुपए था जो पिछले महीने से 3 प्रतिशत अधिक और पिछले वर्ष के इसी महीने के औसतन भाव से 7 प्रतिशत कम था। तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में मासिक औसतन भाव 13293 रुपए था जो पिछले महीने से नाममात्र अधिक और पिछले वर्ष इसी महीने के औसतन भाव से 4 प्रतिशत कम था।

पेषण खोपरा

कोच्ची बाज़ार में एफएक्यू खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 9900 रुपए पर खुलकर 7 को 10000 रुपए तथा 9 को 10100 रुपए तक बढ़ा और 23 तक स्थिर रहा। तत्पश्चात् घटाव का रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 9900 रुपए पर बंद हुआ। आलप्पुष़ा बाज़ार में राशि खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 9500 रुपए पर खुलकर 2 को 9800 रुपए हुआ और 4 तक स्थिर रहा। 6 को घटकर 9500 रुपए होने के बाद 10 तक स्थिर रहा और बढ़कर 11 को 9900 रुपए हुआ और फिर प्रति क्विंटल 9500 रुपए पर बंद हुआ। कोष़िक्कोट बाज़ार में ऑफिस पास खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 10000 रुपए पर खुला जो बढ़कर 9 को 10500 रुपए पहुँचा। तत्पश्चात घटाव का रुख दिखाकर प्रति क्विंटल 250 रुपए का घाटा सहित 9750 रुपए पर बंद हुआ। कोच्ची बाज़ार में मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 10020 रुपए रहा जो पिछले महीने से 5 प्रतिशत अधिक और पिछले वर्ष के इसी महीने से नाममात्र कम था। आलप्पुष़ा बाज़ार में मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 9543 रुपए रहा और कोष़िक्कोट बाज़ार में मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 10017 रुपए रहा जो पिछले महीने से नाममात्र अधिक और पिछले वर्ष के इसी महीने से नाममात्र कम था। तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में पेषण खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 9507 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र अधिक और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा नाममात्र कम था। आंध्र प्रदेश के अंबाजीपेटा बाज़ार में पेषण खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 9131 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र अधिक और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 17 प्रतिशत अधिक था।

खाद्य खोपरा

कोष़िक्कोट बाज़ार में राजापुर खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 14436 रुपए था जो पिछले महीने के भाव से नाममात्र अधिक और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 14 प्रतिशत अधिक था।

गोल खोपरा

कोष़िक्कोट बाज़ार में गोल खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 12862 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र अधिक और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा 11 प्रतिशत अधिक था।

कर्नाटक के तिप्तूर एपीएमसी बाज़ार में गोल खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 13164 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र अधिक और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा 22 प्रतिशत अधिक था। कर्नाटक के अरसिकेरे एपीएमसी बाज़ार में गोल खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 11696 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 4 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा 13 प्रतिशत अधिक था।

सूखा नारियल

कोष़िक्कोट बाज़ार में सूखे नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 11729 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र कम और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 34 प्रतिशत अधिक था।

नारियल

नेडुमंगाड़ बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 16000 रुपए था जो पिछले महीने के बराबर और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 10 प्रतिशत अधिक था।

अरसिकेरे एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 13681 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 10 प्रतिशत अधिक और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा 42 प्रतिशत अधिक था।

बंगलुरु एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 15731 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा चार प्रतिशत कम और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 92 प्रतिशत अधिक था।

मंगलूर एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए ग्रेड 1 गुणवत्ता के नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 18000 रुपए था जो पिछले महीने के बराबर और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 50 प्रतिशत अधिक था।

डाब

कर्नाटक के मद्दूर एपीएमसी बाज़ार में डाब का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 10462 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 11 प्रतिशत अधिक और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 49 प्रतिशत अधिक था।

अप्रैल महीने के दौरान महानगरों में रिपोर्ट किए गए डाब के भाव निम्नलिखित हैं:

नगर	प्रति फल दर
नई दिल्ली	30 रु. से 35 रु.
कोलकाता	25 रु. से 30 रु.
मुम्बई	35 रु. से 40 रु.
चेन्नई	30 रु. से 35 रु.
पुणे	30 रु. से 35 रु.
हैदराबाद	20 रु. से 30 रु.
अहमदाबाद	30 रु. से 35 रु.
बंगलुरु	25 रु. से 30 रु.
कोच्ची	30 रु. से 35 रु.

अंतर्राष्ट्रीय

फिलिप्पींस (सी.आई.एफ. रोटरडैम) बाज़ार में नारियल तेल का मासिक औसतन भाव प्रति मेट्रिक टन 1039 यूएस $ था जो पिछले महीने की अपेक्षा 6 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा 20 प्रतिशत कम था। खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति मेट्रिक टन 707 यूएस $ था जो पिछले महीने की अपेक्षा 7 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा 17 प्रतिशत कम था।

फिलिप्पींस में महीने के दौरान नारियल तेल का देशी भाव प्रति मेट्रिक टन 1004 यूएस $ और इंडोनेशिया में 1027 यूएस $ था। महीने के दौरान पाम तेल, पाम गरी और सोयाबीन तेल का अंतर्राष्ट्रीय भाव प्रति मेट्रिक टन क्रमशः 661 यूएस $, 986 यूएस $ और 743 यूएस $ था।

मई 2015

मुख्यांश

- मई 2015 के दौरान देश के प्रमुख बाज़ारों में पेषण खोपरा और नारियल तेल के भाव में घटाव का रुख रहा।
- पिछले महीने की तुलना में मई 2015 के दौरान नारियल तेल और खोपरे के अंतर्राष्ट्रीय भाव में थोड़ा सुधार का रुख रहा।

मई 2015 के दौरान देश के प्रमुख बाज़ारों में नारियल, खोपरा और नारियल तेल के भाव में स्थायी घटाव का रुख रहा।

नारियल तेल

कोच्ची बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 14300 रुपए पर खुला जो 6 मई को घटकर 14200 रुपए हुआ और तत्पश्चात घटाव का रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल कुल 1200 रुपए के घाटे के साथ 13100 रुपए पर बंद हुआ। आलप्पुषा बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 13300 रुपए पर खुलकर 5 मई को सुधरकर 13500 रुपए तथा 13 मई को 13600 रुपए हुआ और 23 मई तक स्थिर रहा। 25 को भाव घटकर 12900 रुपए हुआ और प्रति क्विंटल कुल 600 रुपए के घाटे के साथ 12700 रुपए पर बंद हुआ। कोषिक्कोट बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 14900 रुपए पर खुलकर घटाव का रुख दर्शाते हुए 8 मई को प्रति क्विंटल 14400 रुपए तक पहुँचा और तत्पश्चात् 18 तक स्थिर रहा। 19 मई को भाव घटकर 14300 रुपए हुआ और प्रति क्विंटल 1000 रुपए के घाटे के साथ 13900 रुपए पर बंद हुआ। कोच्ची बाज़ार में मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 13812 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 14288 रुपए था जो पिछले महीने के औसतन भाव से क्रमशः 4 और 6 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष के इसी महीने के औसतन भाव से 12 प्रतिशत कम था। आलप्पुषा बाज़ार का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 13372 रुपए था जो पिछले महीने से नाममात्र कम और पिछले वर्ष के इसी महीने के औसतन भाव से 15 प्रतिशत कम था। तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 12444 रुपए था जो पिछले महीने से 7 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष इसी महीने के औसतन भाव से 17 प्रतिशत कम था।

पेषण खोपरा

कोच्ची बाज़ार में एफएक्यू खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 9900 रुपए पर खुलकर 6 को घटकर 9800 रुपए हुआ और तत्पश्चात् स्थायी घटाव दर्शित करके प्रति क्विंटल 1200 रुपए के कुल घाटे के साथ 8700 रुपए पर बंद हुआ। आलप्पुषा बाज़ार में राशि खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 9500 रुपए पर खुलकर 5 को 9650 रुपए पर पहुँचा और 12 तक स्थिर रहा। 13 को घटकर 9400 रुपए और 21 को 9200 रुपए हुआ तथा तत्पश्चात् घटाव का रुख दर्शाकर प्रति

क्विंटल 700 रुपए के घाटे के साथ 8800 रुपए पर बंद हुआ। कोषिक्कोट बाज़ार में ऑफिस पास खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 9550 रुपए पर खुला जो 5 को घटकर 9450 रुपए हुआ और तत्पश्चात् घटाव का रुख दिखाकर प्रति क्विंटल 750 रुपए के घाटे के साथ 8800 रुपए पर बंद हुआ। कोच्ची बाज़ार में मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 9412 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 9090 रुपए रहा जो पिछले महीने से क्रमशः 6 और 10 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष के इसी महीने से क्रमशः 16 और 17 प्रतिशत कम था। आलप्पुषा बाज़ार में मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 9330 रुपए रहा जो पिछले महीने से नाममात्र कम और पिछले वर्ष के इसी महीने से 13 प्रतिशत कम था। तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में पेषण खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 8515 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 12 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 20 प्रतिशत कम था। आंध्र प्रदेश के अंबाजीपेटा बाज़ार में पेषण खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 8742 रुपए था जो पिछले महीने और पिछले वर्ष इसी महीने के भाव की अपेक्षा नाममात्र कम था।

खाद्य खोपरा

कोषिक्कोट बाज़ार में राजापुर खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 14282 रुपए था जो पिछले महीने के और पिछले वर्ष इसी महीने के भाव से नाममात्र कम था।

गोल खोपरा

कोषिक्कोट बाज़ार में गोल खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 12726 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र कम और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा 6 प्रतिशत कम था।

कर्नाटक के तिप्तूर एपीएमसी बाज़ार में गोल खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 13139 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र कम और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा 7 प्रतिशत अधिक था। कर्नाटक के अरसिकेरे एपीएमसी बाज़ार में गोल खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 12417 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 6 प्रतिशत अधिक और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा 4 प्रतिशत अधिक था।

सूखा नारियल

कोषिक्कोट बाज़ार में सूखे नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 10744 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 9 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 19 प्रतिशत अधिक था।

नारियल

नेडुमंगाड़ बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 16000 रुपए था जो पिछले महीने के बराबर और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 9 प्रतिशत अधिक था।

अरसिकेरे एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 13365 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र कम था।

बंगलुरु एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 17327 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 9 प्रतिशत अधिक था। मंगलूर एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए ग्रेड 1 गुणवत्ता के नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 17577 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र कम और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 32 प्रतिशत अधिक था।

डाब

कर्नाटक के मद्दूर एपीएमसी बाज़ार में डाब का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 10365 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र कम और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 22 प्रतिशत अधिक था।

अंतर्राष्ट्रीय

फिलिप्पींस (सी.आई.एफ. रोटरडैम) बाज़ार में नारियल तेल का मासिक औसतन भाव प्रति मेट्रिक टन 1081 यूएस $ था जो पिछले महीने की अपेक्षा 4 प्रतिशत अधिक और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा 27 प्रतिशत कम था। खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति मेट्रिक टन 745 यूएस $ था जो पिछले महीने की अपेक्षा 5 प्रतिशत अधिक और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा 24 प्रतिशत कम था।

फिलिप्पींस में महीने के दौरान नारियल तेल का देशी भाव प्रति मेट्रिक टन 1051 यूएस $ और इंडोनेशिया में 1080 यूएस $ था। महीने के दौरान पाम तेल, पाम गरी तेल (आरबीडी) और सोयाबीन तेल का अंतर्राष्ट्रीय भाव प्रति मेट्रिक टन क्रमशः 649 यूएस $, 978 यूएस $और 711 यूएस $ था।

बाज़ार भाव

मार्च 2015

तारीख	नारियल तेल				पेषण खोपड़ा					खाद्य खोपड़ा	गोल खोपड़ा			सूखा नारियल	नारियल	आंशिक रूप से छिलका निकाला नारियल			
	(रु. / क्वि.)													(रु./1000 फल)					
	कोची	आलप्पुषा	कोषिक्कोट	कंगयम	कोची (एफएक्यू)	आलप्पुषा (राशि खोपड़ा)	कोषिक्कोट	कंगयम	अंबाजिपेटा	कोषिक्कोट	कोषिक्कोट	तिप्पूर	बेंगलूर	अरसिकेरे	कोषिक्कोट	नेडुमंगाड	अरसिकेरे	बेंगलूर	मैंगलूर (ग्रेड-1)
08.03.15	13733	13300	14333	12711	9233	9400	9542	9150	9300	13417	11917	12417	14200	11714	11150	16000	13333	17167	18000
15.03.15	13820	13240	14720	13244	9380	9360	9810	9417	8842	14640	13110	13141	13833	11587	11500	16000	12000	17000	18000
22.03.15	14200	13900	14933	12978	9700	9700	9850	9217	9167	15175	13333	13251	15000	11693	11500	16000	13250	15167	18000
29.03.15	13817	13900	14383	12578	9317	9700	9467	9017	10000	13717	12167	12283	14775	12083	11383	16000	14500	16500	18000
31.03.15	14300	13300	15200	13300	9900	9500	10000	9600	8500	13775	12125	12700	14300	12945	12200	16000	13000	15500	18000
औसत	13974	13528	14714	12962	9506	9532	9734	9280	9162	14145	12530	12758	14422	12005	11547	16000	13217	16267	18000

अप्रैल 2015

तारीख	नारियल तेल				पेषण खोपड़ा					खाद्य खोपड़ा	गोल खोपड़ा			सूखा नारियल	नारियल	आंशिक रूप से छिलका निकाला नारियल			
	(रु. / क्वि.)													(रु./1000 फल)					
	कोची	आलप्पुषा	कोषिक्कोट	कंगयम	कोची (एफएक्यू)	आलप्पुषा (राशि खोपड़ा)	कोषिक्कोट	कंगयम	अंबाजिपेटा	कोषिक्कोट	कोषिक्कोट	तिप्पूर	बेंगलूर	अरसिकेरे	कोषिक्कोट	नेडुमंगाड	अरसिकेरे	बेंगलूर	मैंगलूर (ग्रेड-1)
05.04.15	14300	13633	15200	13300	9900	9700	10000	9600	8700	14333	12833	12850	15500	11193	12333	16000	12000	15000	18000
12.04.15	14440	13440	15220	13500	10040	9580	10210	9683	8917	14460	12990	13101	15500	11607	12120	16000	14617	15500	18000
19.04.15	14500	13300	15300	13300	10100	9500	10000	9550	8917	14430	12820	13267	15500	12158	11740	16000	13667	15333	18000
26.04.15	14475	13300	15300	13300	10075	9500	9958	9533	9400	14450	12758	13409	15000	11853	11333	16000	14000	16000	18000
30.04.15	14300	13300	15100	12950	9900	9500	9775	9050	9800	14500	13000	13050	15688	11406	11000	16000	13500	17000	18000
औसत	14403	13395	15224	13270	10003	9556	9989	9483	9147	14435	12880	13135	15438	11643	11705	16000	13557	15767	18000

मई 2015

तारीख	नारियल तेल				पेषण खोपड़ा					खाद्य खोपड़ा	गोल खोपड़ा			सूखा नारियल	नारियल	आंशिक रूप से छिलका निकाला नारियल			
	(रु. / क्वि.)													(रु./1000 फल)					
	कोची	आलप्पुषा	कोषिक्कोट	कंगयम	कोची (एफएक्यू)	आलप्पुषा (राशि खोपड़ा)	कोषिक्कोट	कंगयम	अंबाजिपेटा	कोषिक्कोट	कोषिक्कोट	तिप्पूर	बेंगलूर	अरसिकेरे	कोषिक्कोट	नेडुमंगाड	अरसिकेरे	बेंगलूर	मैंगलूर (ग्रेड-1)
03.05.15	14300	13300	14900	12933	9900	9500	9550	9000	8500	14200	12500	12850	16300	12300	11000	16000	13200	17000	18000
10.05.15	14360	13433	15160	13421	9960	9580	10040	9592	8917	14460	12963	13065	15600	11331	12093	16000	14100	15417	18000
17.05.15	14067	13567	14400	12611	9667	9483	9150	8617	9450	14258	12683	13117	16250	11874	10733	16000	13200	17500	18000
24.05.15	13683	13600	14100	12400	9283	9300	8983	8367	8500	14342	12800	13192	17000	12351	10767	16000	13333	17083	17167
31.05.15	13233	12867	13900	11944	8833	8883	8842	8183	8267	14417	12958	13245	17000	12706	10700	16000	12907	17000	17000
औसत	13929	13353	14492	12662	9529	9349	9313	8752	8727	14335	12781	13094	16430	12112	11059	16000	13348	16800	17633

स्रोत

कोची : **कोचिन तेल व्यापारी संघ व वाणिज्य मंडल, कोची-2**
कोषिक्कोट : **'मातृभूमि'**
आलप्पुषा : **'मलयाला मनोरमा'**
अरसिकेरे : **ए पी एम सी, अरसिकेरे**
कोषिक्कोट बाज़ार में 'ऑफीस पास' खोपड़े का और आलप्पुषा बाज़ार में 'राशि' खोपड़े का बताया गया भाव
सौ.न. : सौदा नहीं

नारियल विकास बोर्ड के कार्यालय

मुख्यालय

श्री टी.के. जोस भाप्रसे
अध्यक्ष : 0484 2375216
श्री सुगत घोष
मुख्य नारियल विकास अधिकारी : 2375999
डॉ. ए. के. नन्दी
सचिव : 2377737
श्री राजीव पी.जोर्ज
निदेशक : 2375237

नारियल विकास बोर्ड
(कृषि मंत्रालय, भारत सरकार)
पो.बो.सं. 1021, केरा भवन
कोची - 682 011, केरल, भारत

कार्यालय पीएबीएक्स: 2376265, 2376553, 2377266, 2377267
ग्राम्स : KERABOARD
फैक्स : 91 484 2377902
ई-मेइल : kochi.cdb@gov.in
वेबसाइट : www.coconutboard.gov.in

क्षेत्रीय कार्यालय

कर्नाटक
डॉ.टी.आई.मैथ्युकुट्टी
निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय सह प्रौद्योगिकी केन्द्र
नारियल विकास बोर्ड, हूलिमावु, बन्नेरघट्टा रोड
बंगलुरु - 560076. दू.भा. : 080-26593750, 26593743
फैक्स : 080-26594768
ई-मेइल : coconut_dev@dataone.in
cdbroblr@gmail.com

असम
डॉ.आर.के.पाल
उप निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय
नारियल विकास बोर्ड
उत्तर पूर्वी राज्य कार्यालय/प्रशिक्षण/प्रौद्योगिकी केन्द्र,
हाउसफेड काम्प्लेक्स, (छठा तल), बेलटोला रोड,
लास्ट गेट, दिसपुर, गुवाहटी - 781 006
दू.भा. : (0361) 2220632, फैक्स : 0361-2229794
ई-मेइल : cdbassam@gmail.com

तमिलनाडु
श्री लुम्हार ओबेद
निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय,
नारियल विकास बोर्ड
पहला तल, प्लॉट नं. 1579, ए-1 प्लॉट, जे. ब्लॉक,
9वीं गली, 15 वाँ मेइन रोड, अन्नानगर,
चेन्नई - 600 040
दू.भा. : (044) 26164048 फैक्स : (044) 26164047
ई-मेइल : cdbroc@gmail.com

राज्य केन्द्र

अन्डमान व निकोबार द्वीप समूह
उप निदेशक
हाउस एम बी सं. 54, गुरुद्वारा लेइन,
पोर्ट ब्लेयर-744 101, दक्षिण अन्डमान
अन्डमान व निकोबार द्वीप समूह
दू.भा. : (03192)-233918
ई-मेइल : cdban@rediffmail.com

तेलंगाना
सहायक निदेशक, राज्य केन्द्र
नारियल विकास बोर्ड
प्लॉट सं. 49, डॉ. सुब्बा राव कॉलॉनी
पिकेट, सिकंदराबाद - 500 026
टेलीफैक्स : (040) 27807303
ई-मेइल : cdbhyd@gmail.com

बिहार
सहायक निदेशक, नारियल विकास बोर्ड
राज्य केन्द्र, 160-न्यू पाटलीपुत्र कॉलोनी,
पटना - 800013, बिहार
टेलिफोन: 0612 2272742
ई मेल: cdbpatna@gmail.com

ओड़िशा
श्री ई अरावषी
उप निदेशक, राज्य केन्द्र, नारियल विकास बोर्ड
पित्तापल्ली, कुमरबस्ता डाक
खुरदा जिला - 752 055
दू.भा. : 06755-211505
ई-मेइल : cdborissa@gmail.com

महाराष्ट्र
श्री राजीव भूषण प्रसाद
उप निदेशक, राज्य केन्द्र, नारियल विकास बोर्ड
रोड नं - 16, ज़ेड़ लेइन, वाग्ले एस्टेट,
ठाणे, महाराष्ट्र - 400 604
दू.भा. : (022) 25834566
ई-मेइल : cdbthane@gmail.com

पश्चिम बंगाल
श्री खोकन देबनाथ
उप निदेशक, राज्य केन्द्र,
नारियल विकास बोर्ड
बी.जे. - 108 - सेक्टर - 11
साल्ट लेक, कोलकात्ता - 700 091
दू.भा. : (033) 23599674
फैक्स : 91 33-23599674
ई-मेइल : cdbkolkata@gmail.com

बाज़ार विकास सह सूचना केन्द्र, नई दिल्ली

डॉ. जी.आर. सिंह
निदेशक, नारियल विकास बोर्ड
बाज़ार विकास सह सूचना केन्द्र,
120, हरगोबिन्द एनक्लेव,
नई दिल्ली - 110 092, दू.भा.: 011-22377805,
ई-मेइल : cdbmdic@sify.com ;
cdbmdic@gmail.com

क्षेत्र कार्यालय, तिरुवनंतपुरम

क्षेत्र कार्यालय, नारियल विकास बोर्ड,
एग्रिकल्चरल अर्बन हॉलसेल मार्कट
(वॅर्ल्ड मार्कट) आनयरा पी.ओ.
तिरुवनंतपुरम - 695 029
दूरभाष, फैक्स : 0471-2741006
ई-मेइल : cdbtvm@yahoo.co.in

सी आई टी, आलुवा

प्रक्रमण इंजीनियर
नारियल विकास बोर्ड, प्रौद्योगिकी विकास केन्द्र, कीनपुरम,
दक्षिण वाष़क्कुलम, आलुवा पिन-683105,
दूरभाष:0484 2679680,
ई-मेइल : citaluva@gmail.com, cdbtdc@gmail.com

प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म

आंध्र प्रदेश
सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, वेगिवाडा (गाँव) मकान संख्या 688,
तडिकलापुडी (द्वारा), पश्चिम गोदावरी (जिला),
आंध्र प्रदेश - 534 452
दू.भा. : (08812) 212359, ई-मेइल : dspfmvgda@gmail.com

असम
फार्म प्रबंधक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, अभयपुरी, बोंगैगांव,
असम - 783 384, टेलि. फैक्स : (03664) 210025
ई-मेइल : cdbdspabhayapuri@gmail.com

बिहार
सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, सिंहेश्वर (डाक),
मधेपुरा जिला, बिहार - 852 128. दू.भा. : (06476) 283015.
ई-मेइल : dspfms@gmail.com

कर्नाटक
फार्म प्रबंधक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, पुरा गाँव, लोकसारा (डाक),
माँड्या जिला, कर्नाटक-571 403 दू.भा.: (08232) 234059
ई-मेइल : dspfarmmandya@gmail.com

केरल
सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, नेर्यमंगलम, पिन - 686 693
दू.भा. : (0485) 2554240
ई-मेइल : cdbnrlm@gmail.com

छत्तीसगढ़
सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, कोंडागाँव - 494 226, बस्तर जिला
दू.भा. : (07786) 242443, फैक्स : (07786) 242443
ई-मेइल : cdbkgn1987@gmail.com

ओड़िशा
सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, पित्तापल्ली,
कुमरबस्ता डाक, खुरदा जिला - 752055,
दू.भा. : (06755) 212505, (06755) 320287
ई-मेइल : cdborissa@gmail.com

महाराष्ट्र
फार्म प्रबंधक
नारियल विकास बोर्ड, प्रबीउ फार्म, पालघर,
डापोली गाँव, सतपति डाक, पालघर-401405,
महाराष्ट्र, दू.भा.: 02525 256090
ई-मेइल : dspfarmpalghar@gmail.com

तमिलनाडु
फार्म प्रबंधक
प्रबीउ फार्म, नारियल विकास बोर्ड
धली, तिरुमूर्ति नगर डाक, उदुमलपेट,तमिलनाडु-642112
दू.भा.:(0425) 2290289,
ई-मेल: dspfarmdhali@gmail.com

Regd/7-19817/89

भाग XXVI संख्या : 1

भारतीय नारियल पत्रिका

अप्रैल - जून 2015

मूल्य : 10 रु.

नारियल विकास बोर्ड, कोची के आंगण में ग्रो बैग में चावक्काट हरी बौनी किस्म का नारियल पेड़। साढ़े तीन साल का यह पेड़ उच्च फलदायी है।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:

नारियल विकास बोर्ड (कृषि मंत्रालय, भारत सरकार) केरा भवन, एसआरवीएचएस रोड, कोची-682011, भारत

ई मेलः kochi.cdb@gov.in, cdbkochi@gmail.com, वेबः www.coconutboard.nic.in दूरभाषः 0484-2376265, 2377266, 2377267